भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंस्था टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२–७७८०१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक १ २१ नवम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

वेद में पाप-निवारण के उपाय

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

मनुष्य पापा करता है और समझता है किसी को पता नहीं चला। परन्तु यह बात नहीं है। पाप जहां से उत्पन्न होता है वहीं तक सीमित नहीं रहता अपितु शीघ्र ही सर्वत्र फैल जाता है। फैलकर पाप वहीं नहीं रह जाता अपितु पापी को कष्ट देता हुआ उसके ऊपर वज्र-प्रहार करता हुआ वह पापी को ही लौट आता है। पाप का फल पाप होता है और पुण्य का पुण्य। उन्नति के अभिलाषी मनुष्यों को चाहिये कि अपनी जीवन भूमि से पाप, अधर्म, अन्याय और असद्-व्यवहार के बीजों को निकालकर पुण्य के अंकुर उपजाने का प्रयत्न करें। वेद मे कर्मफल के विषय में मन्त्र आया है–

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममममान एति।
अनूनं निहितं पात्रं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।।

(अथर्ववेद १२।३।३८)

अर्थ–(अत्र) इसमें, कर्मफल के विषय में (किल्विषम् न) कोई त्रुटि, कभी नहीं होती और (न) न ही (आधार अस्ति) किसी की सिफारिश चलती है (न यत्) यह बात भी नहीं है कि (मित्रै.) मित्रों के साथ (सम् अममान· एति) संगति करता हुआ जा सकता है (न एतत् पात्रम्) हमारा यह कर्मरूपी पात्र (अनूनम् निहितम्) पूर्ण है, बिना किसी घटा-बढी के सुरक्षित रखा है (पक्तारम्) पकानेवाले को, कर्मकर्ता को (पक्व) पकाया हुआ पदार्थ, कर्मफल (पुन:) फिर (आ विशाति) आ मिलता, प्राप्त होजाता है।

मन्त्र में कर्मफल का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया गया है। कर्म का सिद्धान्त इस एक ही मन्त्र में पूर्णरूप से समझा दिया गया है। (१) कर्मफल में कोई कमी नहीं हो सकती। मनुष्य जैसे कर्म करेगा उसका वैसा ही फल उसे भोगना पडेगा। (२) कर्मफल के विषय में किसी की सिफारिश नहीं चलती। किसी पीर, पैगम्बर पर ईमान लाकर मनुष्य कर्मफल से बच नहीं सकता। (३) मित्रों का पल्ला पकड़कर भी कर्मफल से बचा नहीं जा सकता। (४) किसी भी कारण से हमारे कर्मफल-पात्र में कोई कमी या बेशी नहीं हो सकती। यह भरा हुआ और सुरक्षित रखा रहता है। (५) कर्मकर्ता जैसा कर्म करता है वैसा ही फल उसे प्राप्त हो जाता है यदि संसार से त्राण पाने की इच्छा है तो शुभकर्म करो।

पाप-निवारण के उपाय–

मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकृतिः सत्या मनसो मे अस्तु।
एनो मा निगां कतमच्चनाह विश्वेदेवा अभि रक्षन्तु मेह।।

(अथर्ववेद ५।३।४)

अर्थ–(मम) मेरे (यानि) जो (इष्टानि) इष्ट-इच्छित सुखदायक पदार्थ और किये हुये देवपूजन, सत्संग और दान आदि कार्य हैं, वे (मह्यम्) मुझे (यजन्ताम्) प्राप्त हों। (मे मनस·) मेरे मन का (आकूति) दृढ-सकल्प (सत्या, अस्तु) सत्य हो (अहम्) मैं (कतमत् च न) किसी भी (एन) पाप को (मा निगाम्) प्राप्त न होऊ। (विश्वेदेवा) विद्वान् लोग (इह) इस विषय मे मेरी (अभि रक्षन्तु) पूर्णरूप से रक्षा करे।

मन्त्र मे निम्न कामनाये प्रकट की गई हैं–(१) मेरे इच्छित सुखदायक पदार्थ मुझे प्राप्त होते रहे। (२) मैं देवपूजा-सत्सग और दान, इन यज्ञकर्मों को सदा करता रहूं इनसे पृथक् न होऊ। (३) मेरे मानसिक सकल्प सदा सत्य हो, मैं कभी असत्य सकल्प न करू। (४) मैं कभी भी कोई पापकर्म न करू। (५) ये सभी बाते कब सभव हैं ? जब लोग मेरी रक्षा करते रहे। जब मैं सुपथ को त्यागकर कुपथ की ओर प्रवृत्त होऊ तब वे अपने सदुपदेशों से मेरी रक्षा करते रहे।

(शेष पृष्ठ दो पर)

प्रेस नोट

दिनांक १७ नवम्बर, २००१ के "नवभारत" मे श्री सुलतानसिह द्वारा एक ब्यान में कहा गया है कि दस लाख का हिसाब नहीं दिया तो मामला दर्ज करायेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव कोर्ट के द्वारा विधिवत् हो चुका है और उसके निर्वाचित अधिकारी सभा का कार्य ठीक प्रकार से कर रहे हैं। यह ठीक है कि पिछले डेढ महीने से चुनाव मे पराजित ग्रुप पुलिस की सहायता से सभा के कार्यालय पर कब्जा जमाये बैठा है और भारी बहुमत से निर्वाचित अधिकारी सभा के कार्य कार्यालय से बाहर बैठकर कर रहे हैं। पराजित ग्रुप पहले बलवानसिह सुहाग को सभा का प्रशासक श्री रामफल बंसल के द्वारा १५ हजार रुपये मासिक देने की शर्त पर बनवाकर लाये थे। अब यही ग्रुप सुलतानसिह एडवोकेट को तदर्थ समिति का प्रधान बनवाकर लाया है और पूर्व में पराजित लोग प्रशासक बलवानसिह को स्वय ही अवैधानिक घोषित कर रहे हैं। हमारी दृष्टि से बलवानसिह प्रशासक के रूप मे भी गैर कानूनी थे और सुलतानसिह की तदर्थ समिति भी पूरी तरह गैर कानूनी है। जिस सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न की चर्चा ये लोग कर रहे हैं वह सार्वदेशिक सभा स्वय विवादित है। सुलतानसिह भी क्योंकि इनेलो के कार्यकर्ता एव सरकारी वकील हैं जिसके प्रभाव का प्रयोग करके 'येन केन प्रकारेण' यह ग्रुप सभा के पूरे प्रबन्ध को अव्यवस्थित करना चाहता है। सभा के वेदप्रचार आदि कार्य अवरुद्ध है। हरयाणा के आर्यसमाज मे विघटन पैदा करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन मामला रोहतक की कोर्ट में विचाराधीन चल रहा है। आ सभा के एक भी पैसे का दुरुपयोग नहीं हुआ। सभी पैसा सभा के खाते में जमा है। **हरयाणा का आर्यसमाज नये चुनाव का बहिष्कार करने का निर्णय ले चुका है।** अत मैं प्रत्येक आर्यसमाजी से निवेदन करूंगा कि वे इस षड्यन्त्र को समझे और सगठन का परिचय दे।

निवेदक–**स्वामी इन्द्रवेश**

वैदिक-स्वाध्याय

सरस्वती माता ज्ञान देवी बड़े भारी समुद्र को प्रकाश करती है

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।। (ऋ० १।३।१२)

शब्दार्थ—(सरस्वती) ज्ञानदेवी (केतुना) ज्ञान द्वारा, प्रज्ञापक शक्ति द्वारा (मह. अर्ण:) बडे भारी ज्ञान-समुद्र को (प्रचेतयति) प्रकाशित करती है और (विश्वा धिय) सब प्रकाशित बुद्धियो को (विराजति) विशेषतया दीपित करती है।

विनय—ज्ञान की सच्ची जिज्ञासा होते ही यह अनुभव होने लगता है कि अरे, ससार मे तो बडा ज्ञातव्य है, एक से एक अद्भुत विद्या है, जिस विषय मे देखो उसी विषय मे ज्ञान पाने का इतना क्षेत्र है कि मनुष्य के सामने न जाने हुए ज्ञान का एक अनन्त समुद्र भरा पडा है। यह देखनेवाले मनुष्य नम्र हो जाते हैं, उन्हे ज्ञान का अभिमान नहीं रहता। ऐसे ही मनुष्य सरस्वती देवी की शरण में जाते हैं। सरस्वती देवी के झण्डे के नीचे आनेवालों को सबसे पहिले तो यही पता लगा करता है कि ज्ञेय अनन्त है, हमारे ज्ञातव्य ससार का पार नहीं है और हम तुच्छ लोग तो अपनी क्षुद्र इन्द्रियों और बुद्धि को लिये हुए इसके एक किनारे खडे हैं। विद्या देवी पहिले तो इस बडे भारी समुद्र को ही हमारे लिए प्रकाशित करती है, इसके पार तो पीछे पहुचाती है। पहिले हमें यह अनुभव होना चाहिये कि ज्ञेय अनन्त है। ज्ञान की अनन्तता तो हमें पीछे दीखेगी। सरस्वती देवी जिधर-जिधर अपने "केतु" को–अपने झण्डे को–ले जाती है अर्थात् जिधर-जिधर अपनी प्रज्ञापक शक्ति को फिराती है, वहा-वहा पता लगता जाता है कि अरे यह भी एक बडा उत्तम ज्ञेय-क्षेत्र है, यह भी एक बडा भारी ज्ञेय-क्षेत्र है। एव हरेक क्षेत्र को हमारे लिये जगाती जाती है और फिर सब बुद्धियो को विशेष रूप से दीपित भी करती जाती है–अर्थात् जिस-जिस वस्तु की गहराई मे हम जाकर जानना चाहते हैं, उस-उस वस्तु के तत्त्व को, उसके सच्चे स्वरूप को भी हमारे लिये चमका देती है। तब हम जिस विषयक बुद्धि को पाना चाहे उसी विषय के ज्ञान को यह देवी हमारे लिये प्रदीप्त कर देती है। तभी अनुभव होता है कि सभी बुद्धियों में वही देवी प्रदीप्त हो रही है, वही चमक रही है, सर्वत्र उसी का राज्य है। सरस्वती देवी के सच्चे स्वरूप का या ज्ञान के आनन्त्य का (जिसके कि सामने ज्ञेय कुछ भी नहीं होता)[1] अनुभव उसी अवस्था मे पहुचने पर होता है।

अत वे मनुष्य जिन्हे अभी तक यह भी प्रकट नहीं हुआ है कि हमें ज्ञान का एक बडा भारी समुद्र पार करना है, वे समझ लें कि उन पर सरस्वती देवी की कुछ भी कृपा नहीं हुई है और उनके लिए वह दिन तो बहुत दूर है जब कि सरस्वती देवी उनके लिए सब बुद्धियों को दीपित कर देगी।

(वैदिक विनय से)

१–तदा सर्वावरणमलापेतस्य ज्ञानस्यानन्त्यात् ज्ञेयमल्पम्। योग० सू० ४-३१।।

आर्यवीर दल ने ऋषि निर्वाण दिवस मनाया

आर्य वीर दल हांसी की स्थानीय इकाई ने आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक जगत् गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस १४ नवम्बर को लाल सडक स्थित शास्त्री निवास में बहुत ही धूमधाम से मनाया।

जिसमे सर्वप्रथम यज्ञ के ब्रह्मा पं० विजयपाल आर्य (प्रभाकर) द्वारा यज्ञ किया गया तथा माताओं बहनों द्वारा भजन सुनाये गये। आर्य वीर दल के पदाधिकारियो व सदस्यो के अलावा स्वामी रामानन्द आर्य, महात्मा रत्नदेव वानप्रस्थी, श्रीमती आशा भुटानी, श्रीमती सावित्री देवी आर्या, श्री उत्तमचन्द वर्मा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

रात्रि मे भी श्री रूपचन्द आर्य के निवास पर ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया। जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा एवं मुख्य वक्ता आचार्य रामसुफल शास्त्री जी ने महर्षि जी के उपकारों पर प्रकाश डालते हुए सारगर्भित उपदेश दिया।

–केशव बंसल

योगमुनि को श्रद्धांजलि

निस्वार्थ समाजसेवी स्वामी योगमुनि जी की रस्म पगड़ी (शान्ति यज्ञ) पर उनके गांव काकड़ौली में दिनांक ४-११-२००१ को श्रद्धांजलि–

योगमुनि जी तेरे शोक में सबकी आंखें नम होगी।

१ वैदिक मर्यादा में बन्धकर, मानव जाति का उपकार किया।
आश्रम व्यवस्था को अपनाकर वानप्रस्थी बाणा धार लिया।।
जब ईश्वर से कर प्यार लिया, तो भोगवाद की इच्छा कम होगी।

२ गौ सेवा और अतिथि सेवा, सन्ध्या हवन करता नित रोज।
अन्न-धन के भण्डार भरे तनै, गुरुकुल कै होरी थी मौज।
इब म्हारे पर पडग्या बोझ, तेरे प्यार की छाया कम होगी।

३ नि स्वार्थ सेवा करी गुरुकुल की, अपने कुल की शान बढाई।
गुरुकुल की कन्या रोई जब खबर सुणी दु खदायी।
गुरुकुल वासी याद करै तनै, सारी व्यवस्था तंग होगी।

४ अमर रहेंगे योगमुनि जी यही हम सब का फरमान।
दुःख सहने की शक्ति देना हे दयालु भगवान।
दुनिया में दु खी 'सत्यवान' क्योकि धर्मचर्चा कम होगी।।

–सत्यवान आर्य, समाजसेवक कन्या गुरुकुल पचगांव
डा० गोपी, जिला भिवानी, दूरभाष ५३१७०

वेद में पाप निवारण.......................... **(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

मैं पापों से पृथक् रहूं–

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अरात्या।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा।।

(अथर्ववेद ३।३१।१)

अर्थ—(देवा) दिव्य गुण युक्त, सदाचारी, उदार विद्वान् लोग (जरसा) वृद्धावस्था से (वि अवृतन्) पृथक् रहे हैं और (अग्ने) आग (त्वम्) तू (अरात्या) कजूसी से, अदान भावना से (वि) सदा अलग रही है। (अहम्) मैं (सर्वेण) सब (पाप्मना) पाप से (वि) दूर रहू (यक्ष्मेण) यक्ष्मा आदि रोगों से (वि) पृथक् रहू और (आयुषा) उत्तम तथा पूर्णायु से, सुजीवन से (सम्) संयुक्त रहूं।

भावार्थ—(१) जैसे देव वृद्धावस्था से पृथक् रहते हैं वैसे ही मैं भी पापो से दूर रहूं। देव, परोपकारी, उदाराशय व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होते। शरीर के वृद्ध होने पर भी इनके मन में जवानी की तरंगें उठती हैं। जिसका मन जवान है, उन्हे बुढापा कैसा ? (२) जैसे अग्नि अदान-भावना से मुक्त रहती है उसी प्रकार मैं भी रोगों से दूर रहूं। अग्नि का गुण है ताप और प्रकाश। अग्नि अपने इन गुणो से कभी पृथक् नहीं होती। यदि अग्नि में ये गुण न रहें तो वह अग्नि रही रहती, फिर तो वह राख की ढेरी बन जाती है और उसे उठाकर कूडे पर फेंक दिया जाता है। 'शरीरं व्याधिमन्दिरम्' शरीर बीमारियों का घर है, ऐसा मत सोचो। हमारी तो कामना और भावना होनी चाहिए कि जिस प्रकार अग्नि ताप और प्रकाश से युक्त होती है, मैं भी वैसा ही ओजस्वी और तेजस्वी बनू, आधियां और व्याधिया मेरे निकट न आये। (३) मैं सदा सुन्दर, शोभन एव श्रेष्ठ जीवन से युक्त रहू।

आर्य वीर दल हांसी का १०वां वार्षिकोत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह

स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुरानी सब्जी मण्डी, लाल सड़क, हांसी

दिनांक २२-२३ दिसम्बर, २००१

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि विगत वर्षों की भांति आर्यवीर दल हांसी का वार्षिक उत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह बड़ी धूम से मनाया जा रहा है। निवेदक : **राकेश दुटेजा, महामन्त्री**

सम्पादकीय–

२३ सितम्बर २००१ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक का त्रैवार्षिक निर्वाचन स्थानीय प्रशासन के पूर्ण सहयोग से, ड्यूटी मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में, अन्तरग सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी चौ० धर्मचन्द जी ने सभा के विधान के अनुसार सम्पन्न करवाया था। कोर्ट में केस होने के कारण माननीय न्यायाधीश ने चुनाव करवाने की तो अनुमति दे दी थी, किन्तु चुनाव परिणाम २५-९-२००१ तक घोषित न करने का स्टे लगा दिया था। २५-९-२००१ को विपक्ष ने अपना केस वापिस ले लिया और न्यायालय ने चुनाव घोषणा पर लगा प्रतिबन्ध हटा दिया, तब निर्वाचन अधिकारी ने २५-९-२००१ को चुनाव की विधिवत् घोषणा की थी।

इस चुनाव में बुरी तरह हारे हुए कुछ लोग दिल्ली जाकर रामफल बंसल एडवोकेट सार्वदेशिक न्यायसभा अध्यक्ष को प्रार्थना-पत्र देकर आर्य प्रतिनिधि सभा के वैध चुनाव को अवैध करार करवाके दुबारा चुनाव करवाने के लिये १५ हजार रु० मासिक पर इनेलो पार्टी के झज्जर जिले के अध्यक्ष बलवानसिह सुहाग वकील को सभा का प्रशासक एव निर्वाचन अधिकारी नियुक्त करवा लाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और न्यायसभा के विधान में कहीं भी प्रशासक लगाने का प्रावधान न होने के कारण सभामन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री ने रोहतक न्यायालय में इस चुनाव को चुनौती दी और सर्वहितकारी के द्वारा भी रामफल बंसल को चुनौती दी कि वे बतायें उन्होंने विधान की किस धारा के अधीन प्रशासक नियुक्त किया है ?

इस पर विपक्ष को अपनी भूल का पता लगा और न्यायालय में हारने के डर से दिल्ली जाकर सार्वदेशिक सभा के विवादित तथाकथित प्रधान से एकतरफा एड्हॉक कमेटी बनवा लाये सुलतानसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में और स्वयं ही समाचार-पत्रों में प्रचारित कर दिया कि प्रशासक की नियुक्ति अवैधानिक थी इसलिए उसे हटाकर अब एड्हॉक कमेटी बनाई गई है।

यहां मुझे बचपन की एक बात याद आती है। बच्चे मिट्टी के घरोंदे बनाकर खेलते थे और बाद में उन्हें स्वयं ही तोडकर कहते थे-**"म्हे ही खेल्या म्हे ही ढाया"**। यहां भी विपक्ष की वही भूमिका है। स्वयं प्रशासक लगवाया और स्वयं ही उसे हटवा दिया।

यह एडहॉक कमेटी भी जिस प्रकार से बनाई गई है वह प्रक्रिया भी एकदम अवैधानिक है और जिस प्रधान ने बनाई है वह स्वय भी विवादित है। यह कमेटी भी न्यायालय मे टिक नहीं पायेगी। इसका भी वही हाल होगा जो प्रशासक का हुआ।

पहले बलवानसिह सुहाग ने प्रशासक बनकर सभा की सम्पत्ति का दुरुपयोग किया और सगठन को छिन्न-भिन्न करने का यथाशक्ति प्रयास किया। १९९८ के चुनाव के बाद सभा के अधीनस्थ सभी सस्था गुरुकुल स्कूल कालेज आदि की प्रबन्ध कमेटिया भंग करदी और नई बना दी, जिससे सस्थाओ के प्रबन्ध मे अफरा-तफरी मंच गई। प्रशासक ने सभा का दुबारा चुनाव करवाने के कार्यक्रम भी घोषणा की थी किन्तु चुनाव करवाने से पूर्व ही उसको हटा दिया गया।

अभी एडहॉक कमेटी के प्रधान सुलतानसिंह एडवोकेट ने भी ९ दिसम्बर को पानीपत मे सभा का दुबारा चुनाव करवाने की सूचना दैनिक समाचार-पत्रों मे छपवाई है। सभा के विधिवत् निर्वाचित प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिह जी आदि आर्यनेताओं ने सभा के दुबारा चुनाव का बहिष्कार करने की आर्य प्रतिनिधियो से अपील की है। ऐसी स्थिति मे ९ दिसम्बर को पानीपत मे चुनाव तो नहीं होगा, चुनावी नाटक की रिहर्सल भले ही होजाये।

आर्यसमाज के सगठन को बनाये रखने की दृष्टि से कुछ सज्जन समझौते का प्रयास कर रहे हैं किन्तु कुछ महत्त्वाकांक्षी लोग इसे सफल नहीं होने दे रहे हैं। यह भी सुनने में आया है कि हरयाणा सरकार का भी इसमें दखल है। इसीलिए पुलिस की सहायता से हारे हुए व्यक्ति केदारसिंह आदि सभा कार्यालय में कब्जा जमाये बैठे हैं और विधिवत् भारी बहुमत से जीते हुए सभा अधिकारी कार्यालय तो बहुत दूर है, सभा के बाहरी गेट के अन्दर भी नहीं जासकते। दिन और रात के लिए अलग-अलग चार-चार सशस्त्र पुलिसमैन सभा कार्यालय की सुरक्षा के लिए लगा रखे हैं।

आखिर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कार्यालय की सुरक्षा पुलिस कब तक करेगी ? प्रजातत्र मे धार्मिक संस्था मे सरकारी हस्तक्षेप बहुत दिन तक नहीं चल पायेगा।

सभी का हित इसमे निहित है कि सभी सज्जन आर्य पुरुष मिल बैठकर समझौता करे और आर्यसमाज के सगठन को बर्बादी से बचावे।

–वेदव्रत शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के बढ़ते कदम

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज का युवा सगठन 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' जहा एक ओर युवकों में शारीरिक एव बौद्धिक दृष्टि से सुयोग्य बनाने का कार्य करती है और ग्रीष्मकाल की छुट्टियों मे प्रदेश एव राष्ट्रीय स्तर पर कार्यकर्ता शिविरो का आयोजन करती है वहीं दूसरी ओर ग्रामीण स्तर अथवा विद्यालय स्तर पर युवको के व्यायाम एवं योग प्रशिक्षण शिविर लगाकर भावी पीढी मे राष्ट्रीय चेतना पैदा करने का प्रयास जारी है। इस कडी मे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जिला झज्जर के प्रधान व परिषद् के वरिष्ठ व्यायामशिक्षक ब्र० वीरदेव आर्य ने ३० अगस्त, २००१ से ५ सितम्बर २००१ तक ग्राम तलाव (झज्जर) मे योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न किया। अन्तिम दिन प्रदर्शन किया गया तथा परिषद् की इकाई का गठन किया गया जो निम्न है–

प्रधान–सौरभप्रकाश सु० श्री वेदप्रकाश, उपप्रधान–सजय कुमार सु० श्री उमेदसिह, मन्त्री–बलराज सु० श्री सतपाल, उपमन्त्री–सदीप कुमार सु० श्री रणधीर, कोषाध्यक्ष–मनजीत कुमार सु० धर्मबीर व नवीन कुमार सु० श्री जगदीश कुमार आदि।

इसी प्रकार ७ सितम्बर २००१ से १५ सितम्बर २००१ तक ग्राम धौड (झज्जर) मे ब्रह्मचर्य एव योग प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमे निम्नलिखित रूप से परिषद् की इकाई का गठन किया गया। प्रधान–सुनील कुमार सु० श्री सुखबीर सिह, उपप्रधान तीन बनाये गये–१ विजयकुमार सु० श्री वेदपाल २ जगबिन्द्र सु० श्री रोहतास, ३ जितेन्द्र राज्याण सु० श्री सूरजभान, मन्त्री–प्रह्लाद सिह सु० श्री जयसिह, उपमन्त्री दो बनाये गये–१ मनिन्द्रकुमार सु० श्री राजपालसिह, २ हरकेशकुमार सु० श्री जिलेसिह। कोषाध्यक्ष–हितेन्द्रसिह सु० श्री महावीरसिह तथा पुस्तकालयाध्यक्ष–अमीरसिह सु० श्री समेसिह आदि।

इसी कडी मे ग्राम मारौत (झज्जर) मे २५ सितम्बर से ३ अक्तूबर २००१ तथा युवा निर्माण एव ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे परिषद् की इकाई का गठन निम्न ढग से किया गया। प्रधान–पवन सूर्यवशी सु० श्री कृष्णलाल। उपमन्त्री–अखिलेश चान्दोलिया सु० श्री रामचन्द्र, राजेश सूर्यवशी सु० श्री सत्यवीर। खजाची–वीरेन्द्र सु० श्री राजवीरसिह तथा प्रचारमन्त्री–मनदीप लुहाच सु० श्री रमेशसिह। इसी शृखला को आगे बढाया मदर इण्डिया हाई स्कूल मारौत (झज्जर) के छात्रो ने। उन्हे ४ अक्तूबर से ११ अक्तूबर २००१ तक प्रशिक्षण लिया लेकिन परिषद् की इकाई का गठन नहीं हो पाया क्योकि समयाभाव होने के कारण अगले दिन ग्राम छुछकवास (झज्जर) मे विशाल शिविर लगाना था। ग्राम छुछकवास मे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का गठन अन्तिम दिन २० अक्तूबर को किया गया जिसका सक्षिप्त सा विवरण निम्न है–शाखानायक पवन सु० श्री सुलतान। प्रधान–जगदीश सु० श्री सुमेरसिह (दुजानावाले), उपप्रधान–राजेराम सु० श्री ओमप्रकाश। मन्त्री–सुरेन्द्र सु० श्री जगदीश। उपमन्त्री–जयभगवान सु० श्री सतवीरसिह। कोषाध्यक्ष–साधूराम। ऋषिपाल तथा सरक्षक सत्यवीर शास्त्री छुछकवास को बनाया गया।

यह क्रम अभी समाप्त नहीं हुआ है बल्कि २१ अक्तूबर से ३० अक्तूबर २००१ तक एक अन्य प्राइवेट (निजी) विद्यालय जिसका नाम है 'सर्वहितकारी पब्लिक स्कूल छुछकवास'। इस शिविर के बाद निम्न युवको ने भाग लिया। जोगेन्द्र सु० श्री सुरेशकुमार, शिवकुमार सु० श्री केशूराम, पवन सु० श्री सुरजीत फौजी, जयभगवान सु० श्री धर्मवीर, जयवीर सु० श्री जयकिशन, रिंकू सु० श्री राजकुमार, पंकज सु० श्री प्रवीण कुमार, सदीप सु० सूरजभान।

उपरोक्त सभी शिविरों में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य ने युवकों को सम्बोधित करते हुए अपने जीवन मे महर्षि दयानन्द की विचार धारा को अपनाने पर बल दिया।

बेटों को भी सिखाएं घर के काम

अभिलाषा के दो बच्चे हैं। बेटा निखिल और बेटी आयुषी। अभिलाषा आयुषी से घरेलू काम मे मदद करने को कहती है। जब उसकी परीक्षाएं नजदीक हो तब भी वह आयुषी से घरेलू काम करवाना नहीं भूलती। ठीक इसके विपरीत निखिल से वह कोई काम नहीं करवाती। हालात तो यहा तक है कि निखिल के स्कूल बैग से लेकर टैनिस और जिम जाने के बैग की तैयारी की जिम्मेदारी भी आयुषी पर है। इसके बावजूद आयुषी पढने मे निखिल से ज्यादा होशियार है।

एक दूसरा मामला देखिए–श्रीमती कामद के बेटे की नौकरी जब अपने शहर से दूर दूसरे शहर दिल्ली में लगी तो उसे वहा अकेले ही रहना पडा। श्रीमती कामद ने अपने बेटे शुभम से कभी भी घर का काम नहीं करवाया था। शुरू-शुरू मे शुभम ने होटल का खाना खाया लेकिन बाहर का खाना खाकर उसे कोलाइटिस हो गया। डॉक्टर ने उसे घर पर बना बिना मसालेवाला खाना खाने की सलाह दी। शुभम को खाना बनाना तो आता नहीं था, मजबूरन उसे एक माह की छुट्टी पर घर आना पडा। दूसरी बार जब वह ठीक होकर वापस गया तो मिसेज कामद को उसे खाना बनाना सिखाकर भेजना पडा।

आइए एक और उदाहरण देखे-उषा और विजय दोनो पति पत्नी बैंक मे काम करते हैं। उनके दो बेटे है विशु और वैभव। उषा दोनो बेटो से घर का काम नहीं करवाती है। हालत यह है कि जिस किसी दिन वह खाना नहीं बनाती, दोनो बच्चे दिनभर भूखे ही रह जाते हैं। इधर दोनो बेटो का शारीरिक और मानसिक विकास भी सतुलित भोजन के बगैर अवरुद्ध हो गया है। कमला का बेटा उदय न तो अपने कपडे धो पाता है और ना ही अपने कमरे की साफ-सफाई कर पाता है।

यह सारा काम कमला जी को ही करना पडता है। घर मे चार-चार बेटे हैं, वह सभी के काम करके आजकल बीमार चल रही है। मुश्किल तो यह है कि उन्हें हास्पिटल में घर का बना हुआ खाना नहीं मिल रहा है।

यह तो रही मा बेटों की बात। एक और उदाहरण है विभाष और मनीषा का। दोनो पति-पत्नी एक ही आफिस में काम करते हैं। मनीषा को घर-बारह दोनो का ही काम करना पडता है। विभाष घर के किसी काम को हाथ तक नहीं लगाता। आजकल के जमाने मे नौकर तो काम के लिए मिलते नहीं इसलिए मनीषा घर और आफिस का काम करते-करते बीमार हो गई है। डॉक्टर ने उसे एनिमिक बताया और एक महीने बैड-रेस्ट की सलाह दी है। बात यहीं तक होती तो ठीक था। जब से मनीषा बीमार पडी है, विभाष खाने को तरस कर रह गया है। हालत यह है कि विभाष भी पिछले कुछ दिन से अस्वस्थ है। क्योंकि उसके रक्त की जाच करने से यह पता चला है कि भोजन मे आयरन और पोषक तत्त्वो की कमी की वजह से उसके खून मे प्लाजमा कोशिकाए लगभग नहीं के बराबर हैं। दोनो का ही सघन इलाज चल रहा है।

उपरोक्त उदाहरण मे आपने देखा होगा कि घर के काम न करने के कारण कितनी मुसीबते आ पडी हैं। भारतीय मानसिकता यही है कि घरेलू काम बेटिया करे, बेटे नहीं, पर आज जमाना बदल गया है। जब स्त्री-पुरुष दोनो ही प्रगति करना चाहते हैं तो ऐसी स्थिति मे स्त्री के ऊपर घरेलू काम-काज का अतिरिक्त दायित्व डालना, स्त्री की शक्ति और क्षमता का दुरुपयोग करना है लेकिन इसके लिए महिलाए ही उत्तरदायी हैं। अगर माताएं बचपन से ही अपने बेटो से घरेलू कामकाज मे थोडी-थोडी मदद लेना शुरू कर दे तो बेटों को भी यह एहसास रहेगा कि घरेलू काम की जिम्मेदारी उन पर भी है। यह ठीक है कि बेटो से बाहर के काम करवाए जा सकते हैं मगर घरेलू काम मसलन खाना बनाना, अपने खाने की प्लेटे साफ करना, अपने कपडे धोना, अपने कमरे की मैन्टेनैंस आदि का दायित्व भी बेटो पर प्रारम्भ से ही डालें। यह घर के काम ही जिन्दगी की बुनियादी जरूरत है। जब खाना खाना है तो बनाना भी तो सीखना पडेगा। कई बार जब किन्हीं विपरीत परिस्थितियों में घर की महिलाएं बीमार हो जाती हैं तब रसोई घर में ताला लगने की स्थिति आ जाती है।

अगर आपका बेटा शहर से दूर जा रहा है तो भी यह सारे काम उसकी मदद करेंगे अगर उसे यह काम करना आता होगा। गाधी जी जैसे महापुरुष ने भी किसी भी काम को छोटा और बडा नहीं माना। काम काम है उस पर यह नहीं लिखा है कि इसे बेटा करेगा, इसे बेटी करेगी। जीवन सभी का मूल्यवान् है और समय भी। जब घर मे बेटा-बेटी दोनो मिलकर घर के काम निपटाएंगे तभी दोनों का अध्ययन सुचारु रूप से चलेगा। कई बार जिन पुरुषो को घर का काम नहीं आता इसी वजह से उनका दाम्पत्य जीवन भी खतरे में पड जाता है। आप मां हैं। घर में बेटे-बेटी दोनो को ही संस्कार देने का दायित्व आपका है। जब घर से दूर आपका बेटा देश की सरहदों की रक्षा करने जाता है तब वहा पर उसे स्वय खाना बनाकर खाना पडता है। स्वय अपनी देखभाल करनी पडती है। बेटियो को स्वावलम्बी जरूर बनाएं पर बेटों को भी घरेलू काम-काज मे आत्मनिर्भर बनाएं। यह दायित्व आपका है इसे जल्दी समझें और अमल मे लाएं। (रासफीने) **–शेखर त्रिपाठी**

(पंजाब केसरी से साभार)

स्त्री-पुरुष में परिचय की मर्यादा

व्यावहारिक क्षेत्र मे स्त्री-पुरुष के बीच सम्पर्क केवल आवश्यकता के मुताबिक ही होना चाहिए। साधारण स्तर पर स्त्री के लिए पुरुष के शरीर को और पुरुष के लिए स्त्री के शरीर को स्पर्श करना बिल्कुल जोखिम है। विजातीय स्पर्श मे हमेशा विकार की सभावना बनी ही रहती है।

स्त्री-पुरुष को आपस मे सम्मान रखना आवश्यकता है क्योकि व्यावहारिक और सामाजिक जीवन परस्पर प्रेम से भरे सहयोग पर ही निर्भर है परन्तु पति-पत्नी के सम्बन्ध के सिवाय शारीरिक एव बौद्धिक रूप से भी स्त्री-पुरुष का परिचय बिल्कुल ही निषिद्ध है। फिर भी जब अपने या दूसरे के प्राणों की आपत्ति का प्रसग खडा हो जाए तब परस्पर बोलकर या छूकर प्राणो की रक्षा की जानी चाहिए। हिन्दू शास्त्र ऐसे सकट के प्रसग के सिवाय स्त्री-पुरुष के मिलन को नितात मलिन एव दोषपूर्ण कहता है।

घृतकुम्भसमा नारी तप्तागारसम पुमान्।
तस्माद् घृत च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद् बुध॥
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वासमपि कर्षति॥

नारी घृत के घडे के समान है और पुरुष जलती हुई आग के समान है, इसलिए बुद्धिमान् पुरुष जैसे आग बढ जाने के भय से घी और आग को एक साथ नहीं रखते, वैसे ही नारी तथा पुरुष को साथ नहीं रहना चाहिए। यहा तक कि मा, बहन और पुत्री के साथ भी एकात में न बैठें। इन्द्रियां बडी बलवती हैं। वे विद्वान् को भी खींच लेती हैं। **–सन्त आसाराम**

२३ दिसम्बर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस पर विशेष लेख

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म २२ फरवरी सन् १८५७ को जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला नानक चन्द था जो पुलिस इन्स्पैक्टर थे। इनका बचपन का नाम बृहस्पति था। फिर मुन्सीराम के नाम से प्रसिद्ध हुए, जो संन्यास लेने तक चलता रहा। स्वामी जी की शिक्षा दीक्षा बनारस (उ०प्र०) से प्रारम्भ हुई और लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान) वकालत करने के पश्चात् समाप्त हुई। विवाह के कुछ वर्षो बाद ही इनकी पत्नी शिवदेवी का देहान्त हो गया। स्वामी जी के जीवन मे एक नया मोड आया। अब पूजा के स्थान पर आडम्बर और रूढियों को देखा तो अनीश्वरवादी (नास्तिक) हो गये। किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आने और प्रभावशाली वक्तव्य को सुनकर इनका विश्वास ईश्वरभक्ति मे दृढ हो गया। सन् १९०२ मे गुरुकुल कांगडी की स्थापना करके परम ख्याति को प्राप्त किया। इसी गुरुकुल मे स्वामी जी ने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति भारतीय सस्कृति एव सभ्यता को विलीन करना चाहती थी, ऐसे मौके पर अपनी संस्कृति एव सभ्यता को जीवित रखने के लिए गुरुकुल प्रणाली को जन्म देना अनिवार्य था। जबकि ऐसे में गुरुकुल प्रणाली को जन्म देना अग्रेजी सरकार के विरुद्ध था।

इस प्रकार आर्यसमाज की उन्नति को देखकर अंग्रेजी सरकार ने इसे राजद्रोही संस्था घोषित कर आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता लाला लाजपतराय को मण्डले जेल भेज दिया। इसी प्रकार पटियाला आर्यसमाज के सभी सदस्यो को जेल भेज दिया। स्वामी जी क्रान्तिकारी एव दूरदर्शी विचारो के थे। अत गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को लेकर अग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह किया और समस्त आर्यसमाजियों को मुक्त कराया।

३० मार्च सन् १९१९ को रोलेट एक्ट के विरोध मे दिल्ली की जनता ने स्वामी जी के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला। फौजियो ने जुलूस रोक दिया और गोरखा जवान ने भीड पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। स्वामी जी कब रुकने वाले थे। भीड को चीरकर गोरखा जवानो के सामने अपनी छाती खोलकर ललकारते हुए कहा कि निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पूर्व मेरी छाती पर गोली मारो। स्वामी जी की ललकार से गोरखा जवानों की सगीने नीचे हो गयी। स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। इसी कारण ऐतिहासिक जामा मस्जिद के मच पर ४ अप्रैल १९१९ मे जो व्याख्यान हुआ उसमे भारी संख्या मे हिन्दू-मुस्लिम जनता एकत्र हुई। यह वह समय था जब हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे को फूटी आंखों नहीं देखना चाहते थे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने तभी तो कहा था कि मैं चाहता हू कि उस वीर सन्यासी का स्मरण सदैव हमारे अन्दर वीरता के भावो को भरता रहे।

१० दिसम्बर १९२२ को स्वामी जी ने अमृतसर में अकाल तख्त पर भाषण देकर, सिक्खो के साथ गिरफ्तारी देकर, कारागार की सजा भी भोगी।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने भारत की एकता अखण्डता और स्वतन्त्रता की कामना करते हुए एक क्रान्तिकारी के रूप में माने जाते हैं। अन्त में २३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक मुसलमान हत्यारे ने स्वामी जी को गोली मारकर हत्या कर दी और स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, धर्म व जाति के लिए प्राणो की बलि देकर इतिहास में अमर हो गये।

—आचार्य रामसुफल शास्त्री 'वैदिक प्रवक्ता'
लाल सडक, हांसी

हांसी में नवदिवसीय पारिवारिक सत्संग सम्पन्न

आर्यवीर दल हांसी द्वारा शारदीय नवरात्रों के उपलक्ष्य मे १७ से २५ अक्तूबर, २००१ तक नौ दिवसीय वैदिक पारिवारिक सत्सग एव यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे निम्नलिखित ८ परिवारो में अलग-अलग कार्यक्रम रखे गए–

१ श्री रतनसिंह सोनी, २ मा हरस्वरूप पूर्व सेवक आर्यसमाज शहर, ३ चौ. गुलाबसिह आर्य, शेखपुरा, ४ श्रीरामस्वरूप पोपली, ५ श्री सुभाष आर्य, ६ श्री केसरदास मल्होत्रा, ७ श्री जिलेसिह हलवाई, ८ श्री रामगोपाल सैनी आदि सज्जनों के यहां प्रतिदिन प्रात ९ से १० बजे तक यज्ञ व शाम ५ से ६ बजे तक सत्संग किया गया।

अन्तिम दिन २५ अक्तूबर २००१ को ममता पब्लिक स्कूल, पुरानी सब्जी मण्डी, लाल सडक हासी मे प्रात ८ से ११ बजे तक पूज्य स्वामी कीर्तिदेव जी, आर्य सन्यासी, आर्यसमाज, जी टी रोड, हासी की अध्यक्षता मे समापन समारोह आयोजित किया गया।

समारोह यज्ञ एव उक्त आठों परिवारो के यज्ञ के आचार्य पण्डित रामसुफल शास्त्री जी वैदिक प्रवक्ता लाल सडक हासी थे। मुख्य वक्ता के रूप मे बोलते हुए आर्यसमाज हासी शहर के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोहनलाल भयाणा ने कहा कि आर्यवीरो को देशभक्तो के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। जिससे दिशाहीन, पथभ्रष्ट युवको का मार्गप्रशस्त हो सके।

उक्त आशय की जानकारी देते हुए दल के कार्यवाहक प्रधान चौ० राघवेन्द्र सिह आर्य ने बताया कि उक्त नौ दिवसीय कार्यक्रम मे आर्यजगत् के उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् पण्डित भरतलाल जी शास्त्री एम ए, वकील कालोनी, हासी प० विजयपाल आर्य (प्रभाकर), पुरोहित आर्यसमाज, खरड चुगी, हासी, पण्डित रामकिशोर आर्य (विद्याभास्कर) पुरोहित आर्यसमाज शहर, श्री जबरसिह व श्री वेदपाल आर्य की भजन पार्टी का भी समय-समय पर योगदान मिलता रहा। इस कार्यक्रम से नगर मे वेदप्रचार की धूम मच गई है।

—कमल रेवडी, मन्त्री, आर्यवीर दल, हासी

राष्ट्र की असफलता के मूल कारण

भगवान् की इस सृष्टि में दो प्रकार के मनुष्य हैं–दानव और मानव। दानव नाम है जो दनु राक्षस की परम्परा के पोषक हैं। ये लोग अपने प्राण पोषण के लिए मानवों का आहार छीनते हैं। उन पर अत्याचार करते हैं और अपने प्रभुत्व को क्षीण न होने देने का सदा प्रयास किया करते हैं। उनके सम्मुख खाना-पीना मौज उडाना केवल यही ध्येय होता है। इनसे भिन्न मानव वे हैं जो मनु देवता की परम्परा के पोषक हैं। ये लोग अपने प्राण-पोषण के लिए किसी का आहार नहीं छीनतें, अपितु अपने धार्मिक प्रयास से जो जीवन के लिए अर्जन क्रिया है उसमें अपना निर्वाह करते हैं। उसी में से दयनीय लोगो की सहायता करना भी अपना लक्ष्य समझते हैं। अनाचार से पृथक् होकर किसी पर भी अत्याचार नहीं करते। उनके सम्मुख इहलोक में रहते हुए वे ऐसा कर्म नहीं करते जिससे परलोक बिगडे। दानवों की अपनी अलग टोली है, क्योंकि उनके सस्कारो मे एकता है वे अपने अनुकूल सस्कार एक-दूसरे मे देखते हैं। क्योंकि उसके समीप अत्मिक बल की न्यूनता है और उस न्यूनता की पूर्ति हेतु वह अपने जैसे विचारवाले जनों का आश्रय लेते हैं और मिलकर रहने की पूरी चेष्टा करते हैं।

दूसरा विभाग जिसे मानव के नाम से पुकारा जाता है उसमें मानसिक बल वा आध्यात्मिक शक्ति अधिक होती है और उसकी अनुभूति मे वह अपने अनुकूल सस्कारी जनो से मेल करने की आवश्यकता नहीं समझता इसलिए मानवो का समुदाय क्षीण होता है, उनके संग देखने मे नहीं आते। बस, दानवो की सग शक्ति और मानवों की विलगता के कारण ही राजा का जन्म हुआ है। राजा उसे कहते हैं जो मानवों के गुणों मे सबसे अधिक गुण रखता हो। राजा शब्द **'राजृ दीप्तौ'** धातु से निष्पन्न होता है। इसलिए गुणों में श्रेष्ठ दीप्तिमान् राजा कहलाने का अधिकारी है। नायक या नेता भी इसी का नाम है। वैसे दानवों के भी नायक हैं, नेता हैं, पर सर्वविदित बात यह है कि जो श्रेष्ठता की ओर जानेवाला हो वही नायक वा नेता कहा जाता है। अब दो बातें हमारे समक्ष हैं–दानव, मानव और नेता दानव अपना संघ बनाते हैं और मानव नहीं बना पाते वा आवश्यकता अनुभव नहीं करते। यदि मानवों के संघ होजावें तो नेता व राजा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु इनका संघ न स्वभावत कभी बना है और न ही बनेगा इसलिए नेता वा राजा की सदा अपेक्षा रहेगी।

यह बात समझ में आती जारही होगी कि तब तो दानवों से मानवों की रक्षा के लिए राजा की अपेक्षा है और यह बात ध्यान मे आरही होगी कि मानव अपनी रक्षा के लिए अपने नेता का चुनाव करेंगे और वह अपने में से ही किया जा सकेगा, दानवों में से नहीं।

जब ऐसी बात है तब प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह दानव हो अथवा मानव और चाहे अभी १८ वा २१ वर्ष का अबोध हो। मत का अधिकार दे देना कितनी विडम्बना है। दानव कभी भी राज नहीं कर पाते, अपने अत्याचार, अनाचार और अन्याय को पनपते रहने के लिए वे दानव को ही चुनेंगे और मानव अपने नेता मानव को। इस प्रकार इस निर्वाचन प्रणाली मे दोनों के नेता पहुच जाते हैं। समस्या वही बनी रहती है, जो पहले थी। लाभ कुछ नहीं हुआ अपितु हानि कहीं अधिक होजाती है। क्योंकि इस सृष्टि में स्वभावत दानवो की संख्या अधिक रहती है और मानवों की कम। निर्वाचित होकर भी दानव अधिक गये और मानव कम।

दानवों को तो अपने नेता का स्पष्टत आभास है कि यह हमारे अनाचार, अत्याचार, अन्याय की राक्षा करेगा, किन्तु बहुत से मानव भी उसी ओर अपने मताधिकार का प्रयोग कर बैठते हैं क्योंकि वह सदाचार, न्याय और धर्म का मुखौटा पहने रहता है। मानव उस पर विश्वास कर बैठते हैं और निर्वाचित कर बैठने की त्रुटि कर जाते हैं।

आज इसलिए राष्ट्र की समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। जिन नेताओं को यह ही भान नहीं होता कि किसी प्राणी के प्राणहरण करने से उसे कष्ट होता है, मांस जैसा अभक्ष्य पदार्थ खाने व खिलाने के लिए मछली, बकरे, सुअर, हिरण, गाय वा अन्य जन्तु मरवाते हैं। मारने के लिए उन्हें पलते हैं वा पलवाते हैं, वे मनुष्यों पर भी क्या क्षमा करेंगे। उनके कष्टों को कैसे दूर करेंगे। तनिक विचारिये सोचिये यह एक का काम नहीं समस्त राष्ट्र का है। सभी को मत अधिकार देकर हमारे विधान निर्माताओं ने व्यर्थ की मत्थापच्ची सिर ले रखी है, पैसा बर्बाद होता है। समय नष्ट होजाता है, परिश्रम बेकार जाता है, काम हुआ दीखता है पर आत्मा को नहीं छू पाता। एक समस्या हटती है दूसरी आ खडी होती है। अत: निर्वाचन प्रणाली में सुधार करके केवल सदाचारी, न्यायपरायण विद्वानों को मताधिकार चाहिए।

–जोगिन्द्रसिंह, बालन्द

❖ ❖ ❖

चाणक्य-सूत्र

वृद्ध पुरुषो की सेवा द्वारा मनुष्य व्यवहारकुशलता का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उनसे ही कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की पहिचान पकडना जान सकता है। जब मनुष्य आग्रह और श्रद्धा से ज्ञानवृद्धों के पास निरन्तर उठता बैठता है, रहता है, उनके वातावरण का अंग बनकर रहता है, उन्हे अपनी भूलें बताने और उन पर नि:शंक टोकते रहने का असीम अधिकार देकर रखता है तो वह वृद्धों की श्रद्धामयी सेवा से विनय प्राप्त करता है और उसमें कार्यकुशलता भी आजाती है।

वृद्धावस्था के रोग तथा निराकरण

❑ छाजूराम शर्मा वैद्य शास्त्री, १२६ जनता डी डी ए फ्लैट, पावर हाउस, बदरपुर, नई दिल्ली

मनुष्य को वृद्धावस्था किस आयु में आनी चाहिए और उसको दूर हटाने के क्या उपाय हो सकते हैं? यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसका उत्तर प्रत्येक सुखार्थी मनुष्य जानना चाहता है।

यदि मनुष्य की सामान्य आयु सौ वर्ष की मानकर चलें, तो वह जीवन में चार दशाओं में गुजरता है। (१) बाल्यावस्था, (२) युवावस्था, (३) वृद्धावस्था, (४) जरावस्था। इनमे वृद्धावस्था ७५ वर्ष की आयु से १०० वर्ष तक होती है और इससे ऊपर जरावस्था आ जाती है।

प्राय समझा जाता है कि ७५ वर्ष की आयु में अवश्य ही वृद्ध हो जाना चाहिए परन्तु स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार चलने से इस समझ का खंडन हो जाता है क्योंकि वृद्धावस्था का आयु से कोई अटल सम्बन्ध नहीं है। यह तो देश, काल, आहार-विहार, आचार-विचार आदि पर निर्भर है। इसके अनुसार प्राचीनकाल में सौ वर्ष अथवा उससे ऊपर वृद्धावस्था आती थी। मध्यकाल में ७५ वर्ष और आजकल ५०-६० वर्ष की आयु वृद्धावस्था की मानी जाती है, सो ठीक नहीं है। यदि आयु ही वृद्धावस्था का कारण होती, तो आज हम बहुतो को ४० वर्ष मे ही वृद्ध होते न देखते। दुर्बलता का नाम वृद्ध वा बुढापा है, वह किसी भी आयु में आ सकता है। शक्तिमान् बने रहना युवावस्था है। प्राकृतिक जीवन जीने से यह किसी भी आयु तक बनी रह सकती है।

वृद्धावस्था में दुर्दशा

गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि:।
दृष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता वक्त्रं च लालायते।।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूयते।
हा! कष्ट पुरुषस्य जीर्णवयस: पुत्रोऽप्यमित्रायते।।

शरीर जिसका सिकुड गया है, गाल पिचक गए हैं, चाल ढीली पड गई है, दातों की पक्तियां नष्ट हो चुकी हैं, नेत्रों की दृष्टि मन्द हो गई है। मुख से लार टपकती है, बन्धु बान्धव आदर नहीं करते, भार्या भी सेवा नहीं करती, हां! बडे दुख का विषय है कि मनुष्य की वृद्धावस्था में पुत्र भी शत्रु बन जाता है। बडी दुर्दशा होती है।

युवावस्था में जिसकी घर में बडी चाहना थी, वृद्धावस्था में उसकी घर में कोई चाह नहीं, अपितु चाहते हैं कि यह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो। अत सन्तान आदि के अधिक मोह में न फंसकर वह कार्य करना, जिससे बुढ़ापे में सुख से रह सके। जवानी में शरीर और इन्द्रियों की रक्षा करता हुआ संकट काल के लिए कुछ द्रव्य अवश्य बचाये रखना चाहिए, जिसके लोभ से सन्तान और पत्नी सेवा करते रहें। एक नीतिकार के विचारों पर ध्यान दें–

इह लोके हि धनिनां, परोऽपि स्वजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां, सर्वदा दुर्जनायते।।

संसार में धन वाले के लिए पराये भी अपने हो जाते हैं और धनहीन व्यक्ति के अपनी भी पराये हो जाते हैं।

अस्ति यावत्तु सधन:, तावत् सर्वैस्तु सेव्यते।
निर्धनस्त्यज्यते भार्या-पुत्राद्यै: सगुणोऽप्यत:।।

अर्थात् जब तक पुरुष के पास धन है, तभी तक स्त्री पुत्रादि उसकी सेवा करते हैं। धन के अभाव में गुणवान् होने पर भी उसकी बात तक नहीं पूछता।

वृद्धावस्था क्यों आती है?

ऋतु, देश, काल प्रकृति के विरुद्ध अनियमित आहार-विहार, पौष्टिक भोजन का अभाव, अत्यधिक आराम का जीवन, परिश्रम न करना, भोग-विलास, अधिक उपवास, मानसिक चिन्ताए, क्रोध, शोक, भयग्रस्त जीवन, ब्रह्मचर्य नष्ट करना, शरीर में कोई न कोई रोग लगे रहना, विपत्तियों में फसकर अनेक कष्ट सहना इत्यादि कारणों से शीघ्र ही बुढापा घर कर लेता है। मनुष्य की जीवनी शक्ति प्रतिदिन घटने लगती है। तब यह शारीरिक, मानसिक दोनो ही रूप से अशक्त हो जाता है। ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्द्रिया निर्बल हो जाती हैं।

वृद्धावस्था के पूर्व लक्षण

स्मरण शक्ति मे कमी, चलने-फिरने, उठने-बैठने मे थकावट होना, कार्य करने मे चुस्ती व उत्साह न होना, शरीर में झुर्रियां पडना, किसी कार्य मे मन न लगना, निश्चय किये गए विचार को बार-बार बदलना, बालो का सफेद होना या गिरना, जोडो में दर्द, वायु व कफ के विभिन्न रोग होना, बिना सामर्थ्य के इन्द्रियों की अपने भोगों मे रुचि होना इत्यादि लक्षण बुढापे के जानने चाहिए।

इससे बचने के उपाय

बुढापा अपने समय पर अवश्य आता है। लेकिन उचित उपायों से इसे २५ वर्षो तक आगे को धकेला जा सकता है। जैसे समय पर फल पकता है, वैसे ही यह शरीर भी पक पकता है, वैसे ही यह शरीर भी पक जाता है। बुढापा पकी हुई आयु है। यह युवावस्था का अन्तिम समय है, जो आने के बाद फिर जाता नहीं। तभी तो कहा है कि–

जो जाकर न आये वह जवानी देखी, जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा। जवानी मे बुढापा आना जीवन मे अभिशाप है। इसे ठीक से जीने के लिए निम्न उपाय करने चाहिएं–

आयु की दृष्टि से सर्वप्रथम ऋतु अनुकूल उचित आहार-विहार का प्रबन्ध करना चाहिए। बुढापे के उपर्युक्त कारणों से बचकर ब्रह्मचर्य का सेवन, निद्रा का उचित सेवन करना आवश्यक है।

उचित आहार क्या है?

चोकरदार कुछ बिना छना मोटा आटा, छिलकेदार दालें, हरी सब्जिया, दूध, मक्खन, दही, घी, शहद, सूखे मेवे, देशी खांड, ऋतु के अनुसार फल, यथाशक्ति इनका सेवन वृद्धावस्था को शीघ्र आने से रोकता है। अंडे-मास व सब प्रकार के नशों का सेवन शीघ्र बुढापा लाता है। बुढापे के लक्षण देखते ही रसायन औषधो का सेवन करना जीवनी तत्त्वो मे वृद्धि कर बुढापे को रोकता है। सयम, सदाचार, सरलता, प्रसन्नचित्त रहना, स्वल्प सात्विक भोजन, क्रियाशील जीवन, प्राकृतिक नियमो का पालन नि सदेह मनुष्य को जवानी में सग्रह की हुई शक्ति वृद्धावस्था मे काम देती है।

वृद्धावस्था में होनेवाले रोग और उनकी विश्वस्त औषधियां

वृद्धावस्था मे प्राय जोडो के दर्द, मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप, बहुमूत्र और हृदयरोग हो जाते हैं। इनका कारण गलत भोजन, परिश्रम न करना, मानसिक चिन्ताए व शोक आदि हैं। इनमें निम्नलिखित सफल औषधियो का प्रयोग लाभदायक है।

मधुमेह—नीम निबौरी की गिरी, जामुन की गिरी, गुडमार बूटी, बेल के पत्ते, त्रिफला, गिलोय, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत, चादी भस्म, मडूर भस्म, छोटी इलायची के बीज।

सूखी दवाओ को कूट छानकर चूर्ण बनाले। फिर उसमे भस्मे मिला दे। इसमे करेला का रस डालकर दिन मे धूप मे रखे, रात को ओस मे रखे। यह एक भावना हुई। इस प्रकार करेला की रस की सात भावना देकर छाया मे सुखा ले। छह माशे प्रात, छह माशे साय जल के साथ सेवन करे।

परहेज—तेल, खटाई, मीठा, आलू, चावल, आम, पकवान, लालमिर्च, गरिष्ठ व बासी भोजन का सेवन न करे। सादा व हल्का भोजन ले। परिश्रम, ब्रह्मचर्य सेवन करे। एक मास के सेवन मे मधुमेह चला जाता है। रोग पुराना हो तो तीन मास अवश्य सेवन करे। इससे बहुमूत्र रोग भी ठीक होता है।

जोडों का दर्द—शुद्ध कुचला, सौ ग्राम, शुद्ध गूगल ५० ग्राम, मल्ल सिदूर २० ग्राम, मीठी सुरजान ५० ग्राम ले।

पहले मल्ल सिदूर को खरल मे पीसे। फिर उसमे कुचला और सुरजान का चूर्ण मिला दे। बाद मे गूगल मिलाकर एक करले। फिर इसमे अदरक का रस डालकर भिगोदे। दिन को धूप मे और रात को ओस मे रखे। यह एक भावना हुई। ऐसी सात भावना लहसुन के रस की देकर खरल मे घुटाई करे। फिर खुश्क होने पर २-२ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे सुखाले।

प्रात साय दो-दो गोलिया दूध से ले। यह दवा गृध्रसी (रीघन वायु) दर्द की अचूक दवा है। इसके अतिरिक्त गठिया, जोडो का दर्द, कमर का दर्द व सब प्रकार के वायु कफ के दर्द और पुराने जुकाम में लाभ करती है। साथ ही दर्द स्थान पर महानारायण तैल और विषगर्भ तैल की मालिश करके सेक दे। चावल, उडद, चने, राजमा आदि वायुकारक वस्तुए न खावे।

(शेष पृष्ठ आठ पर)

दयानन्दमठ वैंदिक सत्संग समिति का २६वां सत्संग सम्पन्न

रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक मे वैदिक सत्सग समिति द्वारा सचालित २६वा सत्सग समारोह ४ नवम्बर, २००१ रविवार को सम्पन्न हो गया। यह सत्सग प्रत्येक महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। इस सत्सग के सयोजक आचार्य सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार प्रसार करने हेतु शुरू किया गया। इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए सयोजक ने बताया कि प्रात ९ बजे से १० बजे तक यज्ञ। १० बजे जैसे ही यज्ञ सम्पन्न हुआ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओ ने यज्ञ प्रसाद सभी को बाटा। फिर भक्ति रस प्रारम्भ हुआ। श्री सोमवीर शास्त्री ने ईश्वरभक्ति का गीत प्रस्तुत किया। इसके बाद एक बालिका दीपिका आर्या तथा अर्जुन कुमार मकडौली व विनय छात्र ने अपने-अपने गीत प्रस्तुत किये। इसी कडी मे राजकुमार यादव कैलाश कालोनी ने भी अपना गीत रखा। श्री रामचन्द्र आर्य ने भक्ति रस की अन्तिम शृखला पूरी की। भाव थे–मैं तुझको पहचान ना पाया। धर्महीन मनुष्य पशु समान। मा० महेन्द्रसिह जी आसौदा ने 'धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष' पर अपने विचार रखे।

जैसे ही ११ बजे का समय हुआ। आज के मुख्य वक्ता डॉ० बलवीर आचार्य ने गायत्री मन्त्र से अपने विषय 'मन' पर बोलना प्रारम्भ कर दिया। डॉ० साहब ने अपना प्रवचन पूरा एक घण्टे मे किया। उन्होने साख्य दर्शन का हवाला देते हुए बताया कि मन जड है। महाभारत मे सबके बीच खडा होकर दुर्योधन ने कहा था कि अधर्म, पाप को जानते हुए भी कोई शक्ति ऐसी है जो मुझे धर्म की ओर प्रवृत्त नहीं होने देती है। कोई देव मेरे अन्दर बैठा है। अर्जुन ने यही प्रश्न श्री कृष्ण जी से पूछा कि चोरी-जारी अधर्म, अनिच्छा से, न चाहते हुए भी इस ओर प्रवृत्त क्यों होता है। पाप क्यों करता है मानव ? व्यास जी ने कहा–सकल्प-विकल्प चल रहे हैं उनके पीछे 'मन' की ही मुख्य भूमिका होती है। जैसे कहते हैं कि मन के जीते जीत है, मन के हारे हार। विचारों का प्रभाव मन पर पडता है। एक ग्वाले का दृष्टान्त सुनाया। संग का प्रभाव पडता है इसलिए जीवात्मा को सग की आवश्यकता है। ईश्वर सत् चित् आनन्द स्वरूप है। मन एक साथ दो ज्ञान ग्रहण नहीं कर सकता। न्याय दर्शन मे मन की परिभाषा दी है 'युडापज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्।'

अन्त में डॉ० साहब ने बताया कि जैसे परीक्षा में बैठे हुए विद्यार्थी का मन बाहर नहीं जाना चाहता, उसी प्रकार सामान इकट्ठा करने में आनन्द नहीं है। परमात्मा ही आनन्द का स्रोत है। मन को परमात्मा मे लगाओ। मन ही बीमारियों, सफलताओं व मुक्ति का आधार है। एक समय मे दो कार्य मत करो। सत्संग समिति के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी ने उनका परिचय दिया। सत्संग के सयोजक ने शान्ति पाठ के बाद अगले सत्सग २ दिसम्बर का आमन्त्रण दिया तथा सभी को ऋषि लगर मे भोजन के लिए बुलाया। भोजन की व्यवस्था वैदिक सत्संग समिति की ओर से की गई थी।

–सन्तराम आर्य, सयोजक एवं व्यवस्थापक
वैदिक सत्सग दयानन्दमठ, रोहतक

गुरुकुल आश्रम आमसेना (नवापारा) में प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

आमसेना। विगत २६ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक गुरुकुल आश्रम आमसेना में विशाल आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमे २५० से अधिक आर्य वीरो ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर नई प्रेरणा प्राप्त की। पूज्यपाद श्री स्वामी धर्मानन्द जी के आशीर्वाद से यह सप्त दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ। उक्त शिविर में आर्यवीरों को लाठी, भाला, कराटे, दण्ड बैठक, चाकू, योगासन आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इसी बीच १ नवम्बर को खरियार रोड नगर में भव्य शोभायात्रा (रैली) निकाली गई। शराब एव मास अडो के विरुद्ध नारे भी लगाये गये। खरियार रोड नगरवासियो ने मिष्ठान्न, जलपान आदि से शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया।

उक्त शिविर मे पं० विशिकेसन जी शास्त्री के पौरोहित्य मे सभी आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर जीवन को शुद्ध पवित्र रखने का सकल्प लिया। शिविर संयोजक श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती प्रान्तीय सचालक श्री कुजदेव जी मनीषी आदि विद्वानों ने जीवन निर्माण की प्रेरणा दी। श्री कपिलदेव जी ने आर्य (इन्दौर) आदि ने प्रशिक्षण दिया एवं गुरुकुल के सभी अध्यापकों ने भी अच्छा सहयोग किया। शिविर के सारे व्यय की व्यवस्था श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा से गुरुकुल आश्रम आमसेना में की गयी।

३ नवम्बर को शिविर समापन उत्साहमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्यातिथि नुआपाडा जिलापाल श्री सुदर्शन नायक, कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थानीय विधायक बसतकुमार जी पंडा एव मुख्यवक्ता श्री राजुभाई धोलकिया थे। आर्यवीरों ने इस शुभावसर पर शारीरिक प्रदर्शन भी किया और अपने गांव में शाखा निरन्तर चलाने का भी सकल्प लिया। मच का संचालन ब्र० सुदर्शनदेव जी नैष्ठिक ने बडी तन्मयता के साथ किया।

–आनन्दकुमार शास्त्री, मंत्री–प्रान्तीय आर्यवीर दल (उडीसा)

वृद्धावस्था के रोग......................... (पृष्ठ सात का शेष)

अन्य शास्त्रीय औषधें–वातचिन्तामणि रस, वातकुलान्तक रस, समीरपन्नगरस (स्वर्णयुक्त), योगराज गूगल, एकागवीर रस आदि रोगानुसार दी जा सकती है।

हृदय की धडकन (हार्ट अटैक)–प्रवाल भस्म, अकीक भस्म, मुक्ताशुक्ति दो-दो रत्ती, हृदर्याणव रस एक रत्ती। यह एक खुराक है। इसे मक्खन, मलाई, शहद वा दूध से दिन मे दो बार दे। इससे हृदय की धडकन को बहुत लाभ होता है, हार्ट अटैक का भय नहीं रहता। सिर मे चक्कर आना, आखों के आगे अधेरा होना और मस्तिष्क की दुर्बलता दूर हो जाती है।

बहुमूत्र–देशी अजवाइन, नागरमोथा छह-छह माशे, काले तिल १ तोला (१० ग्राम) सबको बारीक कर २० ग्राम गुड में मिला ले। प्रात-साय ५-५ ग्राम पानी से ले। बहुत लाभ होगा। शास्त्रीय औषधि वसन्तकुसुमार रस, तारकेश्वर रस, बहुमूत्रान्तक रस, चन्द्रप्रभावटी।

मोटापा–सोठ ५० ग्राम, सूखा धनिया ५ ग्राम, छोटी पीपल ५० ग्राम, कालीमिर्च ५० ग्राम, काला जीरा ५ ग्राम, काला और सेधा नमक ढाई-ढाई ग्राम, लालमिर्च आधा ग्राम। सबका कपडछान चूर्ण करे। दोनो समय दो-दो ग्राम चूर्ण भोजन के बाद पानी से ले।

शास्त्रीय औषधें–आरोग्यवर्धिनी वटी व त्रिफला का मिश्रण, नींबू का रस वा शहद डालकर २-२ गोली प्रात-सायं दे। चावल, घी, तैल, केला, उडद, चर्बी बढानेवाले पदार्थ न खावे।

शास्त्रीय औषध–मेदोहर गूगल इसमे लाभ करता है। २-३ मास तक अवश्य सेवन करे। नित्य सैर करें, चिन्ता त्यागे।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रैशर)–सर्पगन्धा चूर्ण, छोटी इलायची का चूर्ण २-२ रत्ती, शुद्ध शिलाजीत २ रत्ती मिलाकर प्रात-सायं दूध से लें। रक्तचाप वृद्धि कम होती है। अनिद्रा व उन्माद में भी लाभदायक है। पथ्य में हल्का सुपाच्य आहार ले। विश्राम करें। गहरी नींद लें। चिकनाई व भारी पदार्थ न ले, चिन्ता, शोक, क्रोध, अतिश्रम, अति जागरण अपथ्य हैं।

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर
सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./४७/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७८०१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक २ २८ नवम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

बाल अधिकारों की रक्षा

—सुशील रंजन

यह संयोग ही है कि १४ नवम्बर को भारत में बाल दिवस मनाया जाता है और उसके ६ दिन बाद २० नवम्बर का दिन अतर्राष्ट्रीय बाल अधिकार दिवस के रूप मे मनाया जाता है। एक सप्ताह मे दो दिन बाल कल्याण को समर्पित करना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि बच्चों की भलाई पर ध्यान देना मानवता के उत्थान तथा विकास की आधारभूत आवश्यकता है।

बाल्यावस्था मानव जीवन के विकास की पहली सीढ़ी है। इस अवस्था मे व्यक्ति मासूम, भोला, निरीह और असुरक्षित होता है। साथ ही यही वह अवस्था है जिसमे व्यक्ति के भावी जीवन की नींव पड़ जाती है। अत परिवार और समाज द्वारा बच्चे की देखरेख पर विशेष ध्यान दिया जाता है। किंतु बचपन वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की उपेक्षा, शोषण और अन्याय की सबसे अधिक गुंजाइश होती है। इसका कारण यह है कि बच्चा निरीह, अबोध और असहाय होता है। इसी स्थिति को देखते हुए बाल अधिकारों की रक्षा की तरफ दुनिया का ध्यान गया।

विश्व अभियान

भारत में बाल अधिकारों की अवधारणा बहुत पुरानी नहीं है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में ही इस विषय पर चिन्ता दिखाई देने लगी थी। बच्चों की सुरक्षा, देखभाल और संरक्षण के विशेष उपायों की आवश्यकताओं का उल्लेख सबसे पहले १९२४ की जिनेवा बाल अधिकार घोषणा मे किया गया। इस घोषणा के बाद विश्व के जागरूक देशों मे बाल अधिकारों की सुरक्षा के बारे में कानून बनने लगे।

जिनेवा घोषणा को औपचारिक अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता १९५९ में मिली जब संयुक्त राष्ट्र ने बाल अधिकार घोषणा को स्वीकृति दी। २० नवम्बर १९५९ को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा सर्वसम्मति से पारित इस घोषणा में बच्चों के दस मूलभूत अधिकारों का उल्लेख किया गया। इनमें मुख्यतया शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा और शोषण तथा उपेक्षा से बचाव जैसे मुद्दो पर बल दिया गया। बाद मे सयुक्त राष्ट्र की ओर से बाल सहायता कोष (युनीसेफ) का भी गठन किया गया। जो विभिन्न देशों मे बाल विकास की गतिविधियो का सचालन, निर्देशन और समन्वय करता है।

१९५९ की इस घोषणा को ठोस कार्यक्रम का रूप मिला २० नवम्बर १९८९ को जब सयुक्त राष्ट्र में बाल अधिकार संधि को स्वीकार किया गया। २ अक्तूबर, १९९० को इसे अन्तर्राष्ट्रीय कानून का रूप मिल गया। भारत ने ११ दिसम्बर, १९९२ को अन्तर्राष्ट्रीय बाल अधिकार सधि पर हस्ताक्षर किये और इस प्रकार वह भी बाल अधिकारो की रक्षा के विश्व अभियान मे शामिल होगया। भारत ने इस सधि की क्रियान्वयन की प्रारम्भिक रिपोर्ट १९९७ मे संयुक्त राष्ट्र को पेश कर दी। इसके अलावा महिला तथा बाल विकास मत्रालय ने बाल विकास सधि के प्रावधानों को लागू करने के लिए १५ सदस्यों की राष्ट्रीय समन्वय समिति गठित की है। मंत्रालय के सचिव की अध्यक्षता में गठित यह समिति संधि के क्रियान्वयन से जुड़े सभी मामलों पर नजर रखती है।

बाल अधिकार

बाल अधिकार संधि में १९५९ की सयुक्त राष्ट्रीय बाल अधिकार घोषणा को आगे बढाते हुए १८ से कम आयु के व्यक्ति को 'बाल' के रूप मे परिभाषित किया गया और सभी प्रकार के शोषण, भेदभाव, अन्याय तथा अत्याचार से बच्चो की रक्षा करने तथा उनकी उचित देखभाल के लिए १४ बाल अधिकारों की सूची जारी की गई। सधि मे उल्लेखित बाल अधिकार इस प्रकार हैं—

- नागरिकता प्राप्त करने का अधिकार।
- माता-पिता से अलगाव से बचाव का अधिकार।
- किसी देश को छोडकर अपने देश मे प्रवेश का अधिकार।
- पारिवारिक पुनर्मिलन के लिए किसी देश से निकलने या प्रवेश करने का अधिकार।
- गैर-कानूनी रूप से विदेश मे ले जाये जाने से बचाव का अधिकार।
- गोद लेने के मामले मे बच्चो के हितो की रक्षा का अधिकार।
- विचार, चेतना और धर्म की स्वतत्रता का अधिकार।
- स्वास्थ्य सेवाओ के इस्तेमाल का अधिकार।
- उपयुक्त जीवन स्तर और सामाजिक सुरक्षा का अधिकार।
- शिक्षा का अधिकार।
- आर्थिक शोषण के बचाव का अधिकार।
- नशीले पदार्थो के गैर कानूनी उत्पादन, व्यापार तथा प्रयोग से बचाव का अधिकार।
- यौन शोषण से बचाव का अधिकार।

प्रश्न यह है कि बाल अधिकारो की सधि हो जाने और विभिन्न देशो द्वारा उसकी पुष्टि कर दिये जाने से भी क्या विश्व के बच्चो को उनके अधिकार मिल गये हैं ? सच्चाई यह है कि बाल अधिकारो की स्थिति अभी उन देशो मे भी शोचनीय है, जहा इस दिशा मे पहल हुई थी। अनेक देशो ने तो अभी तक इस अन्तर्राष्ट्रीय सधि की पुष्टि भी नहीं की है। विकासशील देशों में बालको, विशेषकर बालिकाओ की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है।

भारत में प्रयास

वैसे हमारे देश मे बाल अधिकार सधि की पुष्टि से पहले ही शिक्षा स्वास्थ्य, आर्थिक शोषण जैसे क्षेत्रो मे बच्चो के हितो पर ध्यान देने के प्रयास शुरू होगये थे। जहा तक शिक्षा का सबध है, सविधान के अनुच्छेद ४५ मे सकल्प व्यक्त किया गया है कि १४ वर्ष तक के बच्चो के लिए सरकार नि.शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेगी।

(पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार)

वैदिक-स्वाध्याय

ज्ञानी पुरुष ईश्वरकृत अद्‌भुत बातों को सब ओर देखता है।

अतो विश्वान्यद्‌भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा।। (ऋ० १ २५ ११)

शब्दार्थ–(**चिकित्वान्**) ज्ञानी पुरुष (**कृतानि या च कर्त्वा**) जो की जा चुकी हैं और जो की जायेगी (**विश्वानि अद्‌भुतानि**) उन सब अद्‌भुत बातों को (अत) इस परमेश्वर से हुई (**अभिपश्यति**) सब तरफ देखता है।

विनय–इस ससार मे हम बहुधा आश्चर्यचकित करदेनेवाली घटनाए होते देखा करते है। इनका करनेवाला कौन है ? वैसे तो प्रतिदिन होनेवाली बातो को भी यदि हम ध्यान से देखे तो हमको उनमे बडी अद्‌भुतता दीखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्‌भुत वस्तु हैं जिनका परिवर्तन हम रोज साय प्रात देखते हैं। नन्हे से बीज से बडा भारी वृक्ष बन जाना, अभी चलते, फिरते, हंसते, खेलते, दीखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि फिर वह कभी न जग सकेगा, जीव से जीव पैदा हो जाना, ये सब भी वास्तव मे कितनी अद्‌भुत बाते है। परन्तु जब पृथ्वी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैकडो शहर बरबाद हो जाते हैं, भूकप आते हैं, बडे-बडे साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोडे ही दिनो मे एक मनुष्य, सितारे की तरह ऊचा, यशस्वी हो जाता है या राजा रक हो जाता है, तो इनमे अद्‌भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्‌भुत चमत्कारो को देखो, सिद्ध साधु, सन्तो द्वारा हुई चकित कर देनेवाली बातो को देखो ! ये सब ससार के एक से एक बढ करके अद्‌भुत है। इन सब अद्‌भुतो का करनेवाला कौन है ? हम लोग समझते हैं कि इनके करनेवाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या सघशक्ति है, या कुछ भी नहीं है केवल प्रकृति का खेल है। पर जो 'चिकित्वान्' (जाननेवाले) हैं, उन्हे तो सब तरफ इन अद्‌भुतो का करनेवाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दीखता है। उसी मे ये सब ससार के आश्चर्य निकलते दीखते हैं। इन सब विविध आश्चर्यो को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिये फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो 'गूगे को वाचाल करनेवाले और लगडे को भी पहाड लघानेवाले' हैं ही। ससार मे जो अद्‌भुत बाते हो चुकी है वे सब प्रभु की ही की हुई थीं, कल जो अद्‌भुत घटना होनेवाली है, कोई तख्ता पलटनेवाला है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होनेवाला है। प्रभु की अपार लीला देखनेवाले ज्ञानी इसमे कुछ आश्चर्य नहीं करते, वे अद्‌भुत से अद्‌भुत घटना मे भी कार्य-कारण भाव को देखते हैं।

अत हे मनुष्यो ! ससार के इन आश्चर्यो को देखकर चकित होना छोड दो किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहिचानो जो कि ससार को यह अद्‌भुत नाच नचा रहा है।

(वैदिक विनय से)

कणिक नीति का सार

- शत्रु के छिद्र सदा ढूंढता रहे, अपने छिद्रो को बिल्कुल ही प्रकट न होने दे।
- बैरी का नाश कभी अधूरा न करे अपितु जड़-मूल से उसका नाश करे अन्यथा वही शत्रु इस प्रकार दुःख देता है जैसा अधूरा निकाला हुआ देह का काटा।
- यदि अधा या बहरा बनने से काम बनता हो, तो अंधा तथा बहरा बन जाना चाहिए।
- यदि विश्वास देने से शत्रु मरे तो विश्वास में लाकर वध कर देना चाहिए।
- फलदार वृक्ष के नमा कर, पक्के-पक्के फल सब उतार ले, क्योंकि फल के लिए ही संसार का यत्न है।
- अवसर देखकर शत्रु को सिर पर उठा ले, परतु अपना दाव देखकर ऐसा फेंके जैसे पत्थर पर मिट्टी का घडा।
- शत्रु पर दया कभी न करनी चाहिए। शत्रु पर दया कभी न करे, चाहे वह दया-पात्र भी हो।
- भीरु को भय से, शूर को हाथ जोडकर, लोभी को धन देकर, सम या न्यून का बल से नाश करे।
- शत्रु के पक्ष में खडा हुआ पुत्र हो, सखा हो, भाई, पिता या गुरु कोई क्यों न हो, उसका शत्रु के समान ही नाश कर देना चाहिए।
- चाहे शत्रु पर प्रहार करना हो या प्रहार कर चुके हो, सदा मीठा बोलो।
- अपने हाथ से शत्रु का सिर काटकर भी ऊपर से दया दिखानी चाहिए। शोक भी करना चाहिए तथा रोने तक लग जाना चाहिए।
- आप किसी पर विश्वास न लावे, दूसरो को विश्वास मे ले आवे।

जासूसी कार्य :-

- शत्रु-मित्र का भेद जानने के लिए अपरीश्रित पुरुष या स्त्री को जार कर्म मे लगाना चाहिए।
- पाखण्डी तथा तापसो के वेश मे अथवा धर्मोपदेशक बनाकर दूसरे राज्यो मे (जासूस) या गुप्तचर भेजने चाहिए।
- बगीचे, विहार स्थलो, देव मन्दिरो और जगल की छबीले, मदिरापान आदि के स्थानो, गलियो, कूचो हर एक प्रकार के जनस्थानो, समाजो और बडे चौरास्तो पर गुप्तचरो को निश्चित करे।
- कूप, तालाब, नदी, पर्वत, वन उपवन तथा सर्व तीर्थो मे गुप्त दूतो को जय प्राप्ति के लिए नियत करे।

–मनुदेव अभय, अ/१३, सुदामानगर, इन्दौर

स्वर्गीय योगमुनि आर्य को श्रद्धाञ्जलियां

दिनांक चार नवम्बर को कन्या गुरुकुल पचगाव के मुख्याधिष्ठाता दिवगत योगमुनि आर्य (पूर्व नाम श्री जुगतीराम आर्य) का शोकसमाप्ति शान्ति यज्ञ उनके गांव काकडौली हट्‌ठी मे सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त प० भरत शास्त्री (कन्या गुरुकुल), श्री जगदीश सर्राफ, शेरसिह आर्य (नीमडीवाली), स्वामी रुद्रवेश जी, श्री सत्यवान् आर्य जेवली (भिवानी), श्री दीपचन्द आर्य-मांढी, इस्सेपुर निवासी उनके सैनिक साथी सज्जन, आर्यसमाज बहल के अधिकारी श्री गौड जी, भिवानी आर्यसमाज के प्रधान श्री अमृतसिंह जी, मेजर रामस्वरूप आर्य भिवानी, चादसिह आर्य, झोझू, बलवान् आर्य नान्धा, महाशय आजादसिह आर्य छीलर, प० विश्वमित्र आर्य लूकी, धर्म शास्त्री भाण्डवा, श्री हरिसिह जी प्रभाकर-गोपी, श्री ज्ञानचन्द शास्त्री-धारणवास व कन्या गुरुकुल की अध्यापिकाओ व छात्राओ ने मुनि जी के विषय मे अपने सस्मरण सुनाते हुए उनका गुणगान किया कि वे एक कर्तव्यपालक सैनिक, निष्ठावान् गुरुकुल सेवक, निस्वार्थ समाज सेवक, आर्यसमाज के लग्नशील कार्यकर्ता, दैनिक अग्निहोत्री, योगमार्ग के पथिक, अनाथों व गऊओ के सेवक, सहृदय सुहृज्जन, आदर्श गृहस्थी व वानप्रस्थी, आर्यरत्न और कन्या गुरुकुल के स्तम्भ थे। मित्रार्य भजनोपदेशक के द्वारा धर्मशास्त्री की प्रेरणा से बनाये गये भजन-'नेत्रों से बहे जलधार जब मुनि याद आते हैं' को सुनकर श्रोतागण विह्वल होकर अश्रुपात करने लगे। सुपुत्र सत्यपाल आर्य के प्रयत्नों से मृतक श्राद्ध आदि पाखण्डों का बहिष्कार हुआ और वैदिक विधिपूर्वक अन्त्येष्टि आदि आर्यमर्यादाओं का पालन किया गया।

–धर्मशास्त्री

सम्पादकीय—

अष्टाध्यायी क्या है और उसमें क्या है?

२० नवम्बर २००१ के दैनिक अमर उजाला में सचित्र समाचार छपा है कि फरीदाबाद सैक्टर-७ सी स्थित मकान नं० ८१९ के निवासी श्यामसुन्दर आर्य के जुड़वा पुत्र वेग आर्य और ध्रुव आर्य ने मात्र पौने चार वर्ष की आयु में सम्पूर्ण अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करके एक कीर्तिमान् स्थापित किया है। आर्यपुत्रों को अभी अक्षर ज्ञान नहीं है। श्री दीप्तिलाल शास्त्री से श्रवणमात्र से उन्होंने अष्टाध्यायी कण्ठस्थ की है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द जी ने भी कनखल में गंगा के पानी में बैठकर अष्टाध्यायी का पाठ करनेवाले पण्डित से सूत्रपाठ सुनकर ही सम्पूर्ण अष्टाध्यायी कण्ठस्थ की थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जब मथुरा में गुरु विरजानन्द जी की पाठशाला में पढने के लिये गये तब तक वे संस्कृत व्याकरण के लघुकौमुदी, सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थ गुरुमुख से पढ़ चुके थे किन्तु गुरु विरजानन्द जी के आदेश से उन्होने सभी अनार्ष ग्रन्थो को गंगाजल में प्रवाहित कर दिया था। स्वामी दयानन्द जी ने गुरु विरजानन्द जी से मुख्यरूप से वैदिक और लौकिक संस्कृत व्याकरण के प्रधान ग्रन्थ **अष्टाध्यायी और महाभाष्य** का ही अध्ययन किया था। अष्टाध्यायी वेदज्ञान की कुञ्जी है, ताली है। जैसे ताली से ताला सुगमता से खुल जाता है वैसे ही वेदरूपी ताले को अष्टाध्यायी रूपी ताली के सहज ही खोलकर समझा जासकता है।

दण्डी विरजानन्द जी अपने समय के व्याकरण शास्त्र के अद्वितीय पण्डित थे। उनसे काशी के बडे-बडे पण्डित शास्त्रार्थ में हार मान चुके थे। उनके देहान्त पर महर्षि दयानन्द ने कहा था--**"आज संसार से व्याकरण का सूर्य अस्त होगया।"**

दण्डी विरजानन्द जी की मान्यता थी कि सस्कृत व्याकरण के दो ही आर्षग्रन्थ हैं—अष्टाध्यायी और महाभाष्य।

अष्टाध्यायीमहाभाष्ये द्वे व्याकरणपुस्तके।
अतोऽन्यत्तु यत्किञ्चित् तत्सर्वं धूर्तचेष्टितम्।।

आज से लगभग पाच हजार वर्ष पूर्व दाक्षीपुत्र पाणिनि ने अपने अद्वितीय व्याकरण ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी' की रचना की थी। इससे पूर्व भी शाकटायनादि के अनेक व्याकरण ग्रन्थ थे जिनको पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में ससम्मान उद्धृत किया है। पाणिनीय अष्टाध्यायी की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें वैदिक और लौकिक सस्कृत के व्याकरण नियम हैं। इसकी उत्कृष्टता के कारण इससे पूर्व के सभी व्याकरण ग्रन्थ पठन-पाठन से बाहर होने के कारण लुप्तप्राय होगये।

पाणिनि की अष्टाध्यायी मे आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं (८×४=३२ पाद)। सब मिलाकर ३९७८ सूत्र हैं। नीचे दिए चित्र से पूरा विवरण उपलब्ध होजायेगा।
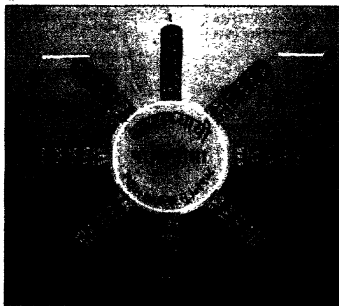
पाणिनि के सूत्रों पर कात्यायन ने वार्तिक बनाये और पतञ्जलि ने व्याकरण महाभाष्य की रचना की। महाभाष्य पर कैयट, नागेश भट्ट, भर्तृहरि, भटोजीदीक्षित आदि अनेक पण्डितो ने टीकायें लिखी हैं। आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) की प्रेरणा से मैंने सन् १९६० से १९६४ तक चार वर्ष तक विशेष परिश्रमपूर्वक सम्पादन करके कैयट की प्रदीप, नागेशभट्ट की प्रदीपोद्योत और विमर्श टिप्पणी सहित पांच जिल्दों मे सम्पूर्ण महाभाष्य का शुद्ध और सुन्दर प्रकाशन गुरुकुल झज्जर से करवाया था। वह आज भी उपलब्ध है। निरन्तर चार वर्ष तक परिश्रम करके सम्पूर्ण अष्टाध्यायी पर सस्कृत और हिन्दी दोनो भाषाओं में डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने **"अष्टाध्यायी-प्रवचनम्"** नाम से भाष्य लिखा है जिसे स्वामी ओमानन्द जी ने ६ जिल्दो मे प्रकाशित करवाया है। यह ग्रन्थ कम्प्यूटर द्वारा ऑफसेट मशीन पर आचार्य प्रिंटिग प्रेस मे ही छपा है। अष्टाध्यायी पढने-पढाने वाले जिज्ञासु इससे लाठा उठा सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पूर्व सस्कृत व्याकरण को आर्यभाषा मे छपवाने का प्रयास किया था, जो **वेदांगप्रकाश** के नाम से १४ भागो मे मिलता है। इससे पूर्व पण्डित लोग व्याकरण पर टीका-टिप्पणी भाष्य आदि सस्कृत भाषा मे ही करते थे। जो काशिका, पदमञ्जरी, न्यास, लघुकौमुदी, मध्यकौमुदी, सिद्धान्त कौमुदी, लघुशब्देन्दुशेखर वाक्यपदीयम् आदि के नाम से उपलब्ध हैं।

६ वेदाङ्गों मे व्याकरण वेदाग मुख्य माना जाता है--**"मुख व्याकरण स्मृतम्"**। **"प्रधान च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्, प्रधाने च कृतो यत्न: फलवान् भवति।"** महाभाष्यकार पतञ्जलि के इस वाक्य की पुष्टि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश और सस्कारविधि के **'पठन-पाठनविधि'** प्रकरण मे दृढतापूर्वक की है।

छान्दोग्योपनिषद् (७।१।२) मे व्याकरण को **'वेदाना वेदम्'** वेदो का भी वेद अर्थात् ज्ञानसाधन कहा है।

महाभारत शान्तिपर्व अध्याय २७० स्यूमरश्मि-कपिल सवाद मे लिखा है कि—

द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये शब्दब्रह्म पर च यत्।।१।।
शब्दब्रह्मणि निष्णात: परं ब्रह्माधिगच्छति।।२।।

ब्रह्म के दो रूप समझने चाहिए-(१) शब्दब्रह्म (वेद) और (२) परब्रह्म (सच्चिदानन्द परमात्मा)। जो व्यक्ति शब्दब्रह्म (व्याकरण) मे पारगत है वह परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। योगी भर्तृहरि ने भी वाक्यपदीय मे इसकी पुष्टि की है।

मैंने स्वयं अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करके इसका पाच वर्ष (१९४८ से १९५२ ई०) तक प्रतिदिन पाठ किया है व्याकरण अध्ययनकाल मे। अष्टाध्यायी क्या है और उसमें क्या है? यह तो उसके पढने-पढानेवाले ही भलीभाति अनुभव कर सकते हैं। मैंने संक्षिप्तसा परिचय लिखने का यत्न किया है।

अष्टाध्यायी से शब्द-ज्ञान के अतिरिक्त पाणिनिकालीन भारत का इतिहास-भूगोल, सामाजिक जीवन, आर्थिक दशा, शिक्षा और साहित्य, धर्मदर्शन, राज्यतन्त्र और शासन आदि की विशेष जानकारी के लिए डा० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित ग्रन्थ **'पाणिनिकालीन भारत'** पढिये और साथ ही पढिये डा० प्रभुदयाल अग्निहोत्री का ग्रन्थ **'पतञ्जलिकालीन भारत'**।

इनसे पाठक अष्टाध्यायी और महाभाष्य मे क्या है? यह विस्तार से जान सकेंगे।

—वेदव्रत शास्त्री

प्रबन्ध समिति का चुनाव

आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्दनगर कानपुर की प्रबन्ध समिति का चुनाव श्री मोहनलाल मकानी की अध्यक्षता मे दिनाक ११-११-२००१ को आर्यसमाज मन्दिर मे हुआ। सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गये।

अध्यक्ष-श्री त्रिलोकनाथ सूरी, उपाध्यक्ष-श्री सन्तोषपाल ग्रोवर, प्रबन्धक-श्री शिवकुमार आर्य, उपप्रबन्धक-श्रीमती कैलाश मोगा, कोषाध्यक्ष-श्री शुभकुमार वोहरा, अन्तरंग सदस्य-श्री मोहनलाल मकानी, श्रीमती दर्शना कपूर, श्री वीरेन्द्र मल्होत्रा।

पौने चार वर्ष की आयु में ही पाणिनीय अष्टाध्यायी कंठस्थ

वेग आर्य और ध्रुव आर्य

—अजितसिंह राठी

फरीदाबाद, १९ नवंबर। इसे करिश्मा ही कहा जा सकता है कि मात्र तीन वर्ष आठ माह २० दिन आयु के दो जुडवा भाइयों ने संस्कृत व्याकरण का वैदिक कालीन ग्रथ पाणिनीय अष्टाध्यायी पूरी तरह से कठस्थ कर लिया है। विशेष बात यह है कि दोनों बच्चों को अभी अक्षर ज्ञान नहीं है और उन्होंने श्रवणमात्र से ही यह असभव-सा प्रतीत होनेवाला काम कर डाला है। ये जुडवां बच्चे आजकल चर्चा का केंद्र बने हुए हैं। उनकी आश्चर्यजनक स्मरणशक्ति व सीखने की प्रतिभा का जिक्र उनके गुरु दीप्तीलाल शास्त्री के बिना अधूरा ही रहेगा।

फरीदाबाद सैक्टर-७ सी स्थित ८१९ मकान नबर में श्यामसुन्दर आर्य उनकी पत्नी डा० हरिंदर आर्य अपने जुडवा बच्चो वेग आर्य तथा ध्रुव आर्य के साथ रहते हैं। पेशे से वैज्ञानिक आर्य दपती ने डेढ वर्ष पूर्व टीवी पर 'लिम्का बुक रिकार्ड' कार्यक्रम मे पाणिनीय अष्टाध्यायी को कठस्थ किये हुए एक आठ वर्षीय बालक को देखा। यह आश्चर्यजनक कारनामा देखने के बाद आर्य दपती ने अपने बच्चो से इस रिकार्ड को ध्वस्त करवाने की सोची। उन्होने अपने जुडवा बच्चो वेग तथा ध्रुव को पाणिनीय अष्टाध्यायी कठस्थ करने के लिए बल्लभगढ के मलेरना निवासी दीप्तीलाल शास्त्री की मदद मागी। बस शास्त्री जी जुट गए तथा एक वर्ष मे अपने इस मिशन को अजाम दे दिया। इतिहास मे ऐसी उपलब्धि कम ही देखने को मिलती हैं, जैसी कि फरीदाबाद की इन बेहद प्रतिभाशाली जुडवा भाइयो ने प्राप्त कर ली है। ध्रुव आर्य और वेग आर्य ने वह कर दिखाया है जो कि बडे-बडे वेदानुरागी पडित नहीं कर पाते। पाणिनीय अष्टाध्यायी (सस्कृत व्याकरण का वैदिककालीन ग्रथ) को मात्र तीन वर्ष आठ माह २० दिन की आयु मे पूरी तरह से कठस्थ कर लेने का उदाहरण पहले कहीं देखने को नहीं मिलता। विशेष बात यह है कि इन दोनों बच्चो ने यह कठस्थीकरण बिना अक्षर ज्ञान के श्रवण मात्र से ही किया है। इससे पहले पाणिनीय अष्टाध्यायी के कठस्थीकरण का रिकार्ड 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड' मे एक बच्चे के नाम है। कठस्थीकरण के समय जिसकी उम्र लगभग आठ वर्ष १० माह थी।

उल्लेखनीय है कि पाणिनीय अष्टाध्यायी सस्कृत व्याकरण का प्राचीनतम एव विस्तृत ग्रथ है। यह ग्रथ महाभाष्य के अन्तर्गत आता है। जैसा कि इसके नाम से ही प्रतीत होता है, इसमे आठ अध्याय हैं और हर अध्याय के चार-चार उप-अध्याय हैं। इसमे कुल ४०१० सूत्र हैं, जिनका उच्चारण बेहद कठिन माना जाता है। इसलिए बडे से बडे विद्वान् के लिए इसे कठस्थ करना टेढी खीर है। हाल ही में दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय संत सम्मेलन में इन दोनों बच्चों को परीक्षा के तौर पर आमंत्रित किया गया था। कुछ विद्वानों ने बच्चों के सामने अधूरे सूत्र उच्चारण किये। जहां से विद्वानों ने सूत्र बोलना छोडा, बच्चे वहीं से शुरू होगये। संस्कृत के बडे-बडे विद्वान् इन बच्चों की असाधारण प्रतिभा को देखकर मुग्ध होगए। सम्मेलन मे पिता श्यामसुन्दर आर्य ने बच्चों से विद्वानों के चरणस्पर्श करने के लिए कहा तो विद्वानो ने उन्हें कोई महापुरुष बताकर चरणस्पर्श करवाने से इनकार कर दिया।

(साभार-अमर उजाला २०-११-२००१)

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के नाम से अपरिचित क्षेत्रों में वैदिक संस्कृति का प्रचार

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के वेदप्रचार कार्यक्रम के तहत न्यास की प्रचार मण्डली के प० रघुनाथसिह वेदभूषण तथा प० नौबतराम वानप्रस्थी ने मेवाड के आदिवासी ग्रामो में प्रथम बार दयानन्द का सन्देश भजनों एव प्रवचनों के माध्यम से प्रसारित किया। दिनाक २३ अक्तूबर से ०६ नवम्बर के पखवाडे मे उदयपुर एवं डूगरपुर जिलो के देवपुरा, धावडिया, पलोदडा, जावरमाइन्स, झाडोल, केजड, थाना, सराडा, चावण्ड, बिछीवाडा, डूंगरपुर, देवल, खेरवाडा एवं परसाद ग्रामो के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयो के अध्यापको एव छात्र-छात्राओ को वैदिक सस्कृति एवं दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जानकारी दी। कुछ ग्रामो के सार्वजनिक स्थानो पर यज्ञ एव भजनोपदेश आयोजित हुये। लगभग ६३९० व्यक्ति प्रचार से लाभान्वित हुये।

इस प्रचार अवधि मे वेदप्रचार चल वाहन से लगभग ३७००/- रुपये का आर्ष साहित्य का विक्रय हुआ। इन ग्रामो के ४९ पुरुष-महिलाओ ने वेदप्रचार मण्डल की सदस्यता ग्रहण कर श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास से अपना सबध स्थापित किया।

—स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती, अध्यक्ष

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में आर्यसमाज का योगदान

□ पं० शिवकरण दूबे 'वेदराही'

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने १० अप्रैल, १८७५ को सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार, समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना के जागरण के लिए वेद का आश्रय लिया। उन्होंने आर्यसमाज के नियम में वेद का पढना और पढाना आर्यो का परम धर्म है, का प्रतिपादन भी किया। स्वामी जी वैदिक संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। अत: प्रारम्भ मे अपने विचारों को सस्कृत भाषा के माध्यम से ही प्रकट करते थे। वे गुजरात के रहनेवाले थे। गृहत्याग के बाद लगभग ३५ वर्ष स्वामी जी ने ज्ञान की खोज मे इधर-उधर भ्रमण कर बिताए तथा जब वैदिक व्याकरण सूर्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती से विदा ली, उस समय वे ४१ वर्ष के थे। उसके सात वर्ष बाद १८७२ मे अपने प्रचारकार्य में वे बग भूमि पधारे। यहीं उनकी मुलाकात देवेन्द्रनाथ ठाकुर और उनके अनुयायी तथा ब्रह्मसमाज के नेता केशवचन्द्र सेन से हुई। हिन्दी जगत् के लिए यह प्रसग ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। स्वामी जी के सस्कृत भाषण सुनने के बाद केशव बाबू ने स्वामी जी को सुझाव दिया कि यदि आप अपने विचार पूरे देश मे फैलाना चाहते हैं तो आप अपने विचार हिन्दी भाषा मे दे। महर्षि दयानन्द ने उनके विचारो की दूरदर्शिता को समझा और धीरे-धीरे उन्होंने हिन्दी भाषण और लेखन करना प्रारम्भ किया। महर्षि दयानन्द हिन्दी को आर्यभाषा के नाम से अभिहित करते थे। महर्षि की दिव्यदृष्टि ने यह अनुभव किया कि यद्यपि वेद देववाणी में हैं तथापि युगो से जनता की बोलचाल की भाषा देश की जनभाषा ही रही है। अत: महर्षि ने सस्कृत वाड्मय मे निहित ज्ञानकोष को सर्वसाधारण की भाषा मे ही देने का महान् उद्योग प्रारम्भ किया। स्वामी जी इस तथ्य से पूर्णत अवगत थे कि भाषा ही सस्कृति की सवाहिका है तथा किसी भी देश की सस्कृति उस देश की भाषा द्वारा ही समग्रत अभिव्यक्त होती है।

हिन्दी भाषा का विकास सस्कृत से ही हुआ है। वह वैदिक सस्कृति के समस्त विचारों को बिना अर्थ संकोच के संवहन करती है। अत. वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति के पुनर्जागरण हेतु स्वामी जी ने हिन्दी का वरण किया और सत्यार्थप्रकाश जैसा अमर काव्य हिन्दी मे दिया। साथ ही ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, सस्कारविधि तथा अनेक पुस्तिकाए हिन्दी मे ही लिखी। यह हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा मे युगान्तकारी घटना थी।

स्वामी जी ने राष्ट्रीय एकता के लिए जिस नवजागरण का सूत्रपात किया वह ऐक्य भाषिक, सास्कृतिक तथा भारत की सामाजिक प्रकृति के अनुरूप था। उनका स्पष्ट अभिमत था एक धर्म, एक भाषा और लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियो का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहा भाषा भाव और भावना मे एकता आ जाए वहा सागर मे नदियो की भाति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं। हिन्दी का वरण, राष्ट्रीय सस्कृति के रक्षण, राष्ट्रीय एकता के सवर्द्धन की दिशा मे मील का पत्थर सिद्ध हुआ। स्वामी जी के द्वारा स्थापित क्रान्तिकारी सस्था ने हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। आर्यसमाज के विद्वानों ने प्राच्य विद्या का हिन्दी भाष्य, टीका, तर्जुमा करके उन्हे जनमानस के लिए सुलभ कर दिया। इससे न केवल हिन्दी प्राचीन वैदिक ज्ञान विरासत मे संवहन करके सस्कृति सेतु बन सकती अपितु सस्कृत ग्रन्थो मे निहित असख्य शब्दो को आत्मसात् कर हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा बन गई है। कल तक जो वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, दर्शन, महाभारत, सामान्य जन से दूर तथा अगम्य थे, आर्यसमाज ने उन्हें पण्डितों की पचायत के घेरे से मुक्त कर आम जनता के लिए ग्राह्य बना दिया। इस सम्बन्ध मे हिन्दी के प्रख्यात मनीषी श्री विष्णु प्रभाकर लिखते हैं हिन्दी मे वेदो की टीका एक अपूर्व देन है। वेदो को विद्वानो की मण्डली से निकालकर सर्वसाधारण की चीज बनाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही है। किसी भी मत की धर्म पुस्तके जिस भाषा मे होती हैं वह भाषा अत्यन्त गौरवमयी होती है। गुजराती होकर भी स्वामी दयानन्द ने यह गौरव हिन्दी को दिया। यहीं तक नहीं, उन्होने अपने स्थापित किए हुए आर्यसमाज के लिए यह उपनियम बना दिया कि प्रत्येक आर्य तथा आर्य सभासद् को आर्यभाषा (हिन्दी) और सस्कृत जाननी चाहिए। तब हम यह कह दे कि हिन्दी का प्रचार करनेवालो मे स्वामी दयानन्द का स्थान पहला है तो अत्युक्ति न होगी। आर्यसमाज का उद्भव भारतीय नवजागरण, राष्ट्रीय चेतना के विकास तथा समाज-सुधार की दिशा में एक महनीय घटना थी। नवभारत के निर्माण मे आर्यसमाज का अनुपम योगदान है। इतना ही नहीं, स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के प्रभाव से हिन्दी साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। हिन्दी पत्रकारिता की दिशा में भी वृद्धि हुई। आर्यसमाज का पत्र सद्धर्म प्रचारक हिन्दी मे निकलता था। इससे पजाब मे हिन्दी का प्रचार बढा। सन्तराम बीए ने स्वय लिखा है कि उन्हे हिन्दी सीखने की इस वयोवृद्ध क्रान्तिकारी लेखक और आर्य धर्म के प्रचारक को महात्मा गाधी पुरस्कार से भोपाल मे तथा पंजाब ने राज्य के श्रेष्ठ हिन्दी विद्वान् के रूप मे उन्हे चण्डीगढ में सम्मानित किया। उन्होंने विभिन्न विषयो पर लगभग शताधिक हिन्दी पुस्तके और लेख लिखे हैं। महान् क्रान्तिकारी एव स्वतत्रता सग्राम मे हुतात्मा शहीद गणेश शकर विद्यार्थी, 'वैदिक गणेश' (१७-६-८९) मे लिखते हैं स्वामी दयानन्द, आर्यसमाज और गुरुकुलो ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने मे बडा काम किया। राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनो से राष्ट्रभाषा और राष्ट्र लिपि की आवश्यकता अनुभव होने लगी।

स्वतन्त्रता के पूर्व हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि मे पजाब का सबसे अधिक योगदान रहा है पजाब मे आर्यसमाज का प्रभाव भी बहुत था। आर्यसमाज के कारण वहा हिन्दी का जो प्रचार हुआ उसने वहा की जनता को हिन्दी लेखन की ओर प्रेरित किया। हिन्दी के प्रमुख कथाकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन, यशपाल, मोहन राकेश तथा श्रीमती पाणिक्कर इसी प्रदेश की देन है। हिन्दी के मूर्धन्य पत्रकार श्री बालमुकुन्द गुप्त तथा माधव प्रसाद मिश्र भी पंजाबी ही थे, क्योकि उन दिनो हरयाणा, पजाब प्रदेश में ही था। महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने जहा अपने सद्धर्म प्रचारक नामक पत्र के माध्यम से हिन्दी का बिरवा रोपा वहीं गुरुकुल कागडी जैसी सस्था की स्थापना करके हिन्दी के प्रख्यात लेखक पत्रकार प्रदान किए। गुरुकुल कागडी मे दीक्षित तथा प्रशिक्षित प्रो० इन्द्रदेव विद्यावाचस्पति, सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, सत्यदेव विद्यालकार, धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, जयदेव शर्मा जैसे अनेक लेखक और पत्रकार पजाबी भाषी थे। महात्मा हसराज, लाला लाजपतराय और लाला देवराज, डी०ए०वी० कालेज, नेशनल कालेज और कन्या महाविद्यालय आदि शिक्षा सस्थाओ का भी राष्ट्रीय जागरण के साथ हिन्दी के प्रचार प्रसार मे प्रचुर योगदान रहा। इन सस्थाओ से प्रशिक्षित लोगो मे आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, आचार्य रामदेव, डॉ० रघुवीर आदि ने अपनी सर्जना के माध्यम से हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया। महात्मा आनन्द स्वामी (खुशहालचन्द्र) ने अनेक वर्ष लाहौर और जालन्धर से हिन्दी मिलाप दैनिक का प्रकाशन किया। हिन्दी के साहित्य को विशाल सागर का स्वरूप प्रदान करने मे आर्यसमाज के अनेक विद्वानो ने सस्कृत ग्रन्थो की टीकाए, भाष्य किये। दिल्ली के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री राजपालसिह शास्त्री ने अनेक दुर्लभ ग्रन्थो को हिन्दी भाषा मे प्रकाशित कर आर्यजगत् और जनसाधारण के लिए साहित्य तैयार किया है और कर रहे हैं। आप हिन्दी जगत् मे प्रशसनीय लेखक हैं। प्रसिद्ध रसायनशास्त्री तथा वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश ने हिन्दी कोशो की दिशा मे कार्य किया है और भौतिकी रसायन आदि की वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण किया। आर्यसमाज के प्रचारार्थ कुछ पत्र-पत्रिकाए हिन्दी मे ही निकलती हैं जिनमे सार्वदेशिक, सर्वहितकारी, सुधारक, हिन्दी मासिक पत्र, आर्य सेवक, वेदवाणी, दयानन्द सन्देश आदि प्रमुख हैं। आर्यसमाज ने सस्कृत साहित्य को हिन्दी मे अनूदित कर जनसामान्य के लिए सुलभ व बोधगम्य बनाया है। आज भी हिन्दी को और अधिक प्रचारित करने मे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सस्था कृतसकल्प है।

***

आर्यसमाज स्थापना की १२५वीं जयन्ती पर विशेष—

आर्यसमाज क्या करे ?

❑ महावीरसिंह प्राध्यापक, २१/१२२७ प्रेमनगर, रोहतक

क्रान्तिदूत देव दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज को चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सवत् २०५८ को १२५ वर्ष पूर्ण होगए हैं। इन वर्षों मे ही आर्यसमाज जन्मा, बढा, चढा और आज उसमें वह तेज दिखाई नहीं दे रहा है जो पहले था। यह ठीक है कि सस्थाओ के रूप मे देश-विदेश में आर्यसमाज ने विस्तार पाया है। आर्यसमाज की इकाइया भी बढी हैं लेकिन विचारणीय यह है कि आर्यसमाज के उद्देश्य पूर्ति मे कितनी सफलता मिली है ? क्या भारतीय शिक्षाप्रणाली में आर्यसमाज वाञ्छित परिवर्तन करा पाया ? क्या भारत के घर-घर मे वेदाध्ययन व पच महायज्ञ होने लगे हैं ? क्या देश मे या आर्यजनो मे वर्णाश्रम व्यवस्था स्थापित होगई ? क्या भारत से अन्धविश्वास समाप्त होगया ? क्या देश का हर व्यक्ति शिक्षित, स्वस्थ व आत्मनिर्भर बन गया ? क्या देश से जात-पात समाप्त होगई ? क्या नशाबदी होगई ? क्या गोबध बन्द होगया ? क्या मासाहार समाप्त होगया ? क्या सह-शिक्षा नहीं रही ? क्या स्वदेशीपन व सुराज आगए ? क्या देश एकता, विश्व एकता व वैदिक शिक्षा की मूल सस्कृत भाषा की अनिवार्यता शिक्षा मे होगई ? क्या भारतीय शिक्षा से अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त होगई ? क्या भारत राज्य का कोई निष्पादन भारत की राष्ट्रभाषा में हो रहा है ? क्या आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के अनुसार आर्यसमाज ने अपनी सांगठनिक इकाइयों का विभाजन धर्मार्यसभा, विद्यार्यसभा, राजार्यसभा के रूप में सुचारु से विधिवत् संचालित कर दिया ? क्या ऋषि दयानन्द के अनुसार देश की राजनीति संचालन का आर्यसमाज ने बीडा उठाया ? क्या मनु व चाणक्य के अनुसार देश का शासन चल रहा है ? क्या अश्लीलता का नग्न नृत्य आर्यसमाज रोक पाया ? क्या आर्यसंस्थाएं ऋषि दयानन्द के अनुसार सर्वांगपूर्ण पाठ्यक्रम बनाकर शिक्षा दे रही हैं ? अधिक क्या कहे ? क्या आर्यराष्ट्र का निर्माण होगया ? मैं समझता हूं कि इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' मे ही दिया जासकता है।

एक ओर १२५ वर्ष का समय, दूसरी ओर वैदिक सिद्धान्तो की सार्वभौमिकता और तीसरी ओर आर्यसमाज के सगठन की हजारो सस्थाएं, पत्र-पत्रिकाए, हजारो विद्वान्, लाखो सदस्यगण, कार्यकर्ता व प्रचारकों की सेना के होते हुए भी सफलता नगण्य !!! आर्यसमाज की सुस्ती व ढुलमुल नेतृत्व के कारण ही अन्य स्वार्थी संगठन आर्यसमाज व उसके कार्यकर्ताओं के सहारे से ही राजनैतिक मोर्चे जमाने में सफल होकर भी देश को गलत दिशा में जाने से नहीं रोक पा रहे हैं बल्कि देश को भाड में झोंककर खुद पद व पैसे बटोरने में लगे हुए हैं लेकिन आर्यसमाज अपने श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को ही संगठन में नहीं बचा पाया। उन्हें संगठन का विस्तार कर संगठन में योग्यतानुसार कार्य व प्रतिष्ठा देकर नहीं संजो पाया, फलत· अनेक कार्यकर्ता छोटी-मोटी त्रुटियों के कारण, तो कोई कार्य योजना के अभाव मे निराश होकर अन्य संगठनों को सुदृढ करने मे लगे हुए हैं और वे सगठन आर्यसमाज के मूल कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता का भरपूर लाभ उठाकर आगे बढ रहे हैं। लेकिन आर्यसमाज सुदृढ सगठन की बारीकियो से बेखबर, फूट, मुकदमेबाजी और हताशा में घायल शेर की तरह सांसे खींच रहा है। स्वतत्रता पूर्व के आदोलनो मे अकेले ८५ प्रतिशत तक भागीदारी रखनेवाला आर्यसमाज वास्तव मे आज इतना कुण्ठित क्यों होगया है ? यह निश्चय ही विचारणीय है, क्योंकि आर्यसमाज के उत्थान में देश का उत्थान छिपा हुआ है। इसलिए हमें विना देर किये वे कारण ढूंढकर दूर करने होंगे जिनसे आर्यसमाज की यह तंद्रा टूट सके।

वे कारण निम्नलिखित हो सकते हैं जिन्हे दूर किया जाना चाहिए—

आपस की फूट—

आज सार्वदेशिक स्तर पर तथा प्रान्तीय स्तर पर भी अनेक प्रान्तों में दो-दो तीन-तीन सभाएं समानान्तर चल रही हैं। मुकदमेबाजी में समय, शक्ति व धन का अपव्यय हो रहा है। तप पूत स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व मे सभी झगडे दूर करने का प्रयत्न होना चाहिए। निष्पक्ष सज्जन व साधु-सन्यासी मिलकर सार्वदेशिक व प्रान्तीय झगड़े दूर कराने में पहल कर सकते हैं। उन्हे आगे आकर यह कार्य करना चाहिए। सभी सज्जन व कार्यकर्ता इस प्रकार का प्रयत्न कर एकता के लिए वातावरण बनाएं तो कुछ हल निकल सकता है। आर्य नाम का प्रयोग कर अनार्य कार्य करने की छूट नहीं होनी चाहिए। (क्रमशः)

ऋषिवर तुम्हारे चरणों में

आर्यावर्त के ऋषि तुम्हारी, जय-जय का हो गुणगान।
'टकारा' के महासत के, चरणो मे मेरा प्रणाम।।१।।
सागर की लहरे करती, गरज तुम्हारा ही स्वागत।
आज तुम्हारी महाकृपा से, है यह मस्तक श्रद्धावनत।।२।।
पाखण्डो की नींव हिला दी, रूढिवाद का कर सहार।
मिथ्यासी परिपूर्ण मान्यताओ पर, जमकर किया प्रहार।।३।।
जीव-ब्रह्म का भेद बताया, क्या जड है, क्या चैतन्य।
पाप-पुण्य का रहस्य बताकर, मानव का कर दिया उत्थान।
'गोकरुणानिधि' लिखी ऋषि ने, घर-घर में होवे विस्तार।
दूध-दही घृत मक्खन का, भारत भरा रहे भण्डार।।४।।
केवल की है यही वन्दना, ऋषिवर का हो पुन अवतार।
स्वर्ग बने फिर भारत प्यारा, गोहत्या का कलक उतार।।५।।
आर्यावर्त के ऋषि तुम्हारी, जय-जय का हो गुणगान।
'टकारा' के महासत के, चरणो मे मेरा प्रणाम।।
गुरुवर दयानन्द-सा, मिलना कठिन जहान।
शिष्य जिन्हो के जो बने, श्रद्धानन्द महान।।

—स्वामी केवलानन्द सरस्वती

सप्तम सत्यार्थप्रकाश महोत्सव, उदयपुर

सभी आर्यों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हर बार की तरह इस बार भी सप्तम सत्यार्थप्रकाश महोत्सव पवित्र नवलखा महल, उदयपुर में दिनाक २६ फरवरी २००२ से २८ फरवरी २००२ में आयोज्य है, जिसमे देश के कोने-कोने से हजारों आर्यजनों की उपस्थिति अपेक्षित है। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान्, विदुषियां व भजनोपदेशक इस अवसर पर पधारेंगे। आपसे अधिक से अधिक संख्या में पधाने का अनुरोध है।

प्रमुख आकर्षण .-सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, महिला जागृति सम्मेलन, महर्षि दयानन्द समूहगान प्रतियोगिता, वेद सम्मेलन, भजन सध्या आदि।

कृपया अपने आगमन की सूचना अग्रिम रूप से अवश्य देवें।

निवेदक

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती — अध्यक्ष
गोपीलाल एरन — मंत्री

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर

शोक सन्देश

बडे दुःखी हृदय के साथ सूचित किया जाता है कि महाशय सुलतानसिह आर्य काकडौली सरदारा का अभी आठ दिन पूर्व स्वर्गवास होगया। आप दृढ़ विचारवान् कर्मठ एव स्वाध्यायशील आर्य थे। कन्या गुरुकुल पंचगाव (भिवानी) के पुनरुद्धार में एवं संचालन मे आपका प्रमुख योगदान था।

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली में आपकी दृढ आस्था थी। अत एव अपनी चार-पाच पोतियों को कन्या गुरुकुल नरेला एवं कन्या गुरुकुल पंचगांव में आर्षपाठविधि के माध्यम से योग्य स्नातिका बनाया। योगमुनि जी के सद्य: स्वर्गवास के बाद कन्या गुरुकुल पंचगांव के लिए यह दूसरा वज्राघात है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर शोकसंतप्त परिवार को शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, सभामंत्री

आर्यसमाज के प्रेरणास्रोत श्री देवीदास आर्य दिवंगत

कानपुर। महान् महिला उद्धारक, प्रसिद्ध समाजसेवी, आर्यनेता श्री देवीदास आर्य को खोकर कानपुर में आर्यसमाज की अपूरणीय हानि हुई है। २५ अक्तूबर २००१ को श्री आर्य की हृदयगति रुक जाने से उनके निवास पर देहान्त होगया। पूरा कानपुर आज उनके बिना सूना लग रहा है। २८ अक्तूबर २००१ को कानपुर में उनके शान्तियज्ञ मे उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री राजनाथसिह, उ०प्र० के नगर विकासमत्री लालजी टंडन, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैलाशनाथसिह कई संसद् सदस्यो, विधायकों सहित सैकड़ो सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्य सस्थाओं द्वारा संवेदनाएं व्यक्त की गई। शान्तियज्ञ लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रो० डा० शान्तिदेव बाला ने सम्पन्न कराया।

प्रबल आत्मबल के धनी, ईश्वर-विश्वासी, निर्भीक, श्री देवीदास आर्य वैदिक धर्म के क्रियात्मक स्वरूप की साक्षात् मूर्ति थे। उन्होने व्यावहारिक जीवन मे विभिन्न पहलुओं पर अपनी अमिट छाप छोडी। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री राजनाथसिंह ने कहा कि हम सभी ने सामाजिक सेवा का जीवन्त आदर्श खो दिया है, सेवा उनका जीवन धर्म था।

श्री आर्य ने अपने निजी संसाधनो से लगभग ४००० महिलाओ एव कन्याओ को असामाजिक तत्त्वों तथा वेश्यालयों के चुगल से मुक्त कराया एव सभ्य समाज मे पुनर्वासित किया। ६०० से अधिक निराश्रित निर्धन एव उत्पीडित कन्याओं का विवाह निजी ससाधनों से स्वय पिता बनकर कन्यादान करके कराया। २००० से अधिक असहाय, निराश्रित एव निर्धन विधवाओ, वृद्धो-वृद्धाओ के जीवनयापन हेतु सरकार से पेंशन का प्रबन्ध कराया। चार हजार से अधिक विधर्मियों को वैदिक धर्म मे प्रवेश कराया जिसमें पादरी, मौलवी और इमाम भी हैं।

आर्य जी आर्य कन्या इण्टर कालेज के सस्थापक, प्रबन्धक, अखिल भारतीय सिन्धी आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, नारी सेवा सस्थान के अध्यक्ष, उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपप्रधान, उ०प्र० विद्यालय प्रबन्धक महासभा के अध्यक्ष, आर्यसमाज गोविन्दनगर के संस्थापक अध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षण समिति के पूर्व महामत्री, श्री मुनि हिन्दू इण्टर कालेज गोविन्दनगर के सस्थापक थे।

श्री देवीदास आर्य स्वतत्रता संग्राम सेनानी, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित, उत्तरप्रदेश रत्न से विभूषित थे। समय-समय पर प्रदेश एवं देश की विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक एव सास्कृतिक संस्थाओ ने आपके अभिनन्दन समारोह आयोजित कर कृतज्ञता ज्ञापित की। उनमे प्रमुख रूप से लायन्स क्लब, रोटरी क्लब, विश्व हिन्दू परिषद्, सिधी सघ, सनातन धर्म, आर्यसमाज तथा विभिन्न नगर महापालिकायें हैं। श्री आर्य के अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन उ०प्र० विधान सभा अध्यक्ष श्री केसरीनाथ त्रिपाठी द्वारा कुछ समय पूर्व किया गया था।

श्री देवीदास आर्य के दिवगत होने से उत्तरप्रदेश मे आर्यसमाज के एक युग का अन्त हो गया है। आर्यसमाज की एक अपूरणीय क्षति हुई है। कानपुर के सभी बाजार उनके दुःखद समाचार सुनकर स्वत ही बन्द होगये।

—बालगोविन्द आर्य, मंत्री

चुनाव आर्यसमाज, गोविन्दनगर, कानपुर

प्रधान श्री देवीदास आर्य के निधन से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति हेतु आर्यसमाज मन्दिर गोविन्दनगर के सभागार मे श्री त्रिलोकनाथ सूरी की अध्यक्षता में आर्यसमाज गोविन्दनगर की कार्यकारिणी निम्नवत् घोषित की गई, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

प्रधान-श्री शुभकुमार वोहरा, उपप्रधान-श्री त्रिलोकनाथ सूरी, श्री सतोष पाल, श्री कृष्णलाल धमीजा, मत्री-श्री बालगोविन्द आर्य, उपमत्री-श्री शिवकुमार आर्य, श्री प्रकाशवीर आर्य, श्री मदनलाल चावला, कोषाध्यक्ष-श्री वीरेंद्रकुमार मल्होत्रा, स्टोर इचार्ज-श्री नदलाल सचदेव, पुस्तकाध्यक्ष-श्री राजेश चावला, लेखानिरीक्षक-श्री श्यामसुन्दर दुआ, अन्तरग सदस्य-श्री मोहनलाल मकानी, श्री जाति भूषण, श्री रामलाल सेवक, श्री त्रिभुवन नारायण वर्मा, श्री प्रमोद आर्य, श्री प्रकाशवीर आर्य, श्री शम्मी कपूर, श्री अनिल चोपडा।

—बालगोविन्द आर्य, मत्री आर्यसमाज गोविन्दनगर, कानुपर

महर्षि दयानन्द मानवता के सच्चे पुजारी थे

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह

कानपुर। आर्य कन्या इण्टर कालेज, गोविन्दनगर के तत्वावधान मे दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह कालेज की प्रबध समिति के अध्यक्ष त्रिलोकनाथ सूरी की अध्यक्षता मे मनाया गया।

समारोह के प्रारम्भ मे चार हजार से अधिक छात्राओ ने वेदमत्रो का उच्चारण कर तथा विभिन्न गीत-सगीत और भाषणो से महर्षि को श्रद्धाजलि भेट की।

कालेज के नवनिर्वाचित प्रबधक श्री शिवकुमार आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द मानवता के सच्चे पुजारी थे महर्षि के हृदय मे उस व्यक्ति के प्रति भी दया की भावना थी, जिसने उनको जहर दिया था। महर्षि द्वारा उसे ५००/- रु० देकर नेपाल भाग जाने की सलाह देना वास्तव मे दया की भावना की पराकाष्ठा है।

बिहार से पधारी सुश्री ऋचा ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने नारियो के गौरव को बढाने का जो महान् कार्य किया है उसके लिये नारिया सदैव उनकी ऋणी रहेगी। महर्षि ने कहा कि जहा नारियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते हैं। कुमारी ऋचा ने आर्य कन्या इण्टर कालेज के सस्थापक पूर्व प्रबधक श्री देवीदास आर्य का स्मरण करते हुए कहा कि वे महान् महिला उद्धारक थे, उन्होने आर्य कन्या इण्टर कालेज की स्थापना करके नारियो की बडी सेवा की है।

समारोह मे प्रमुख रूप से सर्वश्री शुभकुमार बोहरा (प्रधान आर्यसमाज), बालगोविन्द आर्य, वीरेद्र मल्होत्रा, जातिभूषण श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोगा, सरोज अवस्थी, सतोष अरोडा, चन्द्रकान्ता गेरा, राज सूरी आदि भी उपस्थित थे।

समारोह का सचालन श्रीमती राजजीत पाल ने किया तथा प्रधानाचार्या श्रीमती वीनस शर्मा ने धन्यवाद दिया।

—कार्यालय प्रमुख

मार्ग वेद का

टेक—मार्ग वेद का छोड्या जब से, म्हारी होगी बुरी गति सै।
सार्वभौम का चक्रवर्ती आज कीमत एक रति सै।

१ २५ साल तक रह ब्रह्मचारी, करते थे विद्याग्रहण यहा।
चार कोस पै न्यारे-न्यारे, पढते थे भाई-बहन यहा।
सुरग बराबर बीत्या करते, गृहस्थी मे दिन रैन यहा।
फिर वानप्रस्थ, सन्यास आश्रम, थी जीवन की लैन यहा।
आज ७० साल का बूढा घर मे, होरा गधा लति सै।।

२ बूढे बूढी घर से काढे, होते फिरे बिरान यहा।
सरवण जैसे ६८ तीरथ, ठाया फिरे नुहाण यहा।
सौ-सौ साल के मुर्दे आवे, घर बैठ्या न खाण यहा।
अम्रीका तलवे चाट्या करता, जब चले अर्जुन के बाण यहा।
महाभारत पीछे भारत पे फिर चढगी साढ सती सै।

३ झूठे बनगे गुरु गडरिये, खोल लिए उद्योग यहा।
बना पत्थर के राम और कृष्ण लाने लग गए भोग यहा।
धर्म कर्म मे फसे भरम मे, कति बिचलगे लोग यहा।
आध्या मे बन काने स्याणे, काटण लाग रोग यहा।
काटण और कटवावण वाला, बिल्कुल मूढ मति सै।

४ शर्म सभ्यता जति सती की कति टूटगी ड्योल यहा।
बटण दबाते ही टीवी का देखो कोलम कौल यहा।
ब्वाय फरैड और गर्ल फरैंड के, देखो छिकमा टोल यहा।
कलबा मे फेर बन्द बल्बा का ५ मिनट का रोल यहा।
आख पाड रहा देख ओमदत्त किसका कौन पति सै।।

—ओमदत्त नैन आर्य, सूबेदार मेजर (रिटायर्ड)
बतरा कालोनी पानीपत- ३२ [illegible]

भगवान् उसे प्रदान करे....

—नाज सोनीपती

खाक का पुतला होकर इन्सा क्यो इतना अभिमान करे।
अकड-अकड कर चलना जिसका जग को भी हैरान करे।
पल-पल क्षण-क्षण, साय-प्रात जो ईश्वर गुणगान करे।
सदा सलामत सुखी रहे, हरदम जग में भगवान् करे।
मात-पिता और गुरुजनो का जो आदर सम्मान करे।
सद्‌बुद्धि और शान्तचित्त भगवान् उसे प्रदान करे।
मानव वह सच्चा मानव है, सबका जो कल्याण करे।
इन्सानो के काम आए और तन-मन-धन कुर्बान करे।
शत-प्रतिशत यह बात ठीक है, इसमे कुछ सन्देह नही।
'प्यार सजाता है गुलशन को और नफ़रत वीरान करे'।
मर्द यदि है निडर मर्द तो मुश्किल मे घबराए क्यों ?
मुश्किल आए उस पर कोई, खुद मुश्किल आसान करे।
सच्चाई का दिलदादा हो जो व्यक्ति, सर्वोत्तम है।
कुफ्र की बातो को जो छोडे और पैदा ईमान करे।
नाम उसी का भी दुनिया मे सुर्ख-रू हो सकता है।
देश धर्म और कौम की खातिर, जो भी जीवनदान करे।
फर्ज को फर्ज समझकर अपना उसको खूब निभाता हो।
नाज है मुझको 'नाज' उसी पर जो भारत-उत्थान करे।

बुलबुला

पलभर की जिन्दगी पे भी नाजॉ है बुलबुला।
पानी से उठा इस तरह से नाचता हुआ।।
जैसे कि मिल गई हों दो जहां की नेमते।
झट उठ गया जहा से वह, जिन्दा न रह सका।।

जीवन

जलवे हजार देखे हैं, रगीन ख्वाब मे।
चुधिया गई है जिसकी आब-ओ-ताब मे।।
मकसद न जीस्त का ऐ नाज पूरा न हो सका।
जीवन गुजर गया है, सवाल-ओ-जवाब में।।

ओ३म्

विशाल आर्य महासम्मेलन

९ दिसम्बर २००१ प्रात: १० बजे से
स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम,
३७०५, अर्बन एस्टेट, जीन्द

अध्यक्ष **स्वामी ओ३मानन्द,** पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
मुख्य अतिथि **स्वामी इन्द्रवेश** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
मुख्य वक्ता **स्वामी अग्निवेश** कार्यकर्त्ता प्रधान सार्वदेशिक सभा, **प्रो० कैलाशनाथ सिंह** नवनिर्वाचित प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, **सत्यव्रत जी सामवेदी** जयपुर, **प्रो० शेरसिंह** उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, **जगवीरसिंह एडवोकेट, हरिसिंह सैनी** हिसार।

वक्ता **स्वामी गोरक्षानन्द, चौ० सूबेसिह, प्रो० सत्यवीर शास्त्री, आचार्य विजयपाल, उमेदसिह शर्मा, आचार्या कन्या गुरुकुल मोरमाजरा, बहन कलावती, रामकुमार आर्य, आचार्य सन्तराम, जगदीश सरपंच, रामनिवास यादव, किशनचन्द सैनी, जगदीश सींवर, प्रिं० लाभसिंह, धारीसिंह कादियान, चौ० बारूराम उमरा, चौ० बारूराम छोत, मा० प्रतापसिंह, प्रिं० आजादसिंह, प्रेमवती आर्या, दर्शनसिह कैथल, सहदेव बेधड़क, पं० चन्द्रभान, कुलदीप आर्य, रामकुमार आर्य।**

व्यायाम प्रदर्शन **गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो द्वारा।**

सयोजक : **रामधारी शास्त्री** उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
निवेदक **चौ० देशराज,** प्रधान वेदप्रचार मण्डल, जीन्द

महर्षि दयानन्द सन्देश

ऋग्वेद मे ऋषि उसे कहा गया है, जो मनुष्यमात्र का होता है हितकारी।
परोपकार को लक्ष्य बनाकर, जीवनशैली को बनाता है मंगलकारी।
प्रभु भी उसके प्रिय सखा बनकर, सुख-दु:ख मे साथ निभाते हैं।
फिर यही प्रभु प्रेमी अन्तराल में, परमात्मा की अनुभूति करते-करवाते हैं।
ऐसे ही प्रतिभाशाली विभूतियों की, पुण्य-तिथिया हम श्रद्धा-मान से मनाते हैं।
उनमें से परम प्रिय महर्षि दयानन्द की, गौरव-गाथा की याद दिलाते हैं।
महर्षि भारतीय सस्कृति के गौरव युगपुरुष व सत्यज्ञान की पहचान थे।
वह अडिग-निश्चल अटल हिमालय की तरह शक्तिमान थे।
अपनी दिव्य-शक्ति से देते रहे जन-गण को वैदिक सन्देश।
वैदिक सन्देश की प्रेरणा से ही हर पीढी सत्यज्ञान के मार्ग मे कर रही है प्रवेश।
महर्षि दयानन्द का सन्देश था, श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा व सम्मान में सदा देते रहो साथ।
परन्तु दुष्ट जनों की दुष्टता में कभी भी न बढाओ अपना हाथ।
देवता तब-तब बढते हैं जब उनका साथ देते हैं मानव।
राक्षस तब बढते हैं जब मानव उनके साथ मिलकर बन जाते हैं दानव।
फिर दानवों की भयकर दुष्टता से फैल जाती है निराशा व अशान्ति।
परन्तु देव बन्धुओं के उपकारो से समाज मे छा जाती है सुख-शान्ति।
उपकार करना आर्यसमाज का सर्वप्रथम उद्देश्य है।
वेद भी मनुष्य बनने के लिये सत्य-धर्म का बार-बार देते सन्देश हैं।
निस्सन्देह सत्य-धर्म ही जीवन का लक्ष्य है ऋषि की गाथा ऐसे सन्देश सुना जाती है।
फिर ऐसी दिव्य सन्देश की कथाए कल्याणमयी स्मृति बन जाती है।

सचमुच धन्य है वह

जो स्वयं क्रान्तिमान शोभनीय बनकर ज्ञान के विकास पथ पर चलते-चलाते हैं।
फिर प्रभु की शक्ति भक्ति से अलौकिक प्रकाश फैलाकर धन्य से सुधन्य हो जाते हैं।

—कृष्णा चौधरी, ९०९ सैक्टर-१६, पंचकूला (हरयाणा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७८०१) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ९३, १०२
पंजीकरण संख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ३ ७ दिसम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

—यशपाल आचार्य—

१ दिसम्बर २००१ को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय प० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुई। सबसे प्रथम ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना के आठ मन्त्रों से ईश प्रार्थना की गई। गत चार महीने से चले विवाद से सभी आर्यजन बहुत खिन्न थे, आर्यसमाज मे जो निराशा छाई थी, आज उसके विपरीत सभा में बहुत खुशी का वातावरण था, आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ताओ मे आज मजबूत एकता देखते ही बनती थी। सभी कार्यकर्त्ताओ ने सर्वसम्मति से पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज मे पूरा विश्वास व्यक्त किया, सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने सभाप्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के प्रति अपनी निष्ठा और विश्वास व्यक्त करते हुए मिलकर काम करने का संकल्प लिया। स्वामी कर्मपाल जी ने कहा कि आज आर्यसमाज मे स्वामी ओमानन्द जी ही एक ऐसे आदर्श हैं जिनका नेतृत्व सबको स्वीकार्य है, और ये जिसको जो भी कार्य सौंपेंगे हम सबको वह मजूर है। [illegible] को स्वीकार करते हुये स्वामी जी ने इस विवाद का हल निकाल दिया, यह हम सभी का सौभाग्य है।

इसी सभा मे स्वामी [illegible] जी ने अपने विचार [illegible] हुये कहा कि आज को [illegible] बडा खुशी का है जो सभी मत[illegible] भुलाकर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के प्रति आस्था प्रकट कर रहे हैं, हमने पहले ही स्वामी ओमानन्द जी को त्यागपत्र देकर इस विवाद को शान्त करने के लिये प्रार्थना की थी तथा सभा की नई कार्यकारिणी बनाने के लिये भी स्वामी जी को पूरे अधिकार दिये थे। उनका निर्णय हम सभी को स्वीकार्य है।

प्रो० शेरसिह जी ने भी नवयुवको को आगे आकर कार्य करने के लिये प्रेरित किया तथा स्वामी जी के प्रति आज की सभा मे सर्वसम्मति से जो विश्वास व्यक्त किया उसका धन्यवाद किया तथा सभी से आग्रह किया कि भविष्य मे इस प्रकार के विवाद की पुनरावृत्ति न हो।

भगत मगतूराम जी ने भी आज के वातावरण में कुछ सवाल उठाये, जिनका सभी वक्ताओं ने यह कहते हुये जवाब दिया कि आज आर्यसमाज में एकता की आवश्यकता है, लोगो में विश्वास बहाल किया जाये, आज भी स्वामी ओमानन्द जी ही एकमात्र ऐसे नेता हैं जिनके नेतृत्व में आर्यसमाज संगठित होकर काम कर सकता है।

आचार्य ऋषिपाल जी हिन्दी संस्कृत विद्यालय चरखीदादरी ने भी कहा कि स्वामी ओमानन्द जी से ही हम रोशनी लेकर आर्यसमाज के सगठन को मजबूत कर सकते हैं। श्री यशवीर जी आर्य बोहर ने भी स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व मे आस्था व्यक्त करते हुये नौजवानों को काम करने का अवसर देने को कहा। श्री हरेन्द्र जी पूर्व प्रधान हुमायूपुर ने सभी विवादो को समाप्त करके एकता का परिचय देने की बात कही और भगत मंगतूराम जी से भी कहा कि वे ओमानन्द जी के नेतृत्व में आस्था प्रकट करे।

श्री सुरेन्द्रसिह शास्त्री गोहाना ने कहा कि आज हम सबको हरयाणा आर्यसमाज के सगठन को मजबूत बनाना है, और वह स्वामी ओमनन्द जी के नेतृत्व मे सफल हो सकता है, आज से ही हम अपने सभी विवादो को समाप्त करके स्वामी जी मे आस्था प्रकट करते हैं। श्री जयसिह ठेकेदार गोहाना ने कहा कि आज आर्यसमाज के सगठन मे विवादों से बहुत कमी आगई। आज हम अपने सभी स्वार्थो से ऊपर उठकर स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में आर्यसमाज को मजबूत बनाये। श्री बलवीरसिह शास्त्री भैंसवाल ने भी कहा कि आज का दिन आर्यसमाज के उज्ज्वल भविष्य का है। मैं समझता हू आज की एकता पहले से मजबूत होकर निखरेगी। डा० रणधीरसिह सागवान सिरसा ने भी आज के वातावरण पर बहुत खुशी जाहिर की और कहा कि स्वामी ओमानन्द जो भी निर्णय करेगे, वह हमे पूरी तरह स्वीकार हैं। इस तरह आज की सभा मे सभी कार्यकर्त्ताओ ने सर्वसम्मति से स्वामी ओमानन्द जी को अधिकार दिया कि वे अन्तरंग सभा का पुनर्गठन करे, और हम सभी मिलकर उनके साथ है। उनके आदेश का सभी पालन करेगे।

स्वामी ओमानन्द जी की आर्यजनता से एकता की अपील

१ दिसम्बर २००१ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बैठक मे पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने अपनी हृदय की वेदना प्रकट करते हुए सभी आर्यजनो से मिलकर काम करने की अपील की और कहा कि गत चार महीने से चले आरहे विवाद से आर्यसमाज को बहुत धक्का पहुचा है। सभा कार्यालय मे पुलिस का पहरा अपमानजनक था। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, नित्यानन्द आदि के तप से हम सभी ने मिलकर हरयाणा मे आर्यसमाज के सगठन को खडा किया था, स्वामी श्रद्धानन्द व प० लेखराम के बलिदानो से सिंचित आर्यसमाज मे झगडो से मन दुखी होता है, आर्यसमाज के लिये यह अशुभ सकेत है, आज हम सभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को आपसी मतभेद भुलाकर सगठित होकर आर्यसमाज का प्रचार तीव्रगति से फैलाना है, भविष्य मे इस प्रकार के विवाद की पुनरावृत्ति न हो, इसका हमे पूरा प्रयास करना है, आज हम सभी सकल्प ले कि आर्यसमाज के काम को मिलकर आगे बढायेगे।

वैदिक-स्वाध्याय

जीवन और मृत्यु परमात्मा-अधीन

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं, न मरामहे।
प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः।। (ऋ० १९१६)

शब्दार्थ—(**सोम**) हे सोम ! (**त्वं च**) तुम यदि (**नः**) हमारे (**जीवातुं**) जीवित रहने की (**वशः**) इच्छा करते हो (**न मरामहे**) तो हम मर नहीं सकते। (**प्रियस्तोत्रः**) तुम प्रियस्तोत्रवाले हो और (**वनस्पतिः**) सभजन करनेवालों के रक्षक हो।

विनय—हे हृदयेश ! हे देव ! हे सोम ! जब तुम्हारी इच्छा हमे जीवित रखने की है तब हमे कोई मार नहीं सकता। यह अन्धा, अज्ञानी ससार बहुत बार तेरे भक्तो से द्वेष करने लगता है और उन्हे सताता है और उन्हे मारना तक चाहता है। भक्त प्रह्लाद को मारने की कितनी चेष्टाये की गई, भक्त मीरा की जान लेने के लिए राजा ने कई बार यत्न किया, भक्त दयानन्द को लोगो ने कई बार जहर दिया। पर तेरी इच्छा बिना कौन मार सकता है ? भक्त लोग इस तत्त्व को जानते होते हैं अत वे आनन्दित रहते हैं। मरने से डरनेवाला यह ससार-तेरे ईश्वरत्व को न जाननेवाला यह ससार–यो ही भय-त्रास और मरणाशका से मरा जाता है। पर भक्त देखते हैं कि जब तक तेरी इच्छा नहीं है तब तक उन्हे कोई मार नहीं सकता और जब तेरी इच्छा होगी तब तेरा मारना भी उनके लिए उतना ही आनन्ददायक होगा जितना कि तेरी इच्छा से जीना आनन्ददायक है। ओह, इस ज्ञान के कारण वे भक्त जीवित ही अमर हो जाते है, अभिनिवेश के क्लेशो से पार हो जाते हैं। वे ससार की किसी भयकर से भयकर वस्तु से भी न डरते हुए, तेरे स्तोत्र गाते हुवे निर्भय फिरते है। प्यारे स्तोत्रो से तुझे रिझाना या तेरे स्तुतिगान से जगत् मे भक्ति का प्रसार करना, यही उनका कार्य होता है। अपनी रक्षा व अरक्षा की चिन्ता वे तुझपर छोड बेफिक्र हो जाते हैं। तू तो सभजन करनेवालो की रक्षा करनेवाला मौजूद ही है। तो उन्हे क्या चिन्ता ? अहा, कैसी बेफिक्री और निरापदता की अवस्था है ! कैसी अमृत्युता (अमरता) का आनन्द है !

(वैदिक विनय से)

'पर्यावरण और संस्कृति' की अखिल-भारतीय परीक्षाओं (सं० २०५८ वि०) के परिणाम घोषित

दिल्ली। राष्ट्र के नैतिक एव सास्कृतिक पुनरुत्थान के प्रति समर्पित राष्ट्रप्रेमी विद्वानो की सस्था सर्व-सुलभ सदन की राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार-योजना के अन्तर्गत गठित राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार-समिति (रजि) द्वारा सचालित अ भा प्रतियोगिता परीक्षाओ के परिणाम घोषित हो गए हैं। वैद्य-सदन उ प्रा विद्यालय असोथर जिला फतेहपुर (विद्यालय १) की छात्रा सरिता देवी अखिल भारतीय परिवेश-पदक प्रतियोगिता' मे प्रथम स्थान प्राप्त करके 'श्री विश्वनाथ पुरस्कार' (पदक + २०० रुपये की पुस्तको) की विजेता रही। पब्लिक माडल स्कूल जहागीरपुरी दिल्ली-३३ (विद्यालय १७) के छात्र दीपककुमार अ भा सस्कृति-पदक प्रतियोगिता' मे प्रथम स्थान प्राप्त कर 'श्री विश्वेश्वर पुरस्कार' (पदक + ३०० रुपये की पुस्तको) के विजेता रहे। सभी प्रतियोगी प्रमाण-पत्र एव प्रतिभागिता पुरस्कार (पुस्तके) प्राप्त करेंगे। कुछ विद्यालयो का कार्य सराहनीय रहा, किन्तु कोई विद्यालय 'अखिल भारतीय पर्यावरण सस्कृति (अचल) वैजयन्ती' प्राप्त नहीं कर सका।

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व प्रचारक श्री कवलसिह आर्य के पिताजी चौ० थाम्बूराम जी का १०२ वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के बाद २९ नवम्बर २००१ को निधन होगया। वे ग्राम जूआं (सोनीपत) मे सबसे अधिक आयु के थे। वे आर्यसमाज के कार्यों में सदा सहयोगी रहे। शोकसभा ११ दिसम्बर को प्रात ९ बजे जूआ में होगी।

—केदारसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज जूआं

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान कालोनी रोहतक का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर २००१ रविवार को सम्पन्न हुआ। आचार्य सत्यव्रत जी ने प्रभावशाली ढग से प्रात यज्ञ करवाया। सैकडों नर-नारियों ने यज्ञ मे आहुतियां डालकर सामाजिक बुराइयों से दूर रहने तथा अपने जीवन मे शुभ करने का सकल्प लिया। श्री सुखदेव शास्त्री ने वेदमन्त्रो की व्याख्या करते हुए प्रदूषण से बचने के लिए दैनिक यज्ञ करने का सुझाव दिया। श्रीमती रेणूबाला, बहन सुमित्रा जी (माता दरवाजा रोहतक), सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि ने ऋषि दयानन्द की महिमा के भजन तथा आर्यसमाज के प्रचार द्वारा किए गए परोपकारी कार्यों का गुणगान किया। आचार्य यशपाल को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का उपप्रधान चुने जाने पर आर्यसमाज की ओर से जोरदार स्वागत किया गया। आचार्य जी ने आर्यजनता को विश्वास दिलाया कि वे आर्यसमाज का सन्देश जन-जन तक पहुचाने के लिए ठोस कार्यक्रम बनाकर आपकी इच्छाओ को पूरा करने का यत्न करेंगे। अत मे श्री सुखवीर शास्त्री ने सभी आर्यनेताओ का यहा पधारने पर हार्दिक धन्यवाद किया और उपस्थित सभी ने ऋषि लग का आनन्द उठाया।

—बलराज आर्य, प्रचारमंत्री, आर्यसमाज हनुमान कालोनी, रोहतक

गाण्डीव भी था और पिनाक भी

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ.प्र.)

कुछ दिनो से कुछ लोग इस प्रकार के भ्रामक वक्तव्य प्रसारित कर रहे हैं कि जिनसे भारतीय जनमानस अपने प्राचीन इतिहास के विषय मे भ्रान्ति मे जा पडे। यह लोग कभी कहते हैं, महाभारत नहीं हुआ। कभी कहते हैं, महाभारत हुआ तो है मगर रामायण से पहले। कभी कहते हैं लका मध्यप्रदेश मे थी तो कभी कहते हैं, रामायण को वाल्मीकि ने बौद्ध साहित्य के "दशरथ-जातक" के आधार पर ईसा से लगभग पाच सौ वर्ष पूर्व लिखा।

इनके इन भ्रान्तिपूर्ण वक्तव्यों के युक्तियुक्त और सप्रमाण उत्तर हम विविध समाचार-पत्र मे दे चुके हैं। उन लेखो मे हम यह सिद्ध कर चुके हैं कि इन लोगो के उक्त वक्तव्य न केवल निराधर ही थे अपितु यह लोग भारतीय इतिहास से सर्वथा अनभिज्ञ भी हैं यदि अनभिज्ञ नहीं हैं, और जान-पूछकर ऐसा कर रहे हैं तो विदेशियो के शीतयुद्ध की राजनीति के चगुल मे फसे हैं।

समाचार-पत्रो मे श्री डा० एच डी साकलिया का एक और वक्तव्य पढने को मिला। पहले आपने कहा था, लका मध्यप्रदेश में थी। अब आप उसे ढूढते फिर रहे हैं। अपनी इस यात्रा मे मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल नगर मे एक सभा को सम्बोधित करते हुए आप यह कह बैठे कि "भारत अतीत मे शस्त्र निर्माण के क्षेत्र में पिछडा हुआ था। रामायण और महाभारत के युद्धो में रथो, चक्रो, भाति-भाति के धनुष-बाणो तथा तलवारो का जो वर्णन किया गया है, वह मात्र कवि-कल्पना है। आपने यह कहा कि "रामायण और महाभारत महाकाव्यो मे जैसे हथियारो का वर्णन मिलता है, वैसे हथियार मानव-सभ्यता के सन्दर्भ से हटकर विकसित नहीं किये जा सकते।" आपने कहा कि "उक्त महाकाव्यो में वर्णित युद्धोपयोगी शस्त्रो की कल्पना अति विकसित सभ्यता की पूर्व कल्पना है। पश्चिमी एशिया और अफ्रीका सभ्यता की तुलना मे भारत शस्त्र-निर्माण की दशा मे बहुत पिछडा हुआ रहा है। यह कहना किवदन्ती है कि अर्जुन ने गाण्डीव का प्रयोग नहीं किया, राम ने शिव-धनुष तोडा और रावण रथ मे बैठकर सीता को ले भागा था।" आपने कहा कि "उक्त हथियारो का विकास बहुत बाद मे किया गया है।"

गाण्डीव भी था और पिनाक भी–किन्तु जब अभागे भारतीय पश्चिम की ऐनक लगाकर ही [illegible]य इतिहास को पढते हैं, तब उन्हे भारत मे कुछ भी क्यों दिखाई देने लगा ? यह नितान्त लज्जा की बात है कि आदि सृष्टि से ही समस्त ससार को सर्वविद्यायें सिखानेवाले देश के वासी अपने गौरवपूर्ण इतिहास के विरुद्ध इस प्रकार की मिथ्या धारणाये व्यक्त करने और फैलाने में लगे हैं। विश्व का यह सबसे बडा आश्चर्य कहा जाना चाहिए कि लोग अपने पिता आदि पूर्व पुरुषाओं के विषय मे विदेशियो को प्रमाण माने, अपने घर के इतिवृत्त को नही। अपने पिता का नाम आदि परिचय देने के लिये व्यक्ति स्वय प्रमाण होता है किन्तु भारत को मानव-सभ्यता के इतिहास मे पिछडा बतानेवाले भारतीय अपने आपको सभ्य और विकसित समझ रहे हैं और यह उनके विकसित मस्तिष्क की पहचान है कि भारतीयता के लिये भारतीय इतिहास को नहीं अपितु विदेशियो के पक्षपातपूर्ण अनर्गल और असगत लेखो को प्रमाण मान रहे हैं।

सिद्धान्त-विवेचन की दृष्टि से हम यह कहना चाहते हैं कि श्री साकलिया जी के नाम के साथ जो **"साकलिया"** शब्द लगा है, इसका क्या महत्त्व है और क्या इतिहास है ? हमारा अभिप्राय यह है कि श्री साकलिया जी तो सभ्यता के अति-विकसित युग मे रह रहे हैं। इतिहास पर शोध कर रहे हैं, लका को ढूढते फिर रहे हैं, कभी उन्होने इस साकलिया शब्द के विषय मे भी सोचा है ? उर्दू मे जिसे जजीर कहते हैं, उसे हिन्दी मे "साकल" कहते हैं, "साकलिया" पशुओं मे तो कुत्ता, गाय, भैंस, हाथी आदि को कहा जा सकता है, जो साकल मे बाधे जाते हैं और मनुष्यों मे उन्हे कहा जा सकता है, जो "साकल" बनाने का कार्य करे अथवा जिनके वश मे "साकल" बनाने का कार्य होता रहा हो। सभ्यता के विकास की बाते करनेवाले और भारत के रामायण- महाभारत कालो को सभ्यता के विकास मे पिछडा हुआ बतानेवाले विद्वान् को यह सूझना चाहिये कि यह शब्द विकसित सभ्यता का नहीं अपितु नितान्त पिछडेपन का परिचायक है। रामायाण-महाभारत के लेखकों को तो श्री साकलिया जी के ही शब्दो मे "उक्त महाकाव्यो मे वर्णित युद्धोपयोगी शस्त्रो की कल्पना अति विकसित सभ्यता की पूर्व कल्पना करने की योग्यता और बुद्धि तभी प्राप्त होगयी थी, जब सभ्यता साकलिया जी के विचार से विकसित भी नहीं हो पायी थी। परन्तु साकलिया जी को अब तक भी यह बुद्धि प्राप्त न हो सकी, जो इस विकसित सभ्यता के युग मे रह रहे हैं–कि जिससे वह यह जान लेते कि साकलिया शब्द सभ्यता का नहीं अपितु अत्यन्त असभ्य युग मे रहने तथा अयोग्यता का परिचायक है।

इस विषय में हमारा निवेदन यह है कि रामायण और महाभारत विश्व की [illegible] सभ्यता के [illegible] के परिचायक इतिहास हैं। उस समय के लोग आज से अधिक उच्च सभ्यता के वातावरण में पल और पनप रहे थे। उस समय की सभ्यता मानवीय इतिहास की महानतम सभ्यता थी और उस समय का बुद्धि-कौशल भी उसी के अनुरूप था। सत्य तो यह है कि वर्तमान सभ्यता और बुद्धि-कौशल मानव-विनाश की ओर उन्मुख है और मानव-विनाश ही इसका आधार है। किन्तु उस समय की भारतीय सभ्यता और बुद्धि-कौशल न केवल मनुष्य-मात्र अपितु प्राणिमात्र के हित-चिन्तन मे सलग्न थे। इस बर्बर युग की उस दिव्य युग से क्या तुलना ?

इससे भी बढकर यह आश्चर्य कि एक ओर तो साकलिया जी रामायण और महाभारत को कल्पनाओ के ग्रन्थ बताकर उनकी ऐतिहासिकता से ही नकार कर रहे हैं तथा दूसरी ओर लका की खोज करते फिर रहे हैं। लका का कहीं वर्णन है तो रामायण मे, किसी अन्य ग्रन्थ मे नहीं। किसी अन्य ग्रन्थ मे है भी तो रामायण के आधार पर ही। अन्य ग्रन्थ जिनमे लका का वर्णन है, रामायण से पश्चात् के हैं। रामायण इन सबसे प्राचीन १,८१,४९,००० वर्ष पुराना ग्रन्थ है। साकलिया जी की दृष्टि मे जब रामायण केवल काव्य है और उसके वर्णन पूर्व कल्पना हैं अर्थात् वह ऐतिहासिक ग्रन्थ है ही नहीं तो रामायण की लका भी काल्पनिक हुई। उसकी खोज के लिये किसी बुद्धिमान् इतिहासज्ञ के द्वारा समय विनष्ट करते फिरना सर्वथा अनुपयुक्त और अनुचित है। भूगोल मे अवस्थित लका को आप वह लका नहीं मानते और रामायण को इतिहास नही मानते तो फिर आपके इस प्रकार मारे-मारे फिरने का क्या औचित्य ? दूसरी ओर आपके द्वारा लका की खोज यह सिद्ध करती है कि आप सम्पूर्ण रूप से न सही, कम से कम लका के विषय मे अवश्य रामायण को प्रमाण मानते हैं। इस स्थिति मे आपको लका को मध्यप्रदेश मे नहीं अपितु समुद्र मे ढूढना चाहिए, कारण कि रामायण के अनुसार राम लका को जाते समय सह्य, मलय और महेन्द्र पर्वतो पर होते हुए गये हैं और यह पर्वत मध्यप्रदेश से दक्षिण मे कुमारी अन्तरीप तक फैले हुये नीलगिरि आदि हैं। जब रामायण लका जाने का मार्ग इस प्रकार समुद्र तट की ओर भारत के दक्षिणी किनारे तक बताये, तब मध्यप्रदेश मे उसकी खोज निरर्थक है। इसके अतिरिक्त रामायण मे लका की अवस्थिति का वर्णन है। यह सीता की खोज करनेवाले दल के सदस्य अगद को जटायु के भ्राता सम्पाती ने इस प्रकार बताया है–

इतो द्वीपे समुद्रस्य सम्पूर्णे शतयोजने।
तस्मिल्लकपुरी रम्या निर्मिता विश्वकर्मणा।।

अर्थात् समुद्रस्थ इस द्वीप मे, जो यहा से पूरे सौ योजन दूर है, विश्वकर्मा [illegible] निर्मित सुन्दर लकापुरी है। इस वर्णन के होते हुए लका को [illegible] मे [illegible], इसकी क्या तुक है [illegible] मे हमारा अभिप्राय यह है कि लका की खोज [illegible] रामायण को इतिहास सिद्ध करता है और रामायण को इतिहास मानने पर लका को समुद्र मे खोजना चाहिए [illegible] रामायण [illegible] माननेवाले को लका की खोज नहीं करनी चाहिए।

[illegible]कलिया जी ने [illegible] कि [illegible] और महाभारत महाका[illegible] हथियारो [illegible]

वर्णन मिलता है, वैसे हथियार मानव-सभ्यता के विकास के सदर्भ से हटकर विकसित नहीं किये जा सकते। जैसा कि ऊपर भी हम लिख आये हैं, हमारा यह कहना है कि मानव-विकास को आधार मानकर शास्त्रास्त्र के निर्माण की होड मे नित नये-नये अस्त्रो का आविष्कार मानव-सभ्यता का विकास कदापि नहीं कहला सकता। इसे तो बर्बर, जगली, राक्षस, दानव और पिशाच-सभ्यता का विकास तथा मानवता व मानव-सभ्यता का ह्रास कहना ही उपयुक्त होगा। मानव सभ्यता का विकास तो आत्म-विज्ञान विवेचन द्वारा मानव को मानव-जीवन के वास्तविक तथा परम और चरम उद्देश्य मोक्ष की ओर लेजाना ही है।

फिर भी हम इतनी चर्चा अवश्यमेव कर देना चाहते हैं कि रामायण और महाभारतकाल मे भयकर आयुधो के समान आयुध वर्तमान तथा कथित मानव-सभ्यता के विकास का विज्ञान अभी तक निर्माण ही नहीं कर सका। इस विषय मे जानकारी के लिये महर्षि भारद्वाजकृत **"यन्त्रसर्वस्व"** नामक ग्रन्थ उल्लेखनीय है। बडौदा के "राजकीय सस्कृत पुस्तक भवन" मे इस ग्रन्थ का "वैमानिक प्रकरण" उपलब्ध है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, आसफअली मार्ग, नई दिल्ली-२ से इस **"वैमानिक प्रकरण"** को हिन्दी टीका श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक कृत **'बृहद् विमान-शास्त्र'** के नाम से प्रकाशित हुई है। इसमे रक्षा-विधान के अन्तर्गत भी भारतीय अस्त्र-विद्या का वर्णन है। न केवल अस्त्रो का अपितु अस्त्र-विद्या का।

यह भी तथ्य है कि यह ग्रन्थ भी रामायण काल का ही है। राम वन जाते समय प्रयागराज में इस ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि भारद्वाज के ही आश्रम मे ठहरे थे। इस प्रकार यह ग्रन्थ भी रामायण-कालीन अर्थात् भारत की लगभग दो करोड वर्ष पुरानी सभ्यता और बुद्धि-कौशल के विकसित स्वरूप का दिग्दर्शन कराकर वर्तमान विकसित सभ्यताभिमानियो की एतद्विषयक भ्रान्ति को दूर कर देता है।

इस ग्रन्थ मे एक "गुहागर्भा-दर्शयन्त्र" का वर्णन है। इस यन्त्र के विषय मे कहा गया है कि विमान के तोडने के अर्थ शत्रुओ ने भूमि के अन्दर महागोल सब और मुखवाला अग्नि-गर्भ आदि अद्भुत यन्त्र (विमान-भेदक) जहा गुप्तरूप से स्थापित किया है, उसके स्वरूप की वास्तविक की ठीक जानकारी के लिये शास्त्र-क्रम मे "गुहागर्भादर्शयन्त्र" स्थापित करे।

इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि इस ग्रन्थ के निर्माण के समय अर्थात्-रामायणकाल मे ऐसे भयकर गोले थे कि जिनमे सब ओर को छेद रक्खे गये थे तथा जिनके अन्दर आग्नेय पदार्थ अर्थात् विस्फोटक सामग्री भरी रहती थी, जो भूमि मे दबाकर शत्रु के आकाशयानो को मारकर गिरा देने के लिये रक्खे जाते थे और जो उपयुक्त समय पर स्वयं ही फट जाते थे। इनकी भूगर्भ-अवस्थिति का ठीक पता लगाने के लिये, जिससे शत्रु की चोट से बचा जा सके "गुहागर्भादर्श" नामक यन्त्र को स्व-विमान मे लगाने का विधान किया गया है। इसके आगे इस यन्त्र की निर्माण विधि और उसमे प्रयुक्त होने वाले पदार्थो का वर्णन है।

इसी ग्रन्थ में एक **"अपस्मार धूमप्रसारण"** यन्त्र का वर्णन है। जब स्वविमान को चारो ओर से शत्रु के विमान घेरले, तब इस यन्त्र के द्वारा शत्रु-विमानो पर धूम्रप्रसारण करें। अर्थात् धुआं फेके। यह धुआ शत्रु-विमानचालको तथा उन विमानो मे से आयुध प्रहार करनेवाले सभी व्यक्तियों को अचेत करनेवाला है। इसके विषैलेपन के प्रभाव से शत्रु विमानचालको आदि के अचेत होने के परिणामस्वरूप भूमि पर जा गिरेगा। इस यन्त्र के भी निर्माण की पूरी विधि इस ग्रन्थ मे दी है। यहा तक कि यन्त्रनिर्माण की प्रक्रिया में भट्टी के अन्दर जलनेवाली अग्नि के तापमान के अशों (डिग्रियो) का भी विधान किया गया है।

यह सब विज्ञान इस ग्रन्थ के निर्माणकाल मे प्रयुक्त हुआ है, किन्तु इसके सिद्धान्त आदि सृष्टि से उपस्थित हैं। इन सिद्धान्तो का वर्णन भी इसी "विमान-शास्त्र" के प्रारम्भ में मगलाचरण की बोधानन्द-कृत व्याख्या मे इस प्रकार है-

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनि.।
नवनीत समुद्घृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम्।।

अर्थात् वेदरूपी समुद्र को मथकर भारद्वाज महामुनि ने उसमें से **"यन्त्र-सर्वस्व"** रूप में नवनीत को वास्तविक रूपेण उद्घृत किया है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि यन्त्र आदि समस्त विद्याओं का मूल वेद में है। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने घोषणा की थी कि **"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।"** उन्होने "ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका" नामक अपने ग्रन्थ में वेदमन्त्रों की व्याख्या करके इस विषय का रहस्योद्घाटन भी कर दिया है। उनके पश्चात् श्री अरविन्द घोष ने भी लिखा है कि "वेदो में विज्ञान बताकर महर्षि दयानन्द ने अतिशयोक्ति नहीं की अपितु कुछ न्यूलोक्ति से ही काम लिया है। क्योकि वेद-वर्णित विज्ञान के अनेक रहस्य तो अभी तक छिपे हुए ही हैं।

वेद रामायण से बहुत पहले के आदि सृष्टि के हैं। इस प्रकार भारतीय सभ्यता और बुद्धि-कौशल मानव-सभ्यता के इतिहास मे सर्वप्रथम और सर्वोच्च हैं। बुद्धिमानी इसी मे है कि इसकी वास्तविक जानकारी प्राप्त की जाय और तथ्यो को स्वीकार किया जाय, न विदेशियो की भ्रान्त-स्थापनाओ के चक्र में फसकर अपने अत्यन्त गौरवपूर्ण इतिहास को झुठलाने का प्रयत्न किया जाय और स्वय को पतित समझा व सिद्ध किया जाय।

अन्तरंग सभा की आपात बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की आपात बैठक दिनाक २६-११-२००१ को प्रात ११ बजे ईशप्रार्थना के साथ सभाप्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी अध्यक्षता मे दयानन्दमठ, रोहतक मे सम्पन्न हुई।

सभा की वर्तमान स्थिति एव विवाद के दृष्टिगत बैठक चार दिन की संक्षिप्त सूचना के आधार पर बुलाई गई थी। बैठक मे पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिह, चौ० सूबेसिंह, चौ० धर्मचन्द, श्री वेदव्रत शास्त्री एव श्री रामधारी शास्त्री आदि प्रमुख अधिकारी एव सदस्य उपस्थित थे।

बैठक मे सर्वसम्मति से सभा के विवाद के सम्बन्ध में तथाकथित आर्यसमाज के वरिष्ठ नेताओं के दैनिक समाचार पत्रों में छपनेवाले ओछे बयानों की निन्दा की गई तथा साथ ही आर्यसमाज मे छुपे हुए आस्तीन के उन सापों की भर्त्सना की गई जो अपनी ओच्छी पोस्टरबाजी से आर्यसमाज को सर्वस्व समर्पित करनेवाले वरिष्ठ नेताओ के चरित्रहनन का घृणित प्रयास कर रहे हैं एव स्वयं को निवेदक के रूप में "आर्यसमाज के शुभचिन्तक" घोषित कर रहे हैं।

बैठक में तथाकथित न्यायसभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रशासक रामफल बंसल द्वारा आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की सार्वदेशिक की साधारण सभा की सदस्यता समाप्त करने की निन्दा की गई।

वक्ताओ ने सभा के वर्तमान विवाद को सुलझाने के लिए अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत किए तथा समझौते के पक्ष विपक्ष मे अपने विचार रखे।

पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात् अन्त मे सभा के संरक्षक पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती को इस विषय मे निर्णय लेने के लिए पूर्व अधिकार प्रदान किए गए।

वर्तमान अन्तरंग सभा के पुनर्गठन हेतु स्वामीजी को किसी भी अधिकारी एव सदस्य का त्यागपत्र स्वीकार कर उनके स्थान पर नई नियुक्तियां करने का पूर्ण अधिकार दिया गया।

ध्यान रहे कि सभाप्रधान स्वामी इन्द्रवेश, सभामन्त्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा वरिष्ठ उपप्रधान, चौ० सूबेसिंह तथा अन्तरंग सदस्य चौ० धर्मचन्द अपने-अपने त्यागपत्र पहले ही स्वामीजी को सौंप आए थे।

दिनांक ५-१०-२००१ की अन्तरंग बैठक मे प्रतिनिधि सूचि से काटे गए नाम वाले एवं सामाजिक रूप से बहिष्कृत प्रतिनिधियो तथा आर्यसमाज हरिसिंह कालौनी, रोहतक के सम्बन्ध में यथोचित निर्णय लेने का पूर्ण अधिकार भी स्वामी ओमानन्द जी को दिया गया।

शान्तिपाठ के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डालावास
सभामन्त्री

क्या आप झूठ से परेशान हैं ?

सही बातों को न कहकर कुछ और ही बोलना असलियत को छिपाना, वास्तविकता के प्रतिकूल कहना, झूठ बोलना कहलाता है। झूठ बोलना कई प्रकार का हो सकता है -

१ बड़ो की आज्ञा मानने के लिए झूठ बोलना।
२ दूसरो को कष्ट न पहुचाने के लिए झूठ बोलना।
३ अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलना, इसे धोखा भी कहा जा सकता है।
४ दूसरों के सामने बडा बनने के लिए झूठ बोला।
५ दूसरों के प्रति घृणा व्यक्त करने के लिए झूठ बोलना।
६. अपने से बडो की प्रशंसा प्राप्त करने के लिए झूठ बोलना आदि।

झूठ बोलने के कारण :–

झूठ बोलने में प्रोत्साहन देने मे निर्धनता का बहुत बडा स्थान है। निर्धनता के कारण माता-पिता बच्चों की सभी आवश्यकताए पूरी नहीं कर पाते। फलत बच्चे अपने सगी साथियों में व अपने से बडों मे झूठ बोलकर माता-पिता की निर्धनता प्रकट नहीं होने देना चाहते। उसको छिपाने की कोशिश करते हैं।

वातावरण व सामाजिक कारण का भी झूठ बोलने मे अपना स्थान होता है। सिनेमा या मिल मजदूरों के पास रहना जहा के लोग प्राय झूठ बोलते हो। झूठ बोलने वाले सगी साथियो के बीच मे रहना जैसे वातावरण का बच्चो पर धीरे-धीरे प्रभाव पडता है। तथा समय बीतने के साथ-साथ वे दक्ष व अच्छे झूठ बोलने वाले बन जाते हैं।

शारीरिक व मानसिक विकृति से भी बच्चे झूठ बोलना सीख जाते हैं। इसलिए बच्चो की मानसिक स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिए।

झूठ बोलने की आदत माता-पिता तथा भाई बहनो से भी प्राप्त हो सकती है। या ऐसे कहिए कि पीढी दर पीढी झूठ बोलने की आदत भी कई बार देखी जाती है। न्यूनाधिक रूप से देखा जा सकता है कि झूठ बोलनेवाले माता-पिता का बच्चा झूठ बोलना शीघ्र ही सीख लेता है।

शाला कार्यक्रम इतना नीरस व उबाने वाला हो कि जहा से शिक्षको की निगाह बचाकर भाग निकले तथा गेग (पार्टी) के साथ मिलकर झूठ बोलना सीख जाये। कई छोटे-छोटे बच्चे अज्ञानता वश झूठ बोलते हैं। वे झूठ और सच्च मे अन्तर ही नहीं कर पाते।

उपचार :-

झूठ बोलना शास्त्र एव समाज-सम्मत कार्य नहीं है। अत इसको प्रारम्भ से ही रोका जाना चाहिए। यह माता-पिता तथा शिक्षको का कर्त्तव्य है कि वे बच्चो को झूठ व सच तथा सही व गलत का ज्ञान कराए। जिससे वे अज्ञानतावश झूठ न बोले। जिन बच्चो की आवश्यकताएं पूरी होती रहती हैं अर्थात् जिन बच्चो को जरूरत पडने पर चीजें मिल जाती हैं वे प्राय झूठ बोलने के शिकार नहीं होते। ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

प्रारम्भ में झूठ बालने पर दण्ड देने की अपेक्षा आगे से झूठ न बोलने के लिए स्नेहपूर्वक समझाना चाहिए। सत्य बोलने का प्रोत्साहन देना चाहिए। मित्रो में बालक की सच बोलने की प्रशसा करनी चाहिए। इससे उन्हे प्रसन्नता होती है। तथा उत्साह बढता है। स्नेहपूर्ण वातावरण हो, बच्चो पर आतक पूर्ण वातावरण न हो तो भी बच्चे सच बोलने मे नहीं हिचकेंगे। सच बोलने पर बच्चो की प्रशसा भी करनी चाहिए। उन्हे पुरस्कार भी दिये जा सकते हैं। छोटा-मोटा खिलौना या मिठाई पुरस्कार मे पाकर बच्चे फूल उठेगे तथा इससे भी झूठ बोलने की आदत छुडाने मे सहायता मिलती है। उन्हे सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की कहानी सुनानी चाहिए तथा बताना चाहिए कि सत्य के लिए उन्होंने कितने कष्ट सहे।

माता-पिता को स्वयं सच बोलकर आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। उन्हें ऐसे अवसर कभी नहीं देने चाहिए कि बच्चो को झूठ बोलने मे प्रोत्साहन मिले। कई बार पिता से मिलने कई व्यक्ति आते हैं तथा किसी कारणवश वे उनसे मिलना नहीं चाहते हैं। ऐसी स्थिति मे बच्चो से कहला देते हैं कि जाकर कह दो के पिता जी घर मे नहीं हैं। अबोध बच्चे क्या जाने ? वे दरवाजे पर जाकर कह देते हैं कि पिता जी घर पर नहीं है। माता-पिता को ऐसे कार्यों से सदैव बचना चाहिए।

पिता जी को भी सत्य बोलना चाहिए तथा सत्य का महत्त्व बच्चो को भी बताना चाहिए। सत्य बोलने वाले बालको की प्रशसा भी करनी चाहिए। इससे बालकों को सन्तोष मिलता है। बालक अध्यापक के प्रति श्रद्धा से रहे, उनका विश्वास करे तथा अध्यापक को अपना भला चाहनेवाला समझे तो बालक कभी झूठ नहीं बोलेगा।

कक्षा का कार्य, पाठ का प्रस्तुतिकरण अध्यापन आदि सरस होना चाहिए, ताकि बच्चे उसमे रुचि ले। इससे बच्चे कक्षा से भागकर झूठ बोलने वालो की मित्रता से बचे रहेगे। साथ ही वे गेग (पार्टी) के शिकार होने से भी बच जाएंगे। बच्चे गेग मे रहते हैं, माता-पिता उनकी परवाह नहीं करते। बच्चे विद्यालयो से अनुपस्थित रहते हैं तथा झूठ बोलते हैं तो ऐसे बच्चो को आवासीय पाठशालाओ मे भर्ती करा देना चाहिए। जहा छात्रावास मे रहने से उन पर प्रतिकूल सभी सगी साथी व वातावरण का प्रभाव नहीं होगा।

बच्चों मे शुरु से ही सत्य बोलने की आदत डालनी चाहिए।

—नै ब्र धर्मवीर आर्य गोसेवक

विशेष सूचना

गत मास ७ अक्तूबर से २१ नवम्बर तक के ७ अक कुछ ग्राहको तक पहुचाने मे हम असमर्थ रहे किन्तु अब वातावरण ठीक होगया है। २८ नवम्बर से सर्वहितकारी सभी ग्राहकों के पास भेजा जारहा है। यदि किसी ग्राहक को अब भी साप्ताहिक सर्वहितकारी नहीं मिलता है तो वह अपनी ग्राहक सख्या सहित पूरा पता लिखकर अवश्य भेजे। सर्वहितकारी भेजने की व्यवस्था की जायेगी।

—वेदव्रत शास्त्री, सम्पादक

आर्यसमाज स्थापना की १२५वीं जयन्ती पर विशेष–

आर्यसमाज क्या करे ?

❑ महावीरसिंह प्राध्यापक, २१/१२२७ प्रेमनगर, रोहतक

आर्यसंस्थाओं की एकरूपता व पाठ्यक्रम

१ **गुरुकुल विश्वविद्यालय**–आर्य सस्थाओ को जहा तक सभव हो सके एक विश्वविद्यालय या शिक्षा-पटल के अन्तर्भूत होकर चलना चाहिए। कितना अच्छा हो यदि सभी सस्थाए जो पाठ्यक्रम गुरुकुल कागडी मे चल रहे हैं उन्हे तो गुरुकुल कागडी के अन्तर्गत रहकर ही अपनी सस्थाओ मे चलाए तथा जो पाठ्यक्रम वहा नहीं चल रहे हैं उन्हे गुरुकुल कागडी मे चलाने का प्रयत्न करे। जब तक वे पाठ्यक्रम गुरुकुल मे नही चलते तब तक अन्य सस्था के पाठ्यक्रम अपनाने की छूट रहे। यदि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नीचे सभी सस्थाए आ जाती हैं तो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मजबूत होगा। जब अनेक आर्यसस्थाए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आ जाएगी तो विवशतावश मध्य मे गुरुकुल छोडकर अन्यत्र जानेवाले छात्रो को प्रवेश न मिलने की समस्या भी मिलजुल कर अन्य विश्वविद्यालय व शिक्षापटलो से बात करके सुलझाई जा सकेगी। सामान्य रूप से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की मान्यता देश-विदेश मे है इसलिए ऐसी कोई समस्या आती भी नहीं है।

२ **गुरुकुल**–अन्य गुरुकुल सस्थाएं यदि पूर्णत आर्ष पद्धति अनुसार शिक्षा देना चाहती हैं तो उन्हे **श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर हरयाणा** के अन्तर्गत रहकर शिक्षा देनी चाहिए। जोकि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के अन्तर्गत है। यदि इसमे कुछ कमी दिखाई देती है तो विचार कर दूर कर लेनी चाहिए। आर्ष विद्यापीठ मे प्राचीन तथा अर्वाचीन ज्ञान विज्ञान को पूर्णत, सम्मिलित करना [illegible]। कुटीर [illegible] लेकर बडे [illegible] तक ये [illegible] विद्यापीठ [illegible] रुचि के अनुसार ऊचे से ऊचा अध्यात्म ज्ञान व ऊचे से ऊंचा भौतिक ज्ञान देने [illegible] प्रबन्ध हमें करना चाहिए।

[illegible]. डी.ए.[illegible] सस्थाएं–डी.ए.वी सस्[illegible] मार्ग से दूर भटक गई हैं। [illegible]ए वैदिक नाम का प्रयोग कर[illegible] लेकिन वैदिक सिद्धान्तो पर नहीं चलती हैं। इन्होने बिल्कुल पाश्चात्य सभ्यता अपना ली है। मामूली सी धार्मिक शिक्षा लगाकर जिसका पढना व उत्तीर्णता अनिवार्य भी नहीं है, केवल दिखावे के लिए ऐसे ही कहीं दीवारो पर एक आध वाक्य वैदिक मान्यताओ का लिख देते हैं। वर्ष मे छोटी कक्षाओ मे कभी-कभी यज्ञ करवा दिया जाता है। वार्षिक सम्मेलन मे किसी का भाषण या किसी गायक का गीत भजन हो जाता है। विद्वान् अपने भाषणो मे उन्हे धिक्कारते हैं तो उनकी वे कोई परवाह नहीं करते।

यदि डी ए वी सस्थाए वैदिक पाठ्यक्रमो को ठीक से समन्वय कर चलती तो सरकार को भी विवश होकर वैदिक पाठ्यक्रम अपनाने पडते तथा समाज व राजनीति स्वच्छ होते चले जाते। क्या प० गुरुदत्त विद्यार्थी तथा महात्मा हसराज के उद्देश्यो पर डी ए वी सस्थाए चल रही हैं ? बिल्कुल नहीं !!! डी ए वी सस्थाओ के सचालकों को इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। श्रेष्ठ आर्यजनों को शिक्षक बनाना चाहिए जिनका जीवन वैदिक मान्यताओ के अनुसार ढला हुआ हो। अनिवार्य रूप से आर्ष सस्कृति व धर्मशिक्षा पाठ्यक्रम लागू करने चाहिए। विद्यालय का प्रारम्भ यज्ञ से होना चाहिए। सभी छात्रो का यज्ञोपवीत सस्कार होना चाहिए।

डी ए वी सस्थाए व गुरुकुल सस्थाए मिलकर चले तो लाखो छात्र इन सस्थाओ मे अध्ययन करते हैं अत छात्र सख्या के आधार पर आर्य सस्थाओ को आवासीय व सामान्य विश्वविद्यालय एव आयुर्वेद, अभियान्त्रिकी, सचार आदि के विश्वविद्यालयो के रूप मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मान सकता है। विभिन्न [illegible] पालतू पशु, हस्ति, अश्व, [illegible], कुत्ते, बिल्ली, बन्दर, भेडिया, सिह, चित्रक, गीदड, लोमडी आदि हिंसक पशुओं की शालाए बनाना, वहा सहायक उद्योग रूप में औषध निर्माण, कीटाणुनाशक पदार्थ, खाद, घी, दूध व उनके उत्पाद, चमडा व हड्डी उद्योग आदि की स्थापना करके उत्तम प्रयोगशालाएं बनाई जा सकती हैं। एक एक ज्ञानी-विज्ञानी पुरुष को यथास्थान बैठाकर शोधशालाएं बनाई जा सकती हैं जैसे विषैले जन्तुओं पर शोधशाला (सर्प, बिच्छू, नेवला, गोह, अजगर, भिरड, ततैया, मधुमक्खिया, अन्य मक्खिया, तितली, कीट-पतगे आदि के शोध व उपयोग) संसार का प्रत्येक सजीव व निर्जीव पदार्थ उपयोगी है। वह जीते जी कैसे उपयोगी है तथा मृत कैसे उपयोगी है यह जानना उसका प्रमाणित शोध करना आवश्यक है। वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, आकाश, इनमे वर्तमान तरगों, गैसो, भूगर्भ मे खगोल व अन्तरिक्ष मे क्या-क्या पदार्थ व गैस आदि है तथा समुद्र व वन मे क्या-क्या जन्तु, पदार्थ वनस्पति, पौधे, अन्न, झाडिया, औषध, जडी-बूटिया हैं। सभी पर शोध व उसके ज्ञान व उपयोग और उत्पादन केन्द्र स्थापित करना आदि अनेक क्षेत्र हैं जहा पर आर्य सस्थाए पदार्पण कर सकती हैं। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणरहित वाहन व यन्त्र बनाना आदि हैं। एकागी, सस्कृत, योगदर्शन, वेद, उपनिषद् का ज्ञान ही आवश्यक नही है अपितु पहले व साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान व उसके साथ-साथ भौतिक ज्ञान भी आवश्यक रूप से दिया जाए तभी समाज से अज्ञानता, बेरोजगारी, दुर्भावनाए व दुर्व्यसन दूर होकर सच्चा प्रेम, भाईचारा व शान्ति स्थापित होगी। यजुर्वेद कहता है–**"विद्यां चाविद्या च यस्तद्वेदोभय सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृत अश्नुते।"** क्या वैदिक बुद्धिजीवी इस पर शक्ति से गम्भीर विचार करेगे ?

स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थो में पठनपाठन के लिए यान्त्रिक, शिल्पशास्त्र, ज्योतिष, विमान व तार विद्या, विद्युत् (अश्वी) तथा अन्य भवन आदि निर्माण, काष्ठ व धातु से विभिन्न वस्तु निर्माण, वैद्यकशास्त्र आदि का उल्लेख नहीं किया है ? क्या उपनिषदो मे ब्रह्मविद्या के साथ वाकोवाक्य नक्षत्र भूगर्भ अन्तरिक्ष [illegible], खगोल भूगोल, समुद्रज्ञान आदि की विद्याओं के बारे मे बताया गया है। लेकिन क्या हमारी किसी संस्था ने इन विषयो को खोजकर हिन्दी, संस्कृत या भारतीय भाषाओं में पठन-पाठन की परम्परा डाली है ? शायद नहीं, यदि हम अब भी अपने विद्यालयों, महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में सभी तकनीकी विषयो को लेकर चलें तो समाज में समता, समृद्धि व शान्ति अवश्य होगी।

हा, हमारी प्रणाली अवश्य ही वर्णाश्रम प्राचीन व्यवस्था अनुसार ही चलनी चाहिए। यदि हमने अपनी सस्थाओ मे सर्वांगीणता नहीं अपनाई तो वे धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएगी। तब हमे भारी पछतावा भी होगा, अत समय रहते चेतना चाहिए। इन्हे पूर्ण करने के लिए हमे उद्योगपतियो से सहयोग लेना चाहिए। प्रवेशिका कक्षाओ से आयु अनुसार वस्त्र खिलौने आदि के निर्माण से लेकर सभी प्रकार के तकनीकी यत्र सचालन, निर्माण मरम्मत आदि का अभ्यास आवश्यक है।

४ **स्वयंसेवी शिक्षक तैयार करना**–सार्वदेशिक सभा को विभिन्न देशीय व प्रान्तीय सभाओ को यह निर्देश देना चाहिए कि वे अपने-अपने क्षेत्र से स्वयसेवी विभिन्न विषयो के शिक्षक, व्याख्याता व प्रशिक्षक तैयार कर आर्यसस्थाओ मे भेजे जो संस्थाओ मे कार्य कर सके। जो स्वयंसेवक संस्थाओ मे नहीं जा सकते, वे गाव मे ही चौपाल आदि मे बैठकर छात्रों को शिक्षण सुविधानुसार समय निश्चित कर एक या दो घण्टे के लिए दे तथा उनमे श्रेष्ठ सस्कार भी भरते रहे। इनसे गाव, नगर, मुहल्ले आदि मे सगठन बनाकर ग्राम कल्याण की अनेक योजनायें बनाकर अलग-अलग रुचि अनुसार उत्तर-दायित्व बाटकर आर्यजनो को सक्रिय बनाए रखे। क्रीडा, गायन, लेखन, भाषण, नाटक, वाद-विवाद, चित्रकला, सफाई करना जात-पात, दहेज दुर्व्यसनो विरोधी जागरण आदि कार्य हो सकते हैं। इनमे लगे व्यक्तियों व युवको को विशेष उत्सव पर पुरस्कृत भी किया जाए। विशेष विद्वानो व सामाजिक कार्यरत व्यक्तियो को बुलाकर प्रेरणा व उत्साहित भी कराते रहना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक गाव मुहल्ले मे संगठन बनाकर धार्मिक [illegible] भी किए जा सकते हैं। पहले दुर्व्यसनरहित युवकों को छांटकर उन्हें **"ग्रामरत्न"** आदि नाम से पुरस्कृत करके सगठन की शुरुआत की जा सकती है। प्रत्येक घर से एक रुपया व विशिष्ट धनी श्रद्धालु से अधिक श्रद्धानुसार राशि लेकर यह कार्य किया जा सकता है। (क्रमशः)

आयुर्वेदीय रसायन चिकित्सा

लेखक—बलवीरदत्त शास्त्री,
पूर्व प्रिंसिपल, आयुर्वेद महाविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

आयुर्वेद शास्त्र की एक विशेष देन है रसायन चिकित्सा, इसमे स्वस्थ व्यक्ति पूर्णरूप से स्वस्थ बना रहता है और आनेवाले रोगो के भय से मुक्त बना रहता है तथा उसे शीघ्र बुढापा नहीं आता। रसायन की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि–

स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तु तद्वृष्य तद्रसायनम्।

अर्थात् जो औषधि व्यक्ति में ओज भाव को बढानेवाली होती है उसी को वृष्य और रसायन कहा जाता है। दूसरे प्रकार की औषधि व्याधि का शमन करती है परन्तु दोनो प्रकार की ओषध दोनो प्रकार के कार्य करने मे समर्थ होती है। चरक और सुश्रुत ने दो प्रकार के प्रयोजनो (स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य-रक्षण और रोगी व्यक्ति के रोग का नाश) का वर्णन किया है। इनमे स्वास्थ्य की रक्षा करना ही रसायन का मुख्य कार्य है। किन्तु वह दोनो ही कार्यो को सम्पन्न करता है।

प्रयोजन चास्यै स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य च विकारप्रशमनम्। इह त्वायुर्वेदप्रयोजन व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्ष· स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणञ्च।। (सु०सू० १/२२)

अर्थात् रसायन वह होता है जो शरीर मे रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढावे, बल वीर्य और आयु की स्थापना करनेवाला हो, बुढापे को रोकता हो, शरीर मे दृढता तथा दिव्यशक्ति को उत्पन्न करनेवाला हो। जैसा कि सुश्रुत ने सूत्र १/१५ मे बताया है–

रसायनतन्त्रं नाम वय स्थापनमायुर्मेधाबलकर रोगापहरणसमर्थञ्च।।
लाभोपायो हि शस्ताना रसादीना रसायनम्।। (च०वि० १/८)

रसायन की परिभाषा—इस प्रकार की है–श्रेष्ठ गुणो से युक्त रसादि धातुओ को प्राप्त करने का जो उपाय है उसी को रसायन कहते हैं। जब तक हमारे शरीर मे रसादि धातुए समान अवस्था में हैं तभी तक हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

विकृतिर्धातुवैषम्य साम्य प्रकृतिरुच्यते।

अर्थात् धातुओ की विषमता ही रोग या विकृति मानी जाती है और इनकी साम्यावस्था को प्रकृति या स्वास्थ्य कहते हैं। श्री शार्ङ्गधराचार्य ने–

रसायनञ्च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्।

अर्थात् जो औषध जरा और व्याधि का नाश करती है उसे रसायन कहते हैं–ऐसा माना है। दोनो मतो का अर्थ यही है कि जो शरीर मे उत्तम रस-रक्तादि धातुओ का लाभ करावे वह रसायन है और जो जरा और व्याधि का नाश करे वह भी रसायन है। क्योकि उत्तम रसादि धातु होने पर वृद्धावस्था नहीं आती और न ही उसमे रोग होते हैं। दोनो मत ठीक ही हैं। रसायन तन्त्र कहते ही उसे हैं जिसमें युवावस्था चिरकाल तक बनाये रखने के उपाय तथा आयु मेधा और बल बढाने के उपाय बताये गये हैं। इसी से रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढती है। यह आयुर्वेद के आठ (८) अगो मे से एक है। रसायन का अर्थ ऊपर बता दिया है और तन्त्र का अर्थ है शास्त्र, विद्या, ज्ञान, शाखा और सूत्र आदि।

रसायन की निरुक्ति के विषय में डल्हणाचार्य ने लिखा है–**'भेषजाश्रितानां रसवीर्यविपाकप्रभावपरमायुर्बलवीर्याणां वय:स्थैर्यकराणामयनं लाभोपायो रसायनम्**—रस+अयन मिलकर रसायन बनता है।

रस्यते आस्वाद्यते इति रस:।

रसनेन्द्रिय (जिह्वा) से जिसका आनन्द लिया जाता है उसे रस कहते हैं। यह छह प्रकार का होता है–मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय भेद से।

तत्र 'रस'गतौ धातु:, अहरहर्गच्छतीत्यतो रस:।

जो रात-दिन चलता रहता है उसे रस कहा जाता है। क्योंकि यह पचे हुए आहार का तेज रूप है और सभी धातुओं का पोषण करता है, इसलिए इसे रस कहा है। यह शब्द की तरंगों के समान सभी दिशाओं में अग्निशिखा की तरह ऊपर की ओर और जलधारा के समान नीचे की ओर बहता हुआ सारे शरीर में (रस) दौडता हुआ घूमता रहा है। सुश्रुत ने कहा है–

आहारस्य सम्यक् परिणतस्य यस्तेजोभूत: सार: परमसूक्ष्म स रस इत्युच्यते। (सु०सू० १४/३)

तत्रैषा सर्वधातूनामन्नपानरस. प्रीणयिता। (सु०सू० १४/११)

स शब्दार्चिर्जलसन्तानवदणुना विशेषेणानुधावत्येव शरीरं केवलम्।। (सु०सू० १४/१६)

अयन शब्द का अर्थ करते हुए लिखा है–**ईयते अनेन इति अयनम्।** अर्थात् मार्ग, जिसके पर्यायवाची शब्द हैं–वर्त्म, मार्ग, अध्वा, पन्था, पदवी, सृति, सरणि, पद्धति, पद्या, वर्तनी और एकपदी। इस प्रकार रस का अयन या मार्ग रसायन कहलाता है। औषधियो में रस, गुण, वीर्य, विपाक और प्रभाव निहित होते हैं। इन सबका शरीर में आत्मसात् होकर वह पुष्ट तथा रोगक्षम दीर्घायु बल मेधा पौरुष प्रदान करनेवाले औषध या उपाय ही रसायन होते हैं। रस कहने से सभी धातुओ का ग्रहण कर लेना चाहिये। इस प्रकार उत्तम रसादि धातुओ के प्राप्त करने का मार्ग ही रसायन है। रसायन भी चिकित्सा ही का भेद है। इसके भी अनेक पर्याय हैं। चिकित्सित, व्याधिहर, पथ्य, साधन, औषध, प्रायश्चित्त, प्रशमन, प्रकृतिस्थापन, हित और भेषज।

स्वास्थ्यकर और रोगनाशक ये दो भेद हैं औषध के। चरकाचार्य का कथन है कि जो व्यक्ति उच्च मनोबल, प्रखर बुद्धि, श्रेष्ठ शरीर बल और उत्तम मन शक्तियुक्त हो और इस लोक तथा परलोक मे कल्याण चाहते हैं उनको इन तीन एषणाओ की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते रहना चाहिये। ये हैं–(१) प्राणैषणा, (२) धनैषणा (३) परलोकैषणा।

इह खलु पुरुषेणानुपहतसत्वबुद्धिपौरुषपराक्रमेण हितमिह चामुष्मिश्च लोके समनुपश्यता तिस्र एषणा. पर्येष्टव्या भवन्ति। तद्यथा–प्राणैषणा धनैषणा परलोकैषणेति। आसा तु खल्वेषणाना प्राणैषणा तावत्पूर्वतरमापद्येत। कस्मात् प्राणपरित्यागे हि सर्वपरित्याग·। (चरकसूत्र ११/३-४)

इनमे सबसे पहली और प्रधान एषणा प्राणो की ही है। यदि प्राण ही नहीं रहेगे तो फिर सभी अन्य सुख-सुविधा स्वय ही नष्ट हो जायेगी। किसी कवि ने क्या ही सुन्दर बात कही है–

चेतोहरा युवतय सुहृदोऽनुकूला
सद्बान्धवा प्रणतिनम्रगिरश्च भृत्या:।
गर्जन्ति दन्तिनिवहास्तरलास्तुरंगा
सम्मीलिते नयनयोर्न हि किञ्चिदस्ति।।

कोई राजा कह रहा है कि मेरे राजमहल मे मनोहारिणी सुन्दर युवतिया हैं, मेरे मित्र मेरे अनुकूल रहते हैं, सभी बन्धुबान्धव सज्जन हैं, सभी अनुचर नतमस्तक होकर हाथ जोडकर मेरे आदेश के पालन मे तत्पर रहते हैं और नम्रवाणी बोलते हैं, बडे-बडे दातोवाले महाकाय हाथी मेरे द्वार पर गर्जते रहते हैं और हवा से बाते करनेवाले तेज दौडनेवाले घोडो की कतारे हिनहिनाती रहती हैं, अर्थात् इतना वैभव है मेरा, परन्तु जहा ये आखे बन्द हुई मेरा कुछ भी नहीं रहेगा। इसलिये प्राणैषणा सबसे प्रधान है। वेदो मे भी दीर्घायु और मेधा, स्मृति, कान्ति सहित इस शरीर की कामना की गई है तथा ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे प्रभो! हम शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के साथ हंसते खेलते दीर्घायु को प्राप्त करें–

प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयु प्रतर दधाना। (ऋग्वेद १०/१८/३)

आलस्य रहित होकर कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिये। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का दूसरा मन्त्र है–'**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छत समा·।**' अर्थात् वेद के एक मन्त्र मे प्रार्थना की गई है–**पश्येम शरद: शतम्, जीवेम शरद: शतम्, बुद्धयेम शरद. शतम्, रोहेम शरद शतम्। पूषेम शरद. शतम्, भवेम शरद· शतम्, भूयेम शरद शतम्, भूयसी शरद: शतात्।।**१९/६७।। अर्थात् हम सौ बरस तक जीवे, देखे, जाने, उन्नति करते रहे, पुष्ट बने रहे, स्थिर रहे, इससे भी अधिक आयुवाले हो।

रसायन का इतना प्रभाव होता है कि च्यवन ऋषि रसायन के सेवन से बुढ़ापे से फिर युवा बन गये थे। आधुनिक विद्वान् भी चिर यौवन की प्राप्ति हेतु अनेक शोध कर रहे हैं। जर्मनी मे इस पर अनुसन्धान चल रहा है जिसमे

रसायन सेवन व योगासनो का बडा भारी महत्त्व प्रकट किया जारहा है। रसायन योग चरक सुश्रुत वाग्भट्ट ने अपने-अपने ग्रन्थों में अनेक दिये हैं जो बड़े ही सफल सिद्ध होरहे हैं।

रसायन का प्रयोजन व फल

आहार से उत्पन्न रस ही शरीर का पोषण करता है। यही रस सब शारीरिक धातुओ का तर्पण करता है–

तत्रैषा सर्वधातूनामन्नपानरस. प्रीणयिता।। (सु०सू० १४/११)

पुरुष उत्पन्न ही रस से होता है इसलिये मनुष्य को चाहिये कि वह सावधानी से अन्नपान तथा आचार का सेवन कर रस की रक्षा करे–

रसजं पुरुष विद्याद्रस रक्षेत्प्रयत्नत.।
अन्नात्पानाच्च मतिमानाचाराच्चाप्यतन्द्रित.।। (सु०सू० १४/१२)

रसायन सेवन से ही उत्तम रस रक्तादि धातुए उत्पन्न होती हैं। इसी से रस-रक्तादि धातुओ से युक्त शरीर बनता है। इस कारण न मनुष्य वृद्ध होगा और न ही रोगी बनेगा। इस प्रकार मनुष्य को रसायन आधि-व्याधि से मुक्त रखकर ऊर्जासम्पन्न दीर्घायु बना देता है। रसायन औषधियो के सेवन से धातुओ की वृद्धि होकर शरीर रोगरहित रहता है।

रसायन रसरक्तादीनामयनमाप्यायनं रसायनमथवा रसाना रसवीर्यविपाकादीनामायु-प्रभृतिकारणानामयनं विशिष्टलाभोपाय., रसायनं तदर्थतन्त्रं रसायनतन्त्रम्।। सु०सू० १/७३।।

रसायन सेवन से मनुष्य की आयु, वीर्य, स्मरणशक्ति, मेधा, आरोग्यता, तरुणावस्था, शरीर की कान्ति, वर्ण, उदारता, देह व इन्द्रियो के बल मे उत्तम स्थिति रहना, वाक्सिद्धि (जो कुछ कहे वह सिद्ध होजाय) स्वभाव मे नम्रता, शरीर मे सुन्दरता की स्थापना करना सभव है। अर्थात् रसायन से ही पुरुष मे ऊपर कहे गुणो की उत्पत्ति होजाती है।

दीर्घमायु· स्मृति मेधामारोग्यं तरुणं वय·।
प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबल परम्।
वाक्सिद्धि प्रणति कान्तिं लभते ना रसायनात्।।
(च०चि० १/१/७-८)

सौ वर्ष से भी अधिक आयु रसायन से मिलती है और दारुण रोग दूर होते हैं। इससे बुद्धि परिष्कृत होकर धारणाशक्ति अधिक तीक्ष्ण होजाती है। यह रसायन **"वाराहीकन्द रसायन"** है। स्वाभाविक रूप से उत्पन्न भूख, प्यास, वृद्धावस्था और मृत्यु भी रसायन सेवन से दूर भागती है। सोम नामक रसायन के सेवन से मनुष्य हजारो वर्षो तक जीता है–

ओषधीना पतिं सोममुपयुज्य विचक्षण.।
दशवर्षसहस्राणि नवां धारयते तनुम्।। (सु०चि० २९/१४)

यह सुश्रुत का वचन है। सोम से सिद्ध पुरुष गगनविहारी होजाता है। इस जैसे और भी रसायन हैं जो दो हजार वर्ष तक मनुष्य को जीवित रख सकते हैं।

चरत्यमोघसकल्पो नभस्यम्बुददुर्गमे। (सु०चि० ३०/७)

सुश्रुत के इस वचन से सिद्ध है कि मनुष्य रसायन सेवन से बादलो से घिरे आकाश मे भी जैसी इच्छा लेकर चाहे उड सकता है। परन्तु आजकल इन औषधियो की प्राप्ति नहीं है। रसायन का एक भेद आचार रसायन भी है। जो मनुष्य को देवता बना देता है। मनु महाराज ने भी इसे प्रथम धर्म कहा है।

आचार· प्रथमो धर्मो मनुना परिकीर्तित·।।

इसके सेवन से पुरुष रज और तम रहित होकर अद्भुत सत्वगुणभूयिष्ठ मनवाला होजाता है।

चरक ने जिन छह प्रकार की चिकित्सा का वर्णन किया है उनमे 'रसायन' बृहण के अन्तर्गत आता है। रसायन का सेवन वार्धक्य में होने से धमनीकाठिन्य रोग को प्रचुर मात्रा मे रोक सकते हैं। महर्षि सुश्रुत ने लिखा है कि शीतल जल, दुग्ध, मधु और घृत मे से दो-दो या एक-एक का या चारो का एक साथ सेवन करना प्रात काल मे रसायन होता है।

शीतोदकं पय: क्षौद्रं सर्पिरित्येकशो द्विश·।
त्रिश: समस्तमथवा प्राक्पीतं स्थापयेद्वय:।। (सु०चि० २७/६)

सदाचार का पालन भी रसायन के समान होता है। सदाचार है–पहले भोजन के पचने पर ही दूसरा भोजन करना, मल-मूत्रादि वेगो को न रोकना, ब्रह्मचारी रहना, किसी को भी शारीरिक या मानसिक पीडा न देना, दु·साहस छोड देना भी आयु के वर्धक हैं।

आयुष्यं भोजन जीर्णे वेगाना चाविधारणम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च साहसानां च वर्जनम्।। (सु०चि० २८/२८)

मनुष्य यदि सच बोले, क्रोध न करे, अन्तर्मुखी इन्द्रिया रक्खे, अध्यात्म की ओर मन करे, शान्त रहे, किसी को न सतावे, शास्त्रोक्त सदाचार का पालन करे, तो समझना चाहिये कि यह व्यक्ति नित्य रसायन सेवी है।

सत्यवादिनमक्रोधमध्यात्मप्रवणेन्द्रियम्।
शान्तं सद्वृत्तनिरतं विद्यान्नित्यरसायनम्।। (अ०हृ०उ० ३९/१८०)

आचार रसायन के साथ रसायन औषध का सेवन करनेवाला सब कामो मे सफल और दीर्घायु होता है एव दोनो लोको मे सुख भोगता है।

गुणैरेभि· समुदित: सेवते यो रसायनम्।
निर्वृत्तात्मा स दीर्घायु: परत्रेह च मोदते।। (अ०हृ०उ० ३९/१४)

जो पुरुष आहार विहार दिन व रात्रिचर्या आयुर्वेदानुसार करता हो, पुत्र कलत्र भृत्य जिसके अनुकूल व्यवहार करते हो, विनम्र हो, किसी भी कार्य मे प्रज्ञापराध न करता हो, तो समझना चाहिये कि यह पुरुष पूर्णरूप से रसायन सेवी है।

शास्त्रानुसारिणी चर्या चित्तज्ञा. पार्श्ववर्तिन.।
बुद्धिरस्खलितार्थेषु परिपूर्णं रसायनम्।।

इसे परिपूर्ण रसायन कहते हैं। रसायन को रोगनाशक शक्ति के लिये भी प्रयोग किया जाता है। चिकित्सा के क्षेत्र मे रसायन प्रयोग प्रमुख रूप से किया जाता है। आचार्य शार्ङ्गधर ने रसायन को मुख्यरूप से जरानाशक रूप मे स्वीकार किया है तथा व्याधिनाश मे उसका गौणपक्ष ही स्वीकार किया है आमलकी, हरीतकी, भल्लातक, च्यवनप्राश आदि रसायनो को इस श्रेणी मे रक्खा गया है। च्यवनप्राश के बारे मे प्रसिद्ध है कि इसको खाकर महर्षि च्यवन बुढापे से मुक्त होकर पुन युवा होगये थे–'**अस्य प्रयोगाच्च्यवनो वृद्धोऽभूत्पुनर्युवा।**'

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/एच.आर./49/रोहतक/99 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ४ १४ दिसम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

बौद्ध बनना समस्या का हल नहीं है

पाकिस्तान बंगला देश व भारत के सारे ईसाई और मुसलमान हिंदुओं की छुआछूत का परिणाम हैं। छुआछूत, जन्मजात, ऊंचनीच, अज्ञान स्वार्थ और पाखण्ड का फल है। हमारे लिए इससे दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है कि हम कुत्ते के साथ रह सकते हैं, उसके झूठे पात्रों को काम में ला सकते हैं। परन्तु एक मनुष्य के पात्रों को अस्पृश्य समझते हैं। क्या यह विडम्बना नहीं है। यदि यही व्यक्ति ईसाई मुसलमान बनकर आता है तब उसके प्रति हमारा दुर्भाव बदल जाता है। हम उससे भय खाते हैं। उसके प्रति आदर दिखाना चाहते हैं। इसलिए शिक्षा एव सस्कार दिये बिना इन विचारों को मिटाना संभव नहीं। बाकी उपाय मन समझाने के लिए या बहकाने के लिए हो सकते हैं। आवेश में की जाने वाली क्रिया प्रतिक्रिया समाज में आक्रोश तो उत्पन्न कर सकती है परन्तु समस्या का समाधान नहीं कर सकती। रामराज से उदित राज बन जाना बस प्रतिक्रिया है समस्या का समाधान नहीं।

आज की शिक्षा और खुलेपन ने बाह्य रूप से छुआछूत और ऊंचनीच को ढक दिया है तो दूसरी ओर राजनीति तथा आरक्षण ने इस ऊचनीच के मूलकारण जन्मगत जाति-पात की व्यवस्था को संस्थागत रूप से दृढ किया है। आरक्षण एक श्रेष्ठ विचार से अपनाया गया समाज विघटन करने वाला कार्य है। आरक्षण को अधिकार मानने वाला जन्मगत जाति के अभिशाप से कभी मुक्त नहीं हो सकता। जैसे उच्च जाति वालों ने मानसिक दृष्टि से अपने ऊंचा होने का भाव पाल रखा है। जिसके कारण निम्न जाति वालों में कुण्ठा, आक्रोश उत्पन्न होता है। उसी प्रकार आरक्षण से निम्न समझे जाने वाले उस वर्ग को व्यावहारिक दृष्टि से कार्यालयों,

— प्रो० धर्मवीर

राजनीति, प्रशासन में उच्चता प्राप्त होती है दूसरे वर्ग में कुण्ठा होना उतना ही स्वाभाविक है। आज दोनों वर्ग अपनी-अपनी सुविधा छोडने के लिये कतई तैयार नहीं फिर समाज में समता का भाव कैसे आ सकता है।

आज कल समस्याओं में राजनीति आ जाने से समस्या अधिक जटिल हो जाती है। जातिवादी समस्या आज केवल सामाजिक क्षेत्रिय समस्या नहीं रह गई है समस्या के पीछे राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्य भी जुड गये हैं। समाधान के सन्दर्भ मे उनको नहीं भुलाया जा सकता। ईसाई और इस्लामिक सगठन हिन्दू समाज की परिस्थितियों का लाभ उठाने के पूरे प्रयास में लगे हुए हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक समाज में इन कार्यों के प्रतिकार का विचार उतना प्रबल नहीं था परन्तु आज उस खतरे की समझ समाज के कुछ लोगों मे बढी है। परिणामस्वरूप अशिक्षित ग्रामीण और वनवासी लोगों में धर्मान्तिरण की प्रक्रिया बाधित होने लगी है। अत: ईसाई और इस्लामिक सगठन धर्मान्तिरण का ऐसा मार्ग तलाशने लगे हैं जिससे उनका उद्देश्य भी पूर्ण हो सके और धर्मान्तिरण के विरोध का भी सामना न करना पडे। वे हिन्दू समाज की बुराइयों का हिन्दुओ में विघटन और वर्ग सघर्ष उत्पन्न करने में प्रयोग कर रहे हैं। उसी कडी में इस प्रचारित धर्मान्तिरण में केवल भावना नहीं इसके पीछे स्वार्थ भी है। इस धर्मान्तिरण के आयोजक पुराने रामराज और नये उदितराज ने स्वय स्वीकार किया है कि वे चर्च के लागों से मिले हैं ताकि दलित ईसाईयों को आरक्षण दियें जाने की माग को सफल किया जा सके। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए उनसे सहयोग मांगा है। उनका कहना है यदि बाहर से उन्हे अपने कार्य के लिए आर्थिक सहयोग मिलेगा तो अवश्य प्राप्त करेंगे। इसलिए इस प्रकार के कार्यक्रमों को केवल हिन्दू समाज की बुराई के प्रति आक्रोश नहीं समझा जाना चाहिए अपितु बुराइयो के बहाने हिन्दू विरोधी ताकतों द्वारा हिन्दू समाज में विघटन का प्रयास प्रमाणित होता है।

हमे इस क्रम मे यह नहीं भूलना चाहिए उदितराज के बौद्ध या ईसाई बन जाने से उनके ऊच-नीच का लेवल समाप्त हो जायेगा। वे अपने को उच्च समझने वाले हिन्दुओ के लिए तो नीचे रहेगे परन्तु यह ऊच-नीच तो तथाकथित इन उदार धर्मों मे भी उसे कट्टरता के साथ मिलेगी। क्या सब ईसाई ईसाइयों को समान दृष्टि से देखते हैं जो कैथोलिक अपने प्रोटेस्टेण्ट भाई को शत्रु तुल्य समझते हैं वे आपके साथ समानता का व्यवहार कर सकेंगे। क्या उनमे काले-गोरे का भेद हमारे जाति भेद से बढ कर नहीं है। गांधी जी के हरिजन ने दलितों को हरिजन नाम दिया उससे दलित का उद्धार तो नहीं हुआ परन्तु हरिजन शब्द दलित का पर्याय बनकर रह गया। इतना ही क्यों आजआर्य समाज में ऐसे प्रसग देखने मे आते हैं कोई व्यक्ति महाशय या आर्य लिखता है तो लोग समझते हैं यह पिछडी जाति का है इसलिए महाशय या आर्य लिखता है। हिन्दू की जाति व्यक्ति का पीछा नहीं छोडती वह ईसाई या मुसलमान भी हो जाये तो भी उसकी जाति उसके साथ ही जाती है। समाज में जब पारिवारिक कार्य वह करेगा तो औरों के प्रति उसका और उसके प्रति औरों का मानदण्ड जन्मगत जाति ही होगा।

ईसाई बन जाने से दलितों को उच्च स्थान मिल जायेगा ऐसा सोचना सही नहीं होगा। ईसाइयों में ऊच-नीच का सघर्ष उसी प्रकार है जैसा हिन्दू समाज मे देखने में आता है। जहा सवर्ण समझे जाने वाले लोग ईसाई बने हैं, उन्होंने दलित ईसाइयो को चर्च मे घुसने से रोका है सघर्ष हुआ है। बाकी बातो मे समानता देना तो दूर की बात है। इसलिए समाज की व्यवस्था मे बदलाव विचारों के बदलाव से सभव है। समाज में समानता का आधार रोटी-बेटी का सम्बन्ध माना जाता है। इस विषय में ईसाई, मुसलमान हिन्दू सब एक जैसी मानसिकता के लोग हैं। क्या ऊच-नीच का भाव नीची समझी जान वाली सभी जातिया समानता का व्यवहार करती हैं ऐसा नहीं है। उनमें भी एक दूसरे से अपने को ऊचा समझने का भाव उसी प्रकार है जैसा ऊची समझने वाली जातियों में है अत दलित समझे जाने वाले लोगो में भी परस्पर समानता नहीं है। ऊच-नीच ब्राह्मणों में है ऊच-नीच राजपूतो मे है, यह ऊच-नीच स्वार्थ और अज्ञान का परिणाम है। जब तक समाज मे विवाह सम्बन्ध और व्यवहार समान नहीं होगा तब तक यह ऊच-नीच हमारा पीछा नहीं छोड सकती।

आज रामराज उदितराज हो गये, क्योंकि वे राम के विरोधी हैं कल उन्हे अपने को मनुष्य कहना भी छोडना होगा क्योंकि मंनु विरोधी हैं और मनुष्य का अर्थ मनु की सन्तान हैं। परसो उन्हें अपने को हिन्दुस्तानी भी कहना बन्द करना होगा क्योंकि यह देश तो हिन्दुओं का है। वे भारत छोडकर भी जायेगे तो भी हिन्दुस्तानी कहलायेंगे। इससे बौद्ध हो जाने से कोई ऊचा हो जाएगा और उसकी विडम्बनायें समाप्त हो जायेगी, ऐसा सम्भव नहीं, हमे समाज और व्यक्ति के सुधार का लम्बा रास्ता ही अपनाना होगा और उसका कोई विकल्प नहीं है। (परोपकारी से साभार)

वैदिक-स्वाध्याय

जीवन सर्वस्व परमात्मा

आ हि ष्मा सूनवे पितापिर्यजत्यापये।
सखा सख्ये वरेण्यः (ऋ० १ २६ ३)

शब्दार्थ—(पिता सूनवे) पिता पुत्र के लिये (हि स्म आयजति) सर्वथा सहायता प्रदान करता है; कमी पूरी करता है (आपिः आपये) बन्धु बन्धु के लिये (वरेण्यः सखा सख्ये) श्रेष्ठ मित्र-मित्र के लिये सर्वथा सहायता करता है।

विनय—ससार मे पिता पुत्र-वात्सल्य से प्रेरित होकर पुत्र के लिये क्या नहीं करता ? बन्धु, बन्धु के लिये जी जान से पूरी सहायता करता है, श्रेष्ठ मित्र अपने मित्र के लिये सब कुछ अर्पण करने को उद्यत रहता है। पर हे प्रभो ! तुम तो मेरे सब कुछ हो। तुम्हारे होते हुए मुझे किसी चीज की क्यों कमी रहनी चाहिए। तुमसे मेरा जो सम्बन्ध है वह घनिष्ठ, अटूट सम्बन्ध है—उसे मैं किस नाम से पुकारू ? उस परिपूर्ण सम्बन्ध का वर्णन नहीं हो सकता। मैं ससार की भाषा मे तुझे कभी पिता, कभी बन्धु, कभी सखा, पुकारता हूं। पर हे प्यारे ! हे मेरी आत्मा ! इन शब्दो से मेरा-तेरा वह सम्बन्ध व्यक्त नहीं हो सकता। जब तै देखता हूं कि तुम मेरे पैदा करने वाले और लगातार पालनेवाले हो, तब मैं अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करने के लिये तुम्हे 'पिता पिता' पुकारने लगता हू और तुमसे पुत्र-वात्सल्य पाने के लिये रोने लगता हू। जब मुझे तुम्हारे घनिष्ठ सम्बन्ध की याद आती है, उस अटूट सम्बन्ध की जो कि मेरा ससार मे और किसी से भी नहीं है, तब मैं बन्धुभाव मे होकर तुम से बाते करने लगता हू। और जब देखता हूं कि मैं भी तुम्हारी तरह आत्मा हूं और चेतन हू तुम भले ही मुझसे बहुत बडे 'वरेण्य' होओ, तो मैं सखा बनकर तुम्हे 'वरेण्य सखा' नाम से सम्बोधन करता हूं। हे प्रभो ! तुम मुझे पुत्र मानो, बन्धु या सखा मानो, कुछ मानो, हर तरह मैं तेरा हू और तुम मेरे हो। हे मेरे ! तो मुझ अपने को तुम कैसे छोड सकते हो ? मैं अपूर्ण अशक्त बालक तेरा हू, इसलिए मेरी सहायता किये बिना तुम कैसे रह सकते हो ? तुम परिपूर्ण हो, तुम सदा मुझे देते रहो और मैं लेता रहू यही तुम्हारी तरफ से मेरा यजन है। तुमसे मेरा सम्बन्ध इसी रूप मे कायम है। बडा छोटे को दिया ही करता है, इसलिये मै क्या मागू ? मेरी जरूरत को समझना और पूरी तरह पूर्ण करना तुम स्वय ही करोगे। हे मेरे ! तुम स्वय ही करोगे। बस, मैं तेरा हू, मैं तेरा हू, और क्या कहू, हे मेरे सर्वस्व ! हे मेरे सब कुछ ! मैं तेरा हू। **(वैदिक विनय से)**

भ्रष्ट इतिहास बदलने के सही निर्णय पर बधाई

पिछले करीब तीन-साढे-तीन-सौ साल से इस देश की प्रतिभा पर हावी पश्चिम विद्वानो उनके राजनीति प्रतिनिधियों और उनके भारत वंशी मानसपुत्रों ने इस देश के कोमल मन को इतना कोसा है, उसे इतना धिक्कारा-दुत्कारा है, उसे स्वयं को छोटा समझने को इतना मजबूर किया है कि हम भारतवासी अपनी निगाह में खुद ही गिर गए हैं। हमें वह कहा गया जिसे कहने की कतई जरूरत नहीं थी। हम पर वे चीजें थोपी गई जो हमने न कभी की थीं, न कही थी। हमारे भीतर के अवगुण तलाश दिये गए जिनका अस्तित्व ही नहीं था। कुछ गुण तो हमारे अन्दर भी रहे होंगे। कुछ बात तो हमारे में भी रही होगी कि यूनान मिस्र, रोमां के इस जहा से मिट जाने के बावजूद हमारी हस्ती नहीं मिटी। पर उन खूबियों पर, उन खासियतो पर खडिया पोत दी गई।

वेदों के भ्रष्ट अनुवाद करके संसार भर में प्रचारित किए गए। हमारी देव-(विद्वानो की) भाषा सस्कृत और आर्य (श्रेष्ठ) भाषा हिन्दी थी, उन पर खडिया पोत कर लिखा गया 'अग्रेजी, अग्रेजी,अग्रेजी'। जहा लिखा था 'कालिदास', उसे मिटा कर वहा लिख दिया गया 'शेक्सपियर'। जहा लिखा था 'कबीर' उसके पास लिख दिया था 'हिन्दू या मुसलमान?'। हमारा लिखा सारा पोतकर कुछ न कुछ अवाछनीय लिख दिया गया। जहा 'शकराचार्य' लिखा था उसके पास उसका अर्थ लिख दिया गया 'बौद्धों की समाप्ति'। हमारे स्वर्णिम इतिहास के सारे मील-पत्थर बदलकर हमारी श्रेष्ठ सस्कृति ही नष्ट करने के सारे सामान जुटाए गए। अज्ञानी आक्रान्ताओ की तलवारें कुण्ठित हो चुकी थी। यह देख छली सयाने आक्रान्ता साम-दाम पर उतरे और आरण्यक या सामवेद के अरण्यगान-वाली अरण्य-सस्कृति को उन्होने जगली संस्कृति, सपेरों की सस्कृति, गडरियों के गीत, अन्धविश्वास-असभ्यता और धार्मिक आडम्बर आदि न जाने क्या-क्या कहकर संसार भर मे अपमानित किया। सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश के लिए कहीं-कहीं तो 'डाग्स ऐण्ड इण्डियन्स नाट एलाउड' (अर्थात् कुत्तों और भारतीयों का प्रवेश मना है') के सूचना-पट्ट तक लगाकर भारतीय दुत्कारे गए। साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने अपनी श्रेष्ठता प्रसिद्ध करने के लिए ऐसा ढेरों साहित्य रचाया, संसार-भर में वितरित किया और अपने अधीन दुनिया भर के पुस्तकालयों में पहुंचाया।

वहीं भ्रष्ट इतिहास रटा-रटाकर हमें भी दासता मे जकड़ा गया। पाश्चात्य (पिछडे) लेखक/शासक हमें सभ्यता (?) सिखाने आये थे, अहंकारवश वे हमें समझाने लगे कि हम क्या थे; यों हमारे मील पत्थरों के साथ मनमाना खिलवाड़ कर गए और साथ ही उन नकली मील पत्थरों को असली मानकर पढ़ने का पश्चिमी चश्मा भी पहिना गए। आजादी की लडाई में जब हमने अपना 'भारतवर्ष' बनाने के लिए लड़ाई तेज की, तो हमें नतीजा मिला, 'इण्डिया और पाकिस्तान'। और जब बचे खुचे इण्डिया को फिर से भारत वर्ष बनाने के मील-पत्थर गाडने शुरू किये तो अचानक जमीन में से एक-एक करके नकली मील-पत्थर निकलते रहे और पश्चिमी चश्मा पहिने काले अंग्रेज अपने स्वार्थ साधने के लिए उन्हीं की दुहाई देते आ रहे हैं।

जातियां कभी जिस्मानी आक्रमणो से नष्ट नहीं हुआ करती, उनका सर्वनाश आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पराजय से ही होता है। जिस राष्ट्र की अपनी सस्कृति कायम नहीं रह सकती वह सही मानी में राष्ट्र भी नहीं कहा जा सकता। वह तो केवल कठपुतली बनकर रह जाता है। किसी ऐसे सूत्रधार राष्ट्र की, जिसकी सिखाई बोली वह बोलता है, और फिर खेल खत्म होने पर उसी की झोली मे पड जाता है। इसलिए आजादी की आधी सदी के बाद ही सही, भ्रष्ट इतिहास बदलकर सही निर्णय पर पहुचना सच्ची राष्ट्र-भक्ति और उत्तम देश सेवा है। इस निर्णय पर अटल रहकर सरकार बधाई की पात्र है।

—विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त-बन्धु'
बी-१५४, लोक विहार, पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४

मुक्तक

—नाज़ सोनीपती

जंगबाजो में जग होने दो।
मैहवे तोपो-तुफ़ंग होने दो।।
'तालिबान' हों या कोई 'लादेन'।
क़ाफ़िया सब का तग होने दो।।
देखकर यह बताही का आलम।
ऐहले दुनिया को दंग होने दो।।
ज़ज्ब कर लेगी खुद जमीन उसे।
बारिश-ए-खिश्तो संग होने दो।।
जारी रहने दो 'नाज' मश्क सितम।
और सब को दबंग होने दो।।

सम्पादकीय–

आगामी ६ महीने में आर्यसमाज के प्रचार की कार्ययोजना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चला आ रहा विवाद अब समाप्त हो गया है। एक दिसम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तुरन्त प्रभाव से बुलाई गई बैठक में भी सर्वसम्मति से पूज्य स्वामी ओमानन्द जी को अन्तरग सभा के गठन का अधिकार दे दिया था, इससे अलग वर्ष १९९८ के बाद "हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, रोहतक" के नाम से अलग सगठन बनाकर काम कर रहे श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री गुडगांव ने भी उसके अस्तित्व को समाप्त कर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में विलय कर दिया और उन्होने स्वामी ओमानन्द जी के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास व्यक्त करते हुए पूरी निष्ठा से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ मिलकर काम करने का वचन दिया है। इस अवसर पर श्री भद्रसेन शास्त्री ने भी स्वामी ओमानन्द जी को सर्वाधिकार देने पर खुशी प्रकट की। श्री केदारसिंह आर्य ने भी अपने पिछले मतभेद भुलाकर मिलकर काम करने का प्रस्ताव किया। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा का पुनर्गठन कर दिया है तथा उसको माननीया न्यायाधीश मधु खन्ना ने ८ दिसम्बर को लोक अदालत के द्वारा भी स्वीकृति प्रदान कर दी है। अब हम सभी ने मिलकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संगठन को मजबूत बनाने के लिये मिलकर काम करना है। वेदप्रचार का कार्य तीव्र गति से चलता रहे इसके लिये हमें अपने वेदप्रचार मण्डलों को सक्रिय करना है और पूरे हरयाणे को सात भागों में बाटकर अपनी-अपनी जिम्मेदारी से आर्यमाज के प्रचार को बढाना है। प्रत्येक आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य समझकर पूरी निष्ठा के साथ दैनिक यज्ञ साप्ताहिक सत्संग व वार्षिक सम्मेलनो का आयोजन करते रहे और साप्ताहिक सत्सगो मे प्रति सप्ताह कम से कम दो नये व्यक्तियों को आमन्त्रित करके आर्यसमाज की विचारधारा से प्रेरित करते रहें। आगामी ६ महीने के लिये हम न्यूनतम कार्यक्रम की घोषणा करते हैं, जिसे पूरी तत्परता से सफल बनाने का प्रयास किया जायेगा।

सर्वप्रथम जनवरी मास मे गोहाना मे एक आर्य महिला महासम्मेलन किया जायेगा, जिसे आर्यजनता ने तन-मन-धन से सहयोग देकर सफल बनाना है और इसी सम्मेलन में आर्यसमाज मे महिलाओ की भागीदारी के लिए प्रत्येक गांव मे "महिला आर्यसमाज" भी स्थापित करने का प्रयास होगा। दूसरा सम्मेलन रोहतक मे फरवरी २००२ के अन्त में हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन नाम से होगा जिसमे हरयाणा के कोने-कोने से आर्यसमाजें, अपनी समाज का बैनर और ओ३म् का ध्वज लेकर सम्मेलन मे पधारेंगे, इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व मे एक विशाल शोभायात्रा भी निकाली जायेगी और आर्यसमाज के प्रचार की ठोस योजना प्रस्तुत की जायेगी। इससे अलग मार्च महीने में गाव माहरा में भक्त फूलसिह जयन्ती भी मनाई जायेगी, इस अवसर पर नवयुवकों द्वारा पूरे जिले में पदयात्रा और रैली निकालकर आर्यसमाज के प्रचार को गांव-गांव तक फैलाया जायेगा। ६ महीने में ५० नई आर्यसमाजो की स्थापना भी की जायेगी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सभी शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक परीक्षाओं का संचालन आवश्यक और नियमित रूप से किया जायेगा। इसके लिये सभा के अधीन अलग से एक कार्यालय की स्थापना की जायेगी, जिसका संचालन सभी संस्थाओं के सहयोग से ही किया जायेगा। सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के विवादों को भी शीघ्र दूर करने का प्रयास होगा। विद्वान् उपदेशकों और प्रभावशाली भजन मण्डलियों को भी नियुक्त करने की प्रक्रिया अपनाई जायेगी। आगामी ३ वर्ष के कार्यकाल में हरयाणा के तीनों जिलों के प्रत्येक गांव में आर्यसमाज की स्थापना के लक्ष्य को पूरा करेंगे। उपदेशक और पुरोहित तैयार करने के लिये भी एक विशेष कार्य योजना विचाराधीन है, जिसे आगामी अन्तरग सभा में विचार करने के लिये प्रस्तुत किया जायेगा। आज हम सभी मिलकर संकल्प लें कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अनुशासन में रहते हुए मिलकर महर्षि दयानन्द की विचारधारा को सर्वत्र फैलायेंगे, किसी भी आन्दोलन की विचारधारा जब उसके अनुयायियों के जीवन में पूर्णतया नहीं उतरती तो वह आन्दोलन फल्गू नदी की भांति दब दबकर चलेगा, ब्रह्मपुत्र की भांति उछल-उछल कर नहीं।

आर्यसमाज में ठहराव आने का मूल कारण यह है कि मनसा, वाचा, कर्मणा, हम ऋषिपुत्र नहीं रहे हैं, कभी आर्यों के चरित्र की धाक थी और अदालत में किसी आर्य द्वारा दी गई गवाही को जज भी सच मान लेता था, किन्तु आज स्थिति बदल गई है। अतीत पर हम गर्व कर सकते हैं, किन्तु वर्तमान हमें निराशा के घोर अन्धकार मे फैंक रहा है, आर्यसमाज मे आज भी मेधावी वाग्मी और तार्किक चिन्तको का अभाव नहीं है, अभाव है तो उस शक्ति और ओज का जो समाज राष्ट्र और विश्व का कायाकल्प करने मे तत्पर रहती है, मरु को उर्वरा और जड को चेतन बनाने में सक्रिय रहती है, दयानन्द किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, अपितु दयानन्द नाम है वैदिक सस्कृति का, राष्ट्र की अस्मिता का, विश्व शान्ति का, मानवता के संरक्षण एव सवर्धन का, दयानन्द नाम उस विराट् अग्नि का है जो अधविश्वासो, रूढियो, कुरीतियों और विषमताओं को जलाकर खाककर देती है, तथा जो अन्याय, अविद्या और शोषण से सदा सघर्षरत रहती है। दयानन्द नाम उस समग्र क्रान्ति का है जो भौतिक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान, गरिमा से झोंपडी और महल में एकात्मता व समन्वय स्थापित करती है। ऐसे अद्भुत पारस पत्थर को, ऐसी विलक्षण नागमणि को, ऐसे विलक्षण अमृत कलश को हमे विकृत होने से बचाना है। आज हम सभी सकल्प ले कि उस महामानव द्वारा दिखाये रास्ते पर अपने सुपने मतभेदो को भुलाकर, अपने दोषो को दूर कर दूसरे के गुणो को धारण करते हुए मिलकर आपसी वैमनस्य दूर करे, ईमानदारी से परिश्रम करते हुए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लिये अपने जीवन को आहुत करें, यही महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

–यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

शोक समाचार

बडे दुख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री रामनिवास गुप्ता, प्रधान आर्यसमाज काठमण्डी, सोनीपत का गत ४ दिसम्बर, २००१ को अचानक हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन होगया है। आर्यसमाज के महान् स्तम्भ स्व० श्री गुप्ता की रस्म तेरहवीं (शोकसभा) आगामी १६ दिसम्बर को आर्यसमाज मन्दिर, काठमण्डी, सोनीपत के प्रागण मे प्रात १० बजे होगी।

–सत्यवीरसिंह शास्त्री, मत्री, आर्यसमाज काठमण्डी, सोनीपत

सीट ४० हजार, फार्म १५ लाख कैसे होगा शिक्षा का विस्तार

दिल्ली वि वि. में स्नातक के विभिन्न कोर्सों के लिए केवल ४० हजार सीट हैं, जबकि शैक्षिक वर्ष २००१-२००२ में १५ लाख फार्म भरे गये, अर्थात् ४० हजार छात्रा-छात्राओं का दाखिला हुआ और लगभग १४ लाख ६० हजार फार्म अस्वीकार कर दिये गये। अर्थात् इतनी बडी सख्या में जो छात्र व छात्राए आगे शिक्षा जारी रखने के इच्छुक थे उनको उनकी इच्छा के विरुद्ध आगे की शिक्षा से वंचित कर दिया गया।

दिल्ली वि वि से संबंधित कालेजों की कुल संख्या ७९ है, जिनमें पर रेगुलर अंडर ग्रेजुएट कोर्सों बी ए बी काम और बी.एस सी आदि के लिए कुल ४० हजार सीटें उपलब्ध हैं। इससे जाहिर है कि इस वि वि में ४० हजार सीटें उपलब्ध हैं। इससे जाहिर है कि इस वि वि में ४० हजार छात्र-छात्राओ का ही दाखिला हो सकता है। जबकि इस बार डिप्टी डीन आफ स्टूडेन्ट वेलफेयर राजेन्द्र गुप्ता के अनुसार १३,१६,५०० कामन फार्म यूनीवर्सिटी की ओर से बेचे गए जबकि पिछले साल १२ लाख ६८ हजार फार्म बेचे गए थे। इस बार यूनिवर्सिटी के अलावा बड़ी संख्या में कालेजों ने स्वयं भी अपने फार्म छपवाये थे। १४ दिवसीय कार्रवाई के पहले दिन ६ जून को ३ लाख ३२ हजार से ज्यादा फार्म बेचे गये थे, दूसरे दिन बेचे गये फार्मों की संख्या भी लगभग तीन हजार थी। शुरू में इंटरनेट पर फार्म उपलब्ध नहीं थे। लेकिन बाद में लागों ने वहां से भी डाउन लोड करके फार्म निकाले और वि वि में जमा कराये। इस प्रकार वि.वि अधिकारियों के अनुसार फार्मों की कुल सख्या १५ लाख के करीब रही।

प्रवेश कार्रवाई के दूसरे स्तर पर यूनीवर्सिटी के अन्तर्गत तमाम कालेजो के अधिकारियों ने अपने-अपने यहां आये हुए फार्मों की छानबीन की और साक्षात्कार के लिए बुलाए जाने योग्य छात्र व छात्राओं की लिस्ट तैयार की। अर्थात् १२वीं कक्षा में पास हो जाना स्नातक कक्षा में प्रवेश हो जाने के लिए काफी नहीं था। स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए १२ वीं कक्षा पास हो जाने से यकीन नहीं किया जा सकता और न ही इस बुनियाद पर केई गारंटी दी जा सकती है। अब स्थिति यह है कि सबसे ज्यादा अंक पाने वालों को छांटा जाता है और सबसे ज्यादा अंक प्राप्त करने वालों से अपने यहा की संख्या पूरी कर लेते हैं। इस प्रकार पहली कट आफ लिस्ट के अनुसार आर्ट और विज्ञान साईड के मुकाबले कामर्स कोर्स के लिए कोशिश करने वालों का प्रतिशत बहुत ऊंचा रहा, जबकि इलेक्ट्रानिक्स और बायो केमिस्ट्री का प्रतिशत कामर्स के लगभग ही रहा।

कई कालेजों में बी.काम पहली कट ऑफ लिस्ट ९० प्रतिशत को छू रही थी। बी काम आनर्स के तहत हिन्दू कालेज में यह ९५.२५ से ८९ २५ प्रतिशत के बीच रहा अर्थात् जिन छात्र-छात्राओं ने १२वीं कक्षा मे इतने अक प्राप्त कर लिये, केवल वही प्रवेश योग्य करार दिये गये जबकि बाकी को शिक्षा से वंचित कर दिया गया। आई.पी कालेज में यह अंक ९०.२५ से ८७ २५ प्रतिशत और रामजस कालेज में ९१ से ८७ प्रतिशत रहा।

विचार योग्य बात यह है कि जहां राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के विस्तार पर जबरदस्त जोर दिया जा रहा है और सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं संगठन और वैयक्तिक शैक्षिक जागरूकता के लिए आन्दोलन चला रहे हैं, नारेबाजी द्वारा शिक्षा प्रेमी और शैक्षिक विद्वानता का सर्टीफिकेट प्राप्त करने और अपने सिर पर इसका मुकुट रखने के लिए प्रयास कर रहे हैं। जिस कारण १४ लाख ६८ हजार फार्म अस्वीकार किये जा रहे हैं। ऐसे में जागरूकता के लिए आन्दोलन चलाने, नारेबाजी और शिक्षा से जनता में रुचि न होने का झूठा प्रचार करने की बजाय अकेले दिल्ली में १५ लाख से ज्यादा सीटें उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे हर साल प्रवेश की इच्छा रखने वालों की संख्या की जरूरत पूरी की जा सके। यही स्थिति लगभग पूरे देश विशेषकर उत्तर भारत में है।

(कान्ति से साभार)

दारू पीना छोड़ दियो

दयानन्द के भारत में भाई दारू पीना छोड़ दियो।
घर की दुश्मन लाल परी दारू की बोतल फोड़ दियो।।

१. इक दारू सौ ऐब हों इसमे घर का कुण्डा होज्या सै,
धन का होज्या नाश साथ में माथा खुण्डा होज्या सै।
दारू का इक बनै माफिया टोल वो गुण्डा होज्या सै,
सेहत का हो नाश साथ में चेहरा भुण्डा होज्या सै।।
दारू की जो करैं कमाई उसकी संगत छोड दियो,
घर की दुश्मन लालपरी दारू की बोतल फोड दियो।

२. राम-कृष्ण के भारत में भाई दूध दही का खाना सै,
दारू पीकै पाप कमाना जीवन नरक बनाना सै।
घूट मारकै बनै नशैडी अपना होश गंवाना सै,
मां-बेटी नै बुरा कहै यों अपनै बट्टा लाना सै।।
पाप कर्म का छोड कै रस्ता धर्म-कर्म में मोड दियो,
घर की दुश्मन लालपरी दारू की बोतल फोड़ दियो।

३. मेहनत की जो करी कमाई उसकी दारू लावं सैं,
मिलकर के चण्डाल चौकडी सारी नै पी जावैं सैं।
दारू पीकै करैं लडाई बालक बुरा मनावैं सैं,
अगड अड़ौसी आपस में निंदा करके बतलावैं सैं।।
दारू पीकै घर में आवै उसकी बांह मरोड़ दियो,
घर की दुश्मन लालपरी दारू की बोतल फोड़ दियो।

४. दारू पीनी बन्द होगी तो रामराज सा आ ज्यागा,
दयानन्द के सपनों का भाई आर्यसमाज छा ज्यागा।
युवाशक्ति बनै कृष्ण सी, सच्ची शिक्षा पा ज्यागा,
आर्यजगत् भारत 'बंसल' फिर विश्वगुरु कहला ज्यागा।।
दारू सै जो बचै कमाई, बचत के खाते जोड़ दियो,
घर की दुश्मन लालपरी दारू की बोतल फोड़ दियो।।

—**रामनिवास बंसल**, प्रवक्ता (से.नि.)
६१/६, आश्रम रोड, चरखीदादरी-१२७३०६

सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को

(जोशीली कविता)

—ब्र. मनीष आर्य मकड़ौली

आलसी निकालते हैं गाली तकदीर को।
उद्यमी बनाते मित्र सदा तदबीर को।।
दु:शासन खींचता है द्रौपदी के चीर को।
घुसके रसोइयों में कुत्ते खाते खीर को।।
रावणों के वध हेतु भेजो रघुवीर को।
सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को।।१।।

जिस दिन हुआ अपहरण विमान का।
रंग काला होगया था पूरे आसमान का।।
अमृत का सर भी विषैला-नीला होगया।
यशवन्तियों का यश-सूर्य पीला होगया।।
भूखे भेडियों को मांस डालना न चाहिये।
जेल में जंवाइयों सा पालना न चाहिये।।
पानी पी-पी कोसते थे रूबिया के बाप को।
देश कहां भूल पायेगा तुम्हारे पाप को।।
केंचुवा न खा पायेगा गाय के पनीर को।
सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को।।२।।

व्यर्थ की विनम्रता नपुंसक बनाती है।
क्षुद्र चिंगारी पूरी आग बन जाती है।।
बस चलवाने से न युद्ध टल जाता है।
दानवों को युद्ध का विराम कब भाता है।।
फाड़ते तिरंगे को जो उन्हें फाड़ दीजिए।
शत्रुओं की छाती में त्रिशूल गाड़ दीजिए।।
संविधान को जलाते उनको जलाइये।
ऐसा नहीं करते तो गद्दी छोड़ जाइये।।
बेचते नहीं हैं वीर अपनी जमीर को।
सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को।।३।।

एक देश, दो प्रधान, दो विधान, देखिये।
एक देश, दो निशान, आलीशान देखिये।।
पानदान, पीकदान, खानदान देखिये।
रो रहा है जार-जार संविधान देखिये।।
आनबान शानबान बेजुबान देखिये।
पिटता है मेजबान मेहमान देखिये।।
घुसपैठियो के हाथों में कमान देखिये।
धर्मशाला होगया है हिन्दुस्तान देखिये।।
पत्थर पढा रहे हैं पाठ गंगनीर को।
सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को।।४।।

मांगने से मंगतों को भीख नहीं मिलती।
इतिहास से तुम्हें क्यों सीख नहीं मिलती।।
बिस्मिल भगतसिंह वाला इन्कलाब दो।
पत्तियों के लायक न उनको गुलाब दो।।
पानी के न लायक न उनको शराब दो।
शेखचिल्ली को न चांद तारों वाले ख्वाब दो।।
दुष्टों को ठिठुरने दो न कोट न जुराब दो।
पूरा देश पूछता है नेताओ जवाब दो।।
चूहे काटने लगे हैं शेर के शरीर को।
सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को।।५।।

रक्तबीज ढूंढ-ढूंढ खप्पर में डाल दो।
देशभक्त सैनिकों के हाथों में तलवार दो।।
उग्रवादियों के सारे अड्डों को जलाइये।
लाल कृष्ण फिर से सुदर्शन चलाइये।।
कीचड़ में धंसे वो 'कमल' नहीं होता है।
वायदों से टले वो 'अटल' नहीं होता है।।
गीदड़ों को शेरों वाली बोली मार दीजिए।
गद्दारों को देखते ही गोली मार दीजिए।।
तोप से उड़ादो उग्रवादियों के पीर को।
सेना के हवाले करो पूरे कश्मीर को।।६।।

सामयिक प्रश्न—

आर्यसमाज के सदस्यों से आत्म-निवेदन

लेखक : दयाराम पोद्दार, स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची—८३४००१

आर्यसमाज के साहित्य को पढ़कर और विद्वानों के प्रवचनों को सुनकर सन् १९६१ ई. में मैं छात्रावस्था के समय से ही आर्यसमाज रांची का सदस्य बना था। तब से अब तक आर्यसमाज के कार्यों के लिये अपनी योग्यता के अनुरूप मुझसे जो भी बन पड़ता है, उसे करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहता हूं। कभी-कभी सोचता हूं कि आर्यसमाज ने यदि हमारे जीवन में प्रवेश नहीं किया होता तो क्या हम भी अन्य लोगों की भांति गुरुडम, पाखण्ड, अन्धविश्वासों में नहीं फंसे रहते ? आर्यसमाज का हम पर बहुत अधिक उपकार है पर इसकी वर्तमान दशा और दिशा के कारणों और उसके समाधानों पर यदि हम आत्मचिन्तन नहीं करेंगे तो कौन करेगा ? हम बड़ी-बड़ी पूरी नहीं होने वाली अव्यावहारिक योजनायें बनायें उससे तो अच्छा होगा कि हम छोटे-छोटे कार्यों को जो हम सहज रूप से कर सकते हैं को ही करें।

हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिये कि हम यह न सोचें कि आर्यसमाज का सदस्य बनने से हमें क्या आर्थिक लाभ मिला वरन हमें यह सोचना चाहिये कि हमने अपने क्रिया-कलापों से आर्यसमाज के मिशन को आगे बढ़ाने में क्या योगदान किया है ?

आर्यसमाज एक धर्मप्रचारक और धर्मप्रसारक आन्दोलन है। आर्यसमाज की विचारधारा से मनसा वाचा कर्मणा जो भी आर्यसमाज से जुड़ा हुआ है, वे सभी इसके प्रचारक हैं। हम स्वयं स्वाध्यायी बनें और अपनी योग्यता को बढ़ाकर अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को आर्यसमाज के बारे में मौखिक या साहित्य प्रदान कर उन्हें आर्यसमाज के आन्दोलन से परिचित करायें।

हम अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना चाहें तो शौक से बनें पर यह वास्तविकता है कि अन्य संस्थाओं के प्रचारकों की तरह हमारे पास समर्पित प्रचारकों का काफी अभाव है। आर्यसमाज के प्रचार को प्रचारक कृपया व्यापार न बनायें बल्कि इसे एक मिशन के रूप में आगे बढ़ायें। हम स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कार्य योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करें।

आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य स्वरुचि के अनुसार आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित किसी भी पत्रिका का वार्षिक /आजीवन ग्राहक स्वय बने और अन्य लोगों को भी बनायें तथा साथ में प्रतिवर्ष अपनी सामर्थ्यानुसार वैदिक साहित्य क्रय करें। यदि उसे पढ़ने का स्वयं समय नहीं है या पढने से अरुचि है तो स्थानीय पुस्तकालयों, अन्य विद्वानों, संस्थाओं, प्रेस मीडिया या जिन्हें रुचि है, उन्हें वह साहित्य निजी प्रयत्न से या आर्यसमाज के आर्थिक प्रयत्न से नि शुल्क या नाममात्र के मूल्य पर उपलब्ध करायें।

आर्यसमाज की बडी-बडी सस्थायें (जैसे राज्य स्तर की प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा) अपने से सम्बन्धित संस्थाओं के क्रियाकलापों मे हस्तक्षेप करना अपना जन्मजात अधिकार समझती हैं पर क्या उन बडी संस्थाओं को केवल अधिकार ही है ? क्या वे अपना कर्त्तव्यपालन भी करती हैं ? क्या ये सभायें अपने आय-व्यय, वार्षिक रिपोर्टें या अन्तरग सभा की कार्यवाही को अपने अधीन आर्यसमाजों को भी भेजती हैं ? यदि नहीं तो क्यों ? मैंने तो पिछले कई वर्षों से कभी भी ऐसी संस्थाओं की रिपोर्टों को नहीं देखा है। फिर ऐसी संस्थायें स्थानीय आर्य-समाजों से ऊपर की संस्थायें कैसे हैं ?

ये सभायें क्षेत्रीय और केन्द्रीय स्तर पर आर्यसमाज के प्रचार की कोई योजना तो नहीं बनाती हैं। इन सम्मेलनों में पर्यटन और आने जाने वाले लोगों से परिचय की कामना से आना-जाना तो एक सीमा तक ठीक हो सकता है

आज आर्यसमाज का संगठन आन्तरिक और बाह्य समस्याओं में उलझा हुआ है। आर्यसमाज को आज नित्य नयी-नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है पर उन पर कोई चर्चा नहीं करता है, और अपनी निजी छवि को चमकाने के लिये आर्यसमाज के मंच का दुरुपयोग किया जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम स्वयं जागें और अन्य लोगों को जागरूक करें। आर्यसमाज अपने प्रचार कार्य को बढ़ायें। यथासंभव विभिन्न सस्थाओं के संचालन के भार से अपने को मुक्त करें। प्रबन्ध सम्बन्धी विवादों को परस्पर समाधान न करनेवाले हम आर्य (श्रेष्ठ) क्या वास्तव में आर्य हैं ? हम सभी आर्यसमाज को साधन के रूप में न देखें बल्कि आर्यसमाज के कार्य को साध्य के रूप में देखें। आर्यसमाज से जुडा हुआ इसका प्रत्येक सदस्य आत्मचिन्तन करे कि हम आर्यसमाज के कार्य को कैसे आगे बढा सकते हैं। आर्यसमाज के द्वारा कतिपय लोगों की भौतिक उन्नति होने से आर्यसमाज उन्नत नहीं हो सकता है।

आज आर्यसमाज में व्यवसायी या नौकरीपेशा लोग ज्यादा हैं। विभिन्न कार्यों के द्वारा आजीविकोपार्जन करनेवाले लोग रिक्षा-चालक, सागसब्जी विक्रेता, बढई, लोहार, श्रमिक इत्यादि या डॉक्टर, वकील, इंजीनियर इत्यादि या अन्य कार्यों द्वारा जीविकोपर्जन करनेवाले लोगो में आर्यसमाज का प्रवेश क्यो नहीं है ? समाज के सभी वर्गों में समान रूप से या तीव्रता के साथ यदि आर्यसमाज का सगठन प्रवेश नहीं कर सकता है तो क्या आर्यसमाज का अस्तित्व दीर्घजीवी हो सकता है ?

आज इस बात की बहुत अधिक जरूरत है कि हम सभी लोग आर्यसमाज के सामने उत्पन्न सभी समस्याओं पर पूर्वाग्रहो से हटकर उनका समाधान खोजे। वैदिक धर्म के प्रचार एव प्रसार के लिये साधनविहीन अकेले महर्षि दयानन्द ने जो कार्य किया उसके करोडो आर्य कहलानेवाले हम तथाकथित आर्य क्यो इतने निकम्मे होगए हैं कि हम अकर्मण्य होकर परिस्थितिया जिस ओर हमें ढकेल रही हैं, उसी ओर बिना विचार किये चले जा रहे हैं। आज जरूरत है कि हम रुकें और सोचे कि हमारा अतीत क्या था ? वर्तमान ऐसा क्यों हो गया ? क्या इसी वर्तमान पर भविष्य मे आर्यसमाज की इमारत खडी रह सकती है ? काश इमारत की बुलन्दी के लिये मजबूत नीव की आवश्यकता है। आर्यसमाज के सन्देश से हमारे दिल भी फौलाद से भी अधिक मजबूत हो जायें ताकि हम भी ऋषि के ऋण से मुक्त हो सकें।

विचित्र वृक्ष (सत्यार्थप्रकाश)

टेक : चार वेद, छ: शास्त्र पढ़के, एक ऋषि लगाग्या पोदा।
ज्ञान रूप का जल बरसाया, फूट्टी डाली चौदा।।

१ पहली डाली का फल खावे, उपजे बेहद ग्यान।
सहस्र नाम ओम के समझे, निराकार भगवान्।
दूजी डाली का फल खावे, उत्तम हो सतान।
तीजी डाली का फल खावे, जो पत्र पुष्प समान।
मिले नहीं बलवान् इसा, कोई बल बुद्धि का योधा।।

२ चौथी डाली का फल खावे, स्वर्ग गृहस्थ को पाले।
विद्या विनय रूप बल आयु, कुल का मेल मिलाले।
स्त्री पुरुष दो चप्पू बनके, नैया पार लगाले।
पांचवीं डाली का फल खावे, मोक्ष यदि पद पाले।
इस वृक्ष से जो वञ्चित रहज्या, बने बिना बुढ़ापे बोदा।।

३ षष्ठ डाली का फल खावे, हो राजा चक्रवर्ती।
सप्तम डाली में व्यापक है, ईश्वर वेद स्मृति।
अष्टम डाली में व्यापक जड, चेतन, जीव, प्रकृति।
नौवीं डाली का फल खावे, होवे मनुष्य की मुक्ति।
मूरख दुनिया भागी फिरती, मथुरा और अयोध्या।।

४. दसवीं डाली का फल खावे, निर्मल हो मन गात।
ग्यारहवीं डाली का फल खावे, ना आवे पोप के हाथ।
बारहवीं डाली झुकते ही समझे, वेद विरोधी बात।
तेरहवीं डाली झुकते ही समझे, बाईबल का उत्पात।
ईसू का था कौन बाप, लिया पैगम्बर का हौदा।

५ चौदहवीं डाली का फल खावे, नहीं नरक में धसता।
घर में इसकी प्योद लगादे, नहीं भरम में फसता।
बड़ पीपल के पीछे भागे, होज्या हालत खस्ता।
इसी वृक्ष के कारण आज भारत का दीया चस्ता।
ओमदत्त ने इससे सस्ता ना मिला चमन में सोदा।।

—ओमदत्त नैन आर्य, सूबेदार मेजर (रिटायर्ड)
बत्तरा कालोनी, पानीपत-१३२१०३

आर्यसमाज स्थापना की १२५वीं जयन्ती पर विशेष–

आर्यसमाज क्या करे ?

❑ महावीरसिंह प्राध्यापक, २१/१२२७ प्रेमनगर, रोहतक

गतांक से आगे–

पहले सामाजिक समरसता के लिए सगठन निर्माण पर ध्यान देना चाहिए। मन मिलने व परस्पर विश्वास बढने पर धर्म की वास्तविकता की ओर बढना चाहिए। अच्छे सगठन बनने पर ग्रामो व नगरो के विद्यालय, महाविद्यालय व अनेक सगठन मिलकर विश्वविद्यालयों आदि मे भी प्रेरणादायक कार्यक्रम चालू करवा सकते हैं जोकि सरकारी नियमो के अनुसार भी मान्य हो सकते हैं। सरकारी गैर सरकारी, पचायत, जिला परिषद्, नगर परिषद् आदि के कार्यों पर भी अकुश लगाया जा सकता है। इस कार्य के लिए सर्वप्रथम सेवामुक्त श्रेष्ठ सज्जन तैयार करने होंगे। वे ही इसे धीरे-धीरे बढ़ा पाएगे। ये सगठन निजी रूप मे सस्थाए भी चला सकते हैं।

५. पुरोहित सभा–जिन व्यक्तियो की रुचि कर्मकाण्ड मे हो या निजी स्वाध्याय व साधना मे हो उन्हे मदिरो में बैठा देना चाहिए। प्रत्येक गाव में अनेक मन्दिर खाली पडे हुए हैं। मन्दिर भले ही किसी सम्प्रदाय या केवल ग्रामवासियो ने आस्था अनुसार बनाए हैं यदि वे खाली हैं तो वहा पुरोहित को बैठना चाहिए अथवा स्वय इच्छुक सज्जन को बैठ जाना चाहिए तथा प्रात साय यज्ञ, पूजन, कथा आदि का नियमित कार्यक्रम आरम्भ कर देना चाहिए। धीरे-धीरे पुस्तकालय स्थापना वृहद्यज्ञो के कार्यक्रम व ग्रामकल्याण कार्यक्रम आरम्भ कर देने चाहिए। इस कार्य के लिए सार्वदेशिक व प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा मे एक-एक व्यक्ति की नि शुल्क या किराए आदि की व्यवस्था कर जिम्मेदारी देनी चाहिए कि वह ऐसे पुरोहितों को ढूढकर उन्हे पंजीकृत सभा की ओर से करके मन्दिर मे पूर्णकालिक या अशकालिक जैसा भी हो नियुक्त करे तथा समयानुसार उनकी देखरेख करता रहे।

६. शिक्षक व छात्र संगठन–सार्वदेशिक सभा सभी प्रान्तो में शिक्षक व छात्र सगठन खडे करने के लिए प्रान्तवार समर्थ शिक्षकों व छात्रों की नियुक्ति करे। प्रान्त सयोजकों को जिलेवार सगठन की सदस्पता करने के लिए जिला संयोजक व तदर्थ समितिया बना दी जानी चाहिएं। शिक्षक व छात्र सगठन अलग-अलग स्वतन्त्र रूप से बने। ये सगठन शिक्षा की विसगतियो, समस्याओं, शिक्षक व छात्र की समस्याओ बारे सघर्षरत रहे। बेरोजगारी व सस्कारहीनता की जननी इस मैकाले की शिक्षा की जडो मे मट्ठा आर्यशिक्षक व छात्र सगठन ही डाल सकते हैं तथा भारतीय शिक्षा के आयाम के द्वार खोले जा सकते हैं ?

७. गुरुकुलीय शिक्षा से दीक्षित करना–प्रत्येक आर्यजन को अपनी एक सन्तान बालक या बालिका को गुरुकुल में शिक्षित दीक्षित कराने का सकल्प लेना चाहिए। गुरुकुलीय शिक्षा बिना प्राचीन विद्याओ का शोध व विस्तार संभव नहीं तथा न ही चरित्रवान् युवा तैयार हो पाएगे। आर्यजनो को इसके लिए प्रेरणा देनी चाहिए।

८. परम्परागत कृषि रक्षा योजना–पश्चिमी सभ्यता का ज्ञान विज्ञान के कारण स्वदेशी सस्ती व टिकाऊ खेती के प्रकार समाप्त होते जा रहे हैं तथा बैलो की खेती की जगह ट्रैक्टरो ने ले ली है जिससे गौ आदि पशुओ की सख्या घटकर दूध खाद व चमडे आदि की कमी होती जा रही है। ट्रैक्टर दूध व खाद नहीं देता बल्कि महंगा मिलता है तथा महंगा तेल बरबाद करके प्रदूषण फैलाता है। बैल की खेती करने वालों को पुरस्कृत व प्रोत्साहित करके मशीनी खेती पर आश्रय को रोका जा सकता है। इसके लिए आर्य कृषक मंच के गठन का उत्तरदायित्व विशिष्ट अनुभवी कृषि वैज्ञानिको व परम्परागत कृषकों को मिलकर सौंपा जा सकता है। सार्वदेशिक सभा किसान उन्नति हेतु यह उत्तरदायित्व भी प्रान्तवार विशिष्ट जनो को सौंपे, जो विधिवत् मच का गठन कर सम्मेलन, गोष्ठी आदि करके गोशाला संचालको, कृषि, बागवानी आदि के वैज्ञानिकों से सम्मति लेकर कृषकों को सलाह दे तथा उनकी वास्तविक समस्याएं उठाएं।

९. नदियों को जोड़ना–नदियों के व्यर्थ जा रहे पानी को आवश्यकतानुसार अन्य क्षेत्रों में प्रवाहित करने के लिए इस प्रकार धरती नापकर जोडा जाए या मोड़ा जाए तथा बड़ी छोटी नहरें निकालकर पानी की उपलब्धता सब जगह की जाए। जहा पानी की आवश्यकता हो वहा पानी जाए। जहां उसकी आवश्यकता न हो वहां पानी फसलों की बर्बादी जन, धन, आवास, पशु पक्षी आदि की हानि करके बीमारी का काण न बने। यदि कहीं भी पानी की आवश्यकता न हो तो उसे तालाबों या छोटे-छोटे बांधों में भण्डारण करके रखा जाए। वर्षा का पानी शुद्ध होता है। उसे प्लास्टिक, लोहे आदि के विस्तृत उल्टे छाते जैसे सग्राहक बनाकर जगह-जगह छोटी-बडी टंकियों, बावडियों आदि में उतारा जा सकता है जो वर्ष भर उपयोग मे लाया जा सकता है। इसे ढककर रखा जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार साफ करके पीने या अन्य कार्यों के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। अधिक पानी होने पर विदेशो में बेचा भी जा सकता है या समुद्र में छोडा जा सकता है।

आन्ध्र प्रदेश के प्रसिद्ध समाजसेवी भूगोलशास्त्री डॉ० विश्वेशवरैया ने नदियो के जोड व जल प्रवाह को देश भर मे आवश्यकतानुसार पहुचाने के लिए पूरे देश के विभिन्न धरातलो पर नाप तोल से ऐसा मानचित्र तैयार किया था। उनका दावा था कि इस मानचित्र अनुसार जल प्रवाहित करने से न कहीं सूखा रहेगा न डूबा बल्कि पानी अन्य देशों को बेचा जा सकेगा या अन्य वस्तुओ के बदले दिया जा सकेगा। देश के पास पानी बहुत मात्रा में है यह हमारे लिए सोना है इसी से हमारा देश सोने की भूमि बन सकता है। आर्यसमाज को जल का मुद्दा भारतीय स्तर पर भी उठाना चाहिए। "कृषक मंच" इसके लिए जागृति करें। कृषकों को कृषि उत्पादों के सहायक कार्य जैसे आटा, दालें, भुनी दालें, रस्सी बनाना, मीठे व अन्नो के मेल से विभिन्न खाद्य बनाना, दूध व उससे बने पदार्थ बनाना व बाजार भेजना आदि को प्रोत्साहित करना। अन्न भण्डारण हेतु सुरक्षित भण्डार बनाने के लिए सस्ते ऋण देने के लिए सरकार पर दबाव बनाना आदि अनेकविध कार्य शुरू करवाए जा सकते हैं।

१०. धन्वन्तरि औषधि उद्यान–प्रत्येक संस्था के साथ यथासंभव गोशाला फलोद्यान व विशेष रूप से औषधालय, औषध निर्माणशाला व औषधि उद्यान होना चाहिए जिससे भारतीय जड़ी-बूटियां व पादप सुरक्षित रहें तथा स्वास्थ्य हेतु शोध व औषध निर्माण चलता रहे। पहाड़ी प्रदेशों में विस्तृत व विशिष्ट औषधि उद्यान होने चाहिएं। भिन्न-भिन्न प्रदेशों में होने वाली औषध व वनस्पतियों की सुरक्षा व वृद्धि हेतु भिन्न-भिन्न प्रदेशों में उद्यान स्थापित किए जाने चाहिएं। औषध निर्माण व विक्रय से उनका रखरखाव चलाया जाए।

११. वर्णाश्रम व्यवस्था स्थापना समिति–जनता में वर्णाश्रम क जीवन उपयोगिता समझाकर उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने की कला सिखाई जाए। यह समिति गुण, कर्म, स्वभाव अनुसार जातितोड सामूहिक विवाह प्रतिवर्ष सम्पन्न कराए तथा नवदम्पती को विवाह-पूर्व साप्ताहिक गृहस्थ शिक्षण, बाल पोषण, सस्कारविधि, स्वास्थ्य रक्षण सम्बन्धी जानकारी देने के लिए श्रेष्ठ गृहस्थ साहित्य भी भेंट करें। समिति विवाहेच्छुक युवक-युवतियों का सशुल्क पंजीकरण प्रतिवर्ष निश्चित समय पर करें। दूसरे चरण में परिचय सम्मेलन व वाग्दान (सगाई), तीसरे चरण मे गृहस्थ प्रशिक्षण शिविर तथा चौथे चरण में विवाह सस्कार माता-पिता सम्बन्धियो एवं विद्वानों की देखरेख में सम्पन्न कराया जाए। समिति आवश्यकतानुसार वानप्रस्थ व सन्यास दीक्षा भी उपसमितियां बनाकर या अपनी व्यवस्था से विद्वानो की सम्मति से दे सकती हैं। सार्वदेशिक सभा ऐसी समिति बना दे। समिति उपसमितियो द्वारा वर्णाश्रम व्यवस्था की समस्याओं को सुलझाने तथा ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थों, सन्यासियो एव ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रों के कर्तव्यों की देखरेख व सहयोग भी सामर्थ्यानुसार करे।

१२. दलितोद्धार मंच–जब तक जातियां विद्यमान हैं तब तक दलितों में अलग से जागृति, स्वच्छता, शिक्षा आदि के लिए दलितोद्धार मंच का गठन करके कार्य करना चाहिए। यह मच भी राज्य जिला, तहसील खण्ड व गांव स्तर तक बनना चाहिए। दलित नेता कहे जाने वाले लोग उन्हें भ्रम में डालकर भारतीय संस्कृति व समाज विरोधी बनाते जा रहे हैं, अतः सच्चाई से अवगत कराने व उनकी समस्याएं सही परिप्रेक्ष्य में हल कराने के लिए अलग मंच अति आवश्यक है। (क्रमशः)

आर्य-संसार

विश्व दर्शनीय यज्ञशाला के निर्माण हेतु आर्थिक सहायता की अपील

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में निर्माणाधीन यज्ञशाला में अपना योगदान देकर पुण्य के भागी बनें

ऋषि जन्मभूमि पर निर्माण की जाने वाली इस यज्ञशाला का एक विशेष महत्व है। पुरे विश्व के ऋषिभक्तों के लिए टंकारा, गुरुधाम का स्थान रखता है और समस्त आर्यजगत् की भावुक भावनाए इस स्थान से जुडी हुई हैं इसलिए आपके द्वारा दिया गया योगदान किस महत्त्व का होगा इसे आप अवश्य समझें।

२४ स्तम्भों से बनी यज्ञशाला पूर्ण रूप से कंक्रीट की बनी हुई होगी। इसमे ईंट अथवा प्लास्टर नाममात्र के लिये ही होगा। भूमितल से ६ फीट ऊची इस यज्ञशाला का रेखाचित्र एवं काल्पनिक चित्र कम्प्यूटर द्वारा तैयार किया गया है। और कम्प्यूटर इंजीनियर का ऐसा मानना है कि इस आकार की यज्ञशाला पूरे विश्व में नहीं निर्मित हुई होगी। इसे विश्वदर्शनीय बनाने हेतु और सुन्दर रूप बनाये रखने के लिये ऐसी सम्भावना है कि इसे ग्रेनाइट पत्थर से सुसज्जित किया जायेगा और स्तम्भों को खुर्जा टाइल्स से डिजाइनदार बनाया जायेगा।

आर्यजनता से अनुरोध है कि टकारा मे चल रहे यज्ञशाला के निर्माण कार्य में मुक्तहस्त से अधिकाधिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बने। यह दान नकद/ड्राफ्ट/क्रास चैक तथा मनीआर्डर द्वारा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर अथवा टकारा जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात) को भिजवाने की कृपा करे। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपने आर्यसमाज, अपनी शिक्षण सस्था तथा सम्बन्धित सस्थाओ की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर पुण्य के भागी बनें। टकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है। —विद्यादेव, आचार्य

झाड़ौदा कलां, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में मल्लाह पर भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ व वैदिक सत्संग

झाडौदा कला मे मल्लाह तीर्थ पर नवीन यज्ञशाला का उद्घाटन २१ दिसम्बर, २००१ को प्रात ८ बजे आचार्य बलदेव जी महाराज प्रधान हरयाणा गोशाला संघ, गुरुकुल कालवा (जीन्द) हरयाणा के करकमलो द्वारा होगा। उद्घाटन के पश्चात् ऋग्वेद पारायण यज्ञ २१ दिसम्बर से प्रारम्भ होकर ३० दिसम्बर को पूर्ण होगा। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी वेदरक्षानन्द जी तथा आचार्य चेतनदेव जी वैश्वानर भैया अलीगढ (उ०प्र०), श्री स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज रोहतक, आचार्य श्री राजसिंह जी आर्य (दिल्ली), आचार्य हरिदत्त जी गुरुकुल लाढौत (रोहतक), श्री ओमप्रकाश जी मुख्याध्यापक (पानीपत), श्री लक्ष्मणसिह जी बेमोल (रुड़की), श्री रामरख जी आर्य (भिवानी) इत्यादि महात्मा, विद्वान् व भजनोपदेशक महानुभाव पधार रहे हैं।

व्यायाम प्रदर्शन—गुरुकुल लाढौत के ब्रह्मचारियों द्वारा आसन, दण्ड, बैठक, लाठी, सरिया मोडना, जजीर तोड़ना, कार रोकना, छाती पर पत्थर तुड़वाना आदि व्यायाम का अद्भुत प्रदर्शन होगा।

निवेदक : बाबा हरिदास लोकसेवा मण्डल एवं झाड़ौदा कलां, नई दिल्ली

आर्यवीर दल हांसी का वार्षिकोत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुरानी सब्जी मण्डी, लाल सड़क, हांसी

दिनांक २२-२३ दिसम्बर, २००१

विगत वर्षों की भांति आर्यवीर दल हांसी का वार्षिक उत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह बडी धूमधाम से मनाया जा रहा हैं

निवेदन . समस्त सदस्यगण आर्यवीर दल, हांसी

हरयाणा के प्रसिद्ध मेला कपाल मोचन पर वेद प्रचार शिविर सम्पन्न

प० चिरजीलाल की भजन मण्डली द्वारा मेला प्रचार चौ० सिहराम आर्य द्वारा आर्यसमाज गढी सिकन्दरपुर (पानीपत) आर्यसमाज नगला साधान (यमुनानगर), दौलतपुर मुस्तफाबाद, बुबका, मधार, अलाहर, फतेहपुर, गुन्दयाना (यमुनानगर) मे प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से करवाया गया। नरनारियों को प्रचार शिविर मे पहुचने तथा शिविर हेतु दान देने की प्रेरणा की गई। काफी नरनारियो ने मेले मे वैदिक आश्रम कपाल मोचन में २६ से ३० नवम्बर २००१ तक भजन तथा उपदेशक प० राजकिशोर जी आचार्य गुरुकुल शादीपुर एव ब्रह्मचारियो द्वारा यज्ञ तथा उपदेश भजन प० चिरजीलाल प० खुशीराम जी, प० सुरताराम जी, प० खेलसिह जी, प० शेरसिह जी आदि द्वारा भजनोपदेश मे हजारो की सख्या मे प्रचार शिविर मे शामिल हुए। श्री वीरसिंह व आश्रम प्रबन्धक सदानन्द मुनि जी, आचार्य राजकिशोर जी द्वारा मेले मे प्रचार व्यवस्था मे सहयोग दिया गया। उपस्थित जनता ने प्रचार कार्यक्रम को काफी पसन्द किया। सभा भूमि मेला कपाल मोचन की चार दीवारी आदि के निर्माण हेतु तीर्थयात्रियो ने उदारतापूर्वक दान दिया।

—केदारसिह आर्य, सभा उपमन्त्री

शोक समाचार

श्री रतनसिंह जी का देहान्त

श्री फतहसिह जी भण्डारी गुरुकुल झज्जर के बडे भाई श्री रतनसिह जी का ८६ वर्ष की आयु मे ६ दिसम्बर, २००१ को देहान्त हो गया है।

१७ दिसम्बर को प्रात १० बजे इनके गाव पटासनी जिला झज्जर मे शान्तियज्ञ होगा।

श्री सत्यानन्द मुंजाल जी की सुपुत्री का देहावसान

आर्य जनो को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध समाज सेवी एव उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुजाल, एल-१४, माडलटाउन, लुधियाना की सुपुत्री श्रीमती सुषमा चोपडा धर्मपत्नी श्री जितेन्द्र चोपडा का रविवार दिनाक ४ ११ २००१ को लम्बी बिमारी के उपरान्त स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु केवल ५५ वर्ष थी। कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नही चल रहा था। उनकी अन्त्येष्टि उसी दिन वैदिक रीति से लुधियाना मे की गई और रविवार दिनाक ११ ११ २००१ को साय ३ बजे से ५ बजे तक आर्य सीनियर सैकेडरी स्कूल के प्रागण मे अन्तिम शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमे आर्यसमाज से सबधित सस्थाओ जैसे गुरुकुल, डी०ए०वी० विद्यालय तथा अन्य समाज सेवी सस्थाओ के हजारो व्यक्तियो ने भाग लेकर श्रीमती सुषमा चोपडा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। इसके साथ ही विभिन्न संस्थाओ से प्राप्त शोक सदेश पढकर सुनाये गए।

महर्षि दयानन्द के दाह-कर्म सम्बन्धी भ्रान्ति-निवारण

—पं० इन्द्रजित्‌देव, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर–१३५००१

हमारे एक वानप्रस्थी मित्र श्री रामभिक्षु ने (अजनाला) पजाब से लघु पुस्तिका भेजी है। इस का शीर्षक है-"जगत जूठ तम्बाकू न सेव"। इसके लेखक श्री सतवीर सिंह प्रिंसिपल हैं व हिन्दी अनुवादक हैं-डा परमजीत कौर तथा प्रकाशक "धर्म प्रचार कमेटी, (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी) श्री अमृतसर" है। केवल आठ पृष्ठो की इस पुस्तिका मे तम्बाकू का सेवन करने की हानिया व तम्बाकू का सेवन न करने की अपील अच्छे ढग से की गई है। हम इस भावना का पूर्णत समर्थन व प्रशसा करते हैं। तम्बाकू की उपज करना, इसका बेचना व सेवन करने के हम उतने ही विरुद्ध हैं, जितने इस पुस्तिका के लेखक, अनुवादक व प्रकाशक हैं।

इस पुस्तिका के पृष्ठ ६ पर १४ पक्तिया महर्षि दयानन्द सरस्वती विषयक भी लिखी गई हैं जिनका सार यह है कि उन्होने अपना अन्तिम समय नजदीक जानकर महता भागराम को बुलाकर कहा कि मेरा अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीति से करना तथा मेरे शरीर को कोई भी तम्बाकू सेवन करने वाला व्यक्ति हाथ न लगाये। यह सोचकर कि हिन्दुओ मे तो विरले ही ऐसे व्यक्ति मिलेगे, सिख ही अजमेर से एकत्रित किए गए। मृतक देह को मिस्त्री वधवासिह, सरदार हरिसिह, सरदार चन्दासिह सरदार खुशहाल सिह, सरदार टहलसिह व भाई पालसिह जी ने स्नान कराया। रास्ते मे यदि कोई व्यक्ति अर्थी को कन्धा देना चाहता था तो दयानन्द जी का आदेश बता दिया जाता था कि कोई ऐसा व्यक्ति हाथ न लगाए जिसने तम्बाकू का सेवन किया है।

एक दूसरी भ्रान्ति फैलाने वाले मुरादअली नामक लेखक ने "यादगार-ए -मुराद अली" शीर्षक अपनी पुस्तक में यह लिखा है कि महर्षि दयानन्द की शव-यात्रा मे अर्थी को कन्धा देने वाले तीन-चार व्यक्ति ही निकले थे क्योंकि अजमेर के हिन्दू लोग उनसे नाराज थे। इसका निराकरण श्री डा० भवानीलाल भारतीय ने अपने लेख में कर दिया।

इन दोनों कथनों में तनिक भी सच्चाई नही है। महर्षि दयानन्द तम्बाकू का सेवन करने को पसन्द नहीं करते थे और वे भी इसके सेवन के उतने ही विरुद्ध थे, जितना कोई और था व है, परन्तु उन्होंने महता भागराम को बुलाकर कोई मौखिक वसीयत की थी, यह बात तथ्यों के विपरीत है। उनके शिष्यो व भक्तों तथा प्रशंसकों की उस समय सख्या पर्याप्त हो चुकी थी। यह सोचना भी इतिहास के प्रति अन्याय है कि अजमेर में तम्बाकू सेवन न करने वाला कोई विरला ही मिलता था, अत महर्षि को तम्बाकू सेवन न करनेवाले एक व्यक्ति को बुलाकर विशेष हिदायत देनी पडी। ऐसी काल्पनिक व अविश्वसनीय बात का प्रमाण क्या है ? आधार क्या है ? किस जीवन चरित मे लेखक ने यह घटना पढी है ?

आज न मुरादअली और न प्रिं० सतिवीरसिह इस ससार मे हैं। वे हमारे लेख को पढ नहीं सकते परन्तु इतिहास आने वाली पीढियों तक सही रूप मे पहुचाना वर्तमान पीढी की जिम्मेदारी होती है, इस कर्तव्य को ध्यान में रखकर हम कुछ निवेदन करने पर बाध्य हैं।

"Dayanand Commemoration Volume—A homage to Maharishi Dayanand Saraswati" शीर्षक से सन् १९३३ मे एक विशाल ग्रन्थ परोपकारिणी सभा, अजमेर ने महर्षि की बलिदान अर्ध शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित किया था। इसके सम्पादक हरविलास शारदा व उनके मित्र रामगोपाल (बाद में बार-एट-लॉ) ने इस ग्रन्थ में महर्षि की अन्तिम यात्रा विषयक जानकारी दी है। रामगोपाल ने लिखा है कि मैं उस समय भिनाय कोठी, अजमेर में मौजूद था, जब महर्षि ने प्राण त्यागे थे। मेरे सहपाठी हरविलास शारदा व रामविलास शारदा भी वहीं थे। दूसरे दिन शवयात्रा निकाली गई जिसमें स्वामी जी के **'हजारों प्रशंसकों तथा अनुयायियों ने भाग लिया।'** इसी ग्रन्थ में हरविलास शारदा ने लिखा है कि राय बहादुर पण्डित भागराम, ज्यूडिशियल सह कमिश्नर, अजमेर ने शवयात्रा की तैयारी की थी। पण्डित भागराम स्वय इस शवयात्रा मे सम्मिलित हुए थे। वे महर्षि दयानन्द के बहुत प्रशसक व अनुयायी थे। महर्षि का शव दाह कर्म उनके स्वीकार (वसीयत) पत्र में वर्णित निर्देशों के अनुसार ही किया गया था। मैंने रास्ते मे देखा था कि महर्षि दयानन्द के शव को जिस विमान अर्थात् अर्थी को लोग उठाकर चल रहे थे, उनकी सख्या सोलह थी।"

महर्षि के कुछ प्रसिद्ध जीवनचरित भी उपलब्ध हैं उन चरितों में जो विवरण उपलब्ध हैं, उसके अनुसार लाहौर के पण्डित गुरुदत्त व जीवनदास, अजमेर आर्यसमाज के मन्त्री मथुरा प्रसाद, सभासद जेठमल सोढी, सरदार भक्तसिह, अजमेर ब्रह्मसमाज के प्रधान शरत् चन्द्र मजूमदार, डॉ० लक्ष्मणदास, राय बहादुर भागराम, महर्षि के शिष्य आत्मानन्द व रामानन्द, प० भीमसेन, गोपालगिरि, पं० वृद्धिचन्द, मुन्ना लाल, राय बहादुर सुन्दर लाल, परोपकारिणी सभा के उपमन्त्री प० मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया, फरुखाबाद के लाला शिवदयाल व मेरठ, मुम्बई तथा अजमेर के निकटवर्ती ग्रामो व नगरों के हजारो आर्यजन व गैर आर्यसमाजी भी शवयात्रा मे सम्मिलित हुए थे। यहा यह उल्लेखनीय है कि महर्षि के देहान्त का समाचार पाकर दो गैर आर्यसमाजी सन्यासी भिनाय कोठी में आए थे, जहा महर्षि ने अन्तिम सास ली। उन्होने इच्छा प्रकट की कि दयानन्द संन्यासी का शरीर उन्हे सौंप दिया जाए। सन्यासियों में प्रचलित (अवैदिक) परम्परानुसार वे उस शरीर को गाडेंगे, जलाने नहीं देंगे। आर्यपुरुषों ने उन्हें समझाया कि श्री महाराज पहले से ही अपने शव की अन्त्येष्टि के विषय में सब कुछ लिख गए हैं, अत: उसी वसीयत के अनुसार यह कार्य होगा। इस पर वे सन्यासी यह कहकर चले गए कि यद्यपि स्वामी दयानन्द वैचारिक दृष्टि से हमारे प्रतिपक्षी थे परन्तु फिर भी वे थे तो सन्यासी ही। उनके शव पर हमारा अधिकार है। हम संख्या मे यदि दो से अधिक होते तो हम शव को बलात् छीनकर ले जाते।

इस विवरण से सिद्ध है कि अजमेर में उस समय प्रचुर संख्या में आर्यजन थे क्योंकि सन् १८८२ ई० में वहा आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द भी कई बार अजमेर, किशनगढ व पुष्कर मे पधारकर उपदेश देकर गए थे जिससे उनके प्रशसकों की सख्या बहुत थी। कुछेक नाम जो जीवनचरितों में मिलते हैं व महत्त्वपूर्ण थे, हमने ऊपर लेख मे दे दिए हैं। यह ठीक है कि स्वार्थी व दुराग्रही हिन्दू महर्षि से द्वेष करते थे परन्तु ऐसी स्थिति भी न थी कि कोई हिन्दू उनके शव को हाथ न लगाता। उपरोक्त दो संन्यासी भी उनके साथ वैचारिक मतभेद रखने के बावजूद उनके शव को लेने के लिए आए थे। जीवनचरितों मे तो यह भी उल्लेखित है कि यह दाहकर्म महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित 'संस्कारविधि' मे लिखित १२१ मत्रो के पाठ से हुआ था व इसमें ३ मन, ३ सेर (आजकल के माप के अनुसार लगभग १३० किलो) घृत व चन्दन दो मन, दो सेर एक पाव तथा कुछ अन्य सामान प्रयोग में लाया गया था। यह विधि 'संस्कारविधि' की है जो महर्षि द्वारा ही निर्दिष्ट है।

यह विधि कोई गैर आर्यसमाजी भला क्यों अपनाता ? इतना व्यय कोई और क्यों करता ? कोई आर्यसमाजी तम्बाकू का सेवन नहीं करता, यह बात महर्षि को पता थी फिर उन्हें किसी व्यक्ति विशेष को बुलाकर 'तम्बाकू का सेवन न करने वाले हिन्दू विरले ही होते हैं, इसलिए तुम लोग ही मेरे शरीर को स्नान कराना।' और कोई इसे छूने न पाए, यह हिदायत देने की आवश्यकता ही क्या थी ? महर्षि की ऐसी हिदायत का प्रमाण श्री सतिवीरसिंह प्रिंसिपल या उनके किसी समर्थक के पास क्या है ? शवयात्रा में शामिल होनेवाले उपरोक्त लोगों के लेखों पर विश्वास करें या बिना प्रमाण से किसी काल्पनिक लेख पर विश्वास करें ?

(आर्यमर्यादा से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ५ २१ दिसम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

जाट विशुद्ध आर्य हैं

कुछ साम्यवादी और विदेशी भावना के वशीभूत इतिहासकारों ने भारत के इतिहास में मन-घडन्त दुर्भावनापूर्ण बातें लिखकर इतिहास को विकृत किया था। आज स्वतन्त्र भारत के स्कूल और कॉलेजों मे वही विकृत इतिहास पढाया जा रहा है कि आर्य विदेशी और आक्रमणकारी थे। गोमांस खाते थे। दिल्ली, आगरा, मथुरा के आसपास के क्षेत्रों मे जाटो की शक्ति का उदय हुआ, इन्होने खूब लूटपाट मचाई। यज्ञों मे पशुबलि दी जाती थी। जैनियों का इतिहास सदिग्ध है। राम और कृष्ण का अस्तित्व ही नहीं मानते। रामायण और महाभारत जैसे इतिहासग्रन्थो को कल्पित मानते हैं। गुरु तेग बहादुर ने पूरे पजाब मे लूटमार मचा रखी थी। इत्यादि।

केन्द्रीय सरकार ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन सी ई आर टी) द्वारा एक आदेश के द्वारा छठी से बारहवीं कक्षा मे पढ़ाई जा रही इतिहास की पुस्तको में से हिन्दू, जैन, सिख और जाटों आदि के प्रति दुर्भावनापूर्ण लिखे गये अंशो को हटाने का आदेश दिया है। इस आदेश की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। किन्तु कुछ कांग्रेसी सांसदों ने लोकसभा में इस आदेश का विरोध करके सरकार पर शिक्षा के भगवाकरण का आरोप भी लगाया जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है।

ठाकुर देशराज ने जाट इतिहास की प्रस्तावना में लिखा है कि-**"विदेशों में हम भारतीय साम्राज्य के जो चिह्न पाते हैं, जाटों का उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत में भी उनका शासन विभिन्न शासन-पद्धतियों से रहा था। भारत उनकी जन्मभूमि है। वे शुद्ध आर्य हैं, क्षत्रिय हैं और पौराणिक काल के नहीं, किन्तु वैदिक काल के क्षत्रिय हैं। भारत मे वीरता धीरता और निर्भयता में उनकी समता करने वाली कोई दूसरी कौम नहीं।"**

कर्नल टाड ने जाटों के विषय मे लिखा है कि-"एक समय आधा एशिया जाट जाति के प्रताप से दग्ध हुआ था।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुत्र, गुरुकुल कागडी के यशस्वी स्नातक, वीर अर्जुन के सम्पादक, प्रसिद्ध इतिहास लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने जाट इतिहास की भूमिक मे लिखा है-

"जाट जाति के दो बड़े गुण हैं, एक तो यह कि वह किसी एक सत्ता को देर तक सिर झुकाकर नहीं मान सकते, और दूसरा यह कि यह धार्मिक या सामाजिक रूढियो की अत्यन्त दासता से घबराते हैं। इन्हीं गुणों का प्रभाव था कि ७०० वर्षो तक मुसलमानो के शासन मे रहे, परन्तु रहे प्राय: **विद्रोही बनकर ही।** यह एक वीर जाति के लक्षण हैं। इन दो गुणो के साथ एक दोष भी लगा हुआ है, जो शायद उपर्युक्त गुणो का भाई है। जाट लोगो में एक खुरदरापन है, जो बिगड़ने पर परस्पर विरोधी के रूप में परिणत हो जाता है। **यदि यह एक दोष न होता तो दोनों गुणों के बल से जाट भारत के एकच्छत्र राजा होते।** यह इतिहास मेरे इस कथन का साक्षी है।"

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में यमराज चित्रगुप्त, उनके भयंकर गणों द्वारा स्वर्ग नरक मे डालना। उसके लिए दान पुण्य श्राद्ध तर्पण पिण्डदान तथा गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी नदी पार करना आदि पोपलीला के गपोडो का खण्डन करते हुए एक जाट का दृष्टान्त दिया है जो सत्यार्थप्रकाश के दो पृष्ठो मे समाया है, उसे आप सत्यार्थप्रकाश में ही पढे। अन्त मे महर्षि दयानन्द जी ने दृष्टान्त के साराश मे लिखा है कि-**"जब ऐसे ही जाट जी के से पुरुष हो तो पोपलीला संसार में न चले।"**

ऊपर इन्द्र जी द्वारा लिखे जाटो के दूसरे गुण की इस दृष्टान्त से सपुष्टि होती है।

जाट विशुद्ध आर्यवशज हैं। वीर क्षत्रिय हैं। देश काल और परिस्थितिवश आर्यसन्तान जाट मुसलमान, सिख और हिन्दू जातियो मे विभक्त होगये। सन् १८५६ ई० मे जीद के महाराजा स्वरूपसिह की फौज का ६ महीने तक लजवाणा के दो जाट दलाल भाई भूरा और निघाइया ने किया था। अन्त मे महाराजा जीन्द को अग्रेजो की सहायता लेनी पडी थी। कहावत बन गई-"आठ फिरंगी नौ गौरे, लड़े जाट के दो छोरे।" सन् १८५७ के स्वतन्त्रता सगाम मे भारत के जाटो के बलिदान किसी से कम नही थे। बल्लभ के जाट राजा नाहरसिह का बलिदान प्रसिद्ध है। शहीद शिरोमणि सरदार भगतसिह भी जनेऊधारी आर्य जाट ही था।

अग्रेजों ने भारत को पराधीन कर लिया किन्तु भरतपुर के किले को अंग्रेज भी नहीं जीत सके थे। वीर शिरोमणि चूडामन, महाराजा सूरजमल और जवाहरसिंह की वीरता की कहानी जानने के लिए इनके जीवनचरित और इतिहास पढिये। देहली के चारों ओर कई सौ मील का क्षेत्र जाट बहुल है। यह राजधानी का रक्षा कवच है। १८५७ की क्रान्ति इसी क्षेत्र से प्रारम्भ हुई थी।

चित्तौडगढ पर देहली की ओर से चढाइया हुई, भरतपुर पर भी हुई, किन्तु चित्तौडगढवालों ने देहली पर कभी चढाई करने की हिम्मत नहीं की। किन्तु भरतपुरवालो ने दिल्ली पर चढाई करके दिल्ली को खाक मे मिला दिया था। चित्तौड से जो वस्तु दिल्ली गई थी, उसे भी भरतपुरवाले दिल्ली से जीतकर भरतपुर लेगये, जिसे आज भी देखा जा सकता है।

पाकिस्तान की लडाई मे और अभी कारगिल युद्ध मे हुए जाट वीरो के बलिदानों के तो हम प्रत्यक्ष द्रष्टा हैं। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

ऐसे शूरवीर देशभक्त आर्य जाट वीरो को लुटेरा कहना इतिहासकारो की बेइन्साफी और गद्दारी है। ऐसे इतिहास का सशोधन जरूरी है, यह शिक्षा का भगवाकरण नहीं है।

-वेदव्रत शास्त्री

आर्यों का सच्चा रहनुमा श्रद्धानन्द

-नाज़ सोनीपती

मर्दे मैदान-ए-अमल थे श्रद्धानन्द।
नेक दिल जादूब्या और होशमन्द।।
मौजजन थे जिन के दिल मे वलवले।
तय किए मुश्किल से मुश्किल मरहले।।
खास इन्सानो मे था जिनका शुमार।
आर्यजाति की अजमत और वकार।।
आप की कुर्बानियो पर जा फिदा।
आपका कितना था ऊचा मरतबा।
धाक बैठी आपकी है सू-ब-सू
आप अब तक है जहा मे सुर्खरू।
वेद की तालीम देने के लिए।
जा-बजा कायम गुरुकुल कर दिए।।
खिदमते कौम-ो-वतन मे जिन्दगी।
भेट कर दी 'नाज' अपनी हर घड़ी।

वैदिक-स्वाध्याय

देवाधिदेव महादेव परमात्मा

यच्चिद्धि शश्वता तना देवं देवं यजामहे।
त्वे इत् हूयते हविः (ऋ० १२६६, साम० उ ७३१)

शब्दार्थ--(शश्वता तना) सनातन और विस्तृत हवि से (यत् चित् हि देवं देव) यद्यपि हम भिन्न-भिन्न देवों का (यजामहे) यजन करते हैं (हवि.) पर वह हवि (त्वे इत्) तुझ में ही (हूयते) हुत होती है तुझे ही पहुंचती है।

विनय--हे देवाधिदेव, एक देव! इस जगत् में दो प्रकार के नियम काम कर रहे हैं। एक शश्वत सनातन नियम हैं जो कि सब काल और सब देशों मे सत्य हैं, सदा लागू हो रहे हैं। दूसरे वे नियम हैं जो कि भिन्न-भिन्न अवस्थाओं मे ही सत्य हैं, जो कि स्थानिक हैं, स्वल्पकालिक होते हैं, शाश्वत नियमो के अनुसार चलने से ही प्रभो! तुम्हारा पूजन होता है और अशाश्वत अविस्तृत नियमों के अनुसार चलने से केवल उस-उस देव की तृप्ति होती है, उस-उस देव का यजन होता है। पर हे प्रभो! इस परिमित अशाश्वत संसार में रहने वाले हम परिमित अशाश्वत शरीरधारी प्राणी तुम्हारा यजन भी सीधा कैसे कर सकते हैं? हम तुम्हारा यजन इन देवों द्वारा ही कर पाते हैं। फिर तुम्हारे यजन मे और इन देवों के यजन मे भेद यह है कि हम जो यज्ञ विस्तृत और सनातन दृष्टि से (भावना से) करते हैं, वह तो इन देवो द्वारा तुम्हे पहुच जाता है और जो यज्ञ परिमित भावना से करते हैं वह इन देवो तक ही पहुचता है। यदि हम अग्नि-होत्र अपनी वायुशुद्धि के लिये करते हैं तो यह अग्नि व वायुदेवता का यजन है, पर यदि हम यही अग्नि-होत्र ससार चक्र को चलाने में अंगभूत बनकर करते हैं तो इस अग्नि-होत्र से तुम्हारा यजन होता है। यदि हम विद्या का सग्रह अपने सुख के लिये करते हैं तो यह सरस्वती देवी का यजन है पर यदि यह हमारा ज्ञान तुम्हारी ही प्राप्ति के प्रयोजन से है तो यह सरस्वती देवी द्वारा तुम्हारा पूजन है। इसी तरह अपनी मातृभूमि देवी का पूजन भी केवल स्वदेशोद्धार के लिये या जगत् हित के लिये दोनो तरह का ही हो सकता है। यहा तक कि यदि हमारे अपने देह की रक्षा, हमारा नित्य का भोजन खाना भी सचमुच तुम्हारे ही लिये है तो यह दीखनेवाली देह-पूजा भी असल में तुम्हारा ही यजन है। इसीलिये सब बात भाव की है, हवि के प्रकार की है। हम सनातन और विस्तृत भावना से जिस भी किसी देव का यजन करते हैं, उन सब देवो के नाम से दी हुई हमारी हवि तुम्हे ही जा पहुचती है। तब हमारा लक्ष्य तुम्हारी तरफ हो जाता है। अतएव जब हमारा एक-एक कार्य शाश्वत दृष्टि से सनातन नियमो के अनुसार होता है तब हमारे कर्म से जिस किसी भी देव की पूजा होती दीखती है, वह सब पूजा असल मे तुम्हारे ही चरणो मे पहुच जाती है।

(वैदिक विनय से)

उपनियम के अनुसार पहले श्री कैप्टन देवरत्न जी स्वयं चलकर दिखायें

बडी प्रसन्नता की बात है श्री कैप्टन जी ने सार्वदेशिक पत्रिका के माध्यम से घोषणा की है, कि मैं आर्यसमाजो को अब आर्यसमाज के नियम उपनियम पर चलाऊगा।

श्री कैप्टन देवरत्न जी, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
सादर नमस्ते!

दो साल पहले मैंने आपको पत्र लिखा था आपने मेरी बात का समर्थन करते हुए लिखा था मैं केवल अन्तरग सदस्य हू अन्तरग सभा मे जरूर इस विषय को उठाऊंगा, आप अब सभा के प्रधान है कृपया दुबारा गोर करने का कष्ट करें।

सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्णित आर्यसमाज के उपनियम सख्या ४० के अनुसार आर्यो की एक प्रान्त मे केवल एक ही सभा होगी किन्तु सार्वदेशिक सभा ने दिल्ली मे दो सभाओं को १. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा २. प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को मान्यता दे रखी हे। मान्यता ही नहीं प्रादेशिक सभा तो अन्य प्रान्तो मे भी अपनी उपसभाये खोलने की इजाजत दे रखी है जबकि अन्य किसी भी प्रान्तीय सभा को अपना विस्तार अन्य किसी प्रान्तों में करने की इजाजत नहीं है। इस गम्भीर अनियमितता को दूर करने का प्रयत्न करें।

--आर्यमुनि, आर्यसमाज, आर्यनगर पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५

राष्ट्रीय गोरक्षा महासम्मेलन

स्थान पुन्हाना, जिला गुड़गांव ७.१२.२००१ में पारित प्रस्ताव

हम सभी मेवात के अल्पसंख्यक हिन्दू आप सभी का पुन्हाना में पधारने पर हृदय से स्वागत करते हैं। यह मेवात हरयाणा के जिला गुडगांव मे तावडू, नूंह, नगीना, फिरोजपुर झिरका व पुनहाना खण्ड, जिला फरीदाबाद में हथीन खण्ड, राजस्थान के जिला भरतपुर में जुरहेडा, कामां, पहाड़ी व नगर खण्ड तथा जिला अलवर में रामगढ, गोबिन्दगढ, तिजारा व किशनगढ खण्ड तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में हिन्दू १९४७ में लगभग २०प्रतिशत थे। परन्तु आबादी जब कि दुगनी हो गई है। हिन्दू ९ प्रतिशत रह गया है। जबकि कानूनन गौ हत्या बन्द है। इस मेवात में पुनरपि अधाधुंध हो रही है। इस अधिकता को देखते हुए मेवात व हरयाणा, राजस्थान व उत्तरप्रदेश के हिन्दू भी अब इस अत्याचार को बर्दाश्त करने में असमर्थ हो रहे हैं। पिछले दिनो जब नई ग्राम के लोगों ने लगभग ६५ गायों की हत्या कर गढी बरबारी उत्तर प्रदेश के गावों के खेतों में उनकी अस्थी पंजर डाल दिये तो लोगों को इस सच्चाई का और भी आभस हुआ, जिस पर लागो में उत्तेजना आई। फिर हिन्दुओं की पंचायत गौ हत्या को रोकने के लिए कामर (उत्तरप्रदेश), कामां (राजस्थान), कोसीकला (उत्तरप्रदेश) तथा महापचायतें पलवल व सौंध (हरयाणा) में हुई। जिसमें कुछ ठोस निर्णय लिए गये। सौंध की पचायत मे तय हुआ कि आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात तथा हरयाणा राज्य गौशाला संघ के तत्त्वाधान में राष्ट्रीय गौ रक्षा महासम्मेलन किया जाये। पलवल की महापंचायत में तो हरयाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश की सभी खापों के सरदार एकत्रित हुए। हरयाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान जो श्रीराम श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द की पवित्र भूमि पर गौ हत्या जैसा घिनौना कार्य जारों पर है अब कतई बन्द करना है।

यह निर्णय लिया गया तथ सौंध की पंचायत मे हिन्दू, मुसलमान दोनो ने निर्णय लिया कि यदि कोई गौ हत्या करेगा तो उस पर २१००० हजार रुपये का दड तथा समाज से निष्कासित किया जायेगा। इस निर्णय का मेव भाइयो की कोट की पंचायत ने भी समर्थन किया परन्तु इसके बावजूद भी गौहत्या उसी धडल्ले से हो रही है। हमारे हरयाणा के साथ वाले राज्य राजस्थान, उत्तर प्रदेश व देहली राज्य सरकारो ने गौ-हत्या को रोकने के लिए सख्त कानून बनाये हुए हैं। जिसमें १० वर्ष की सजा व सेशन ट्रायल है, सरकारी गौ सेवा आयोग बनाये हुए हैं। हम इस सम्मेलन के माध्यम से निम्न प्रस्ताव पारित कर हरयाणा राज्य सरकार से माग करते हैं कि गौ रक्षा कानून मे संशोधन करे -

१ गौ हत्या को मानव हत्यार मानकर धारा ३०२ से जोडा जाये जिसमे कम से कम दस वर्ष की सजा और २१००० रुपये जुर्माना का प्रावधान हो।
२. सरकारी खर्चे पर गौ सदन खोले जायें।
३. पंचायत द्वारा प्रस्तावित भूमियो पर जो गौशाला बनी हुई हैं वो भूमि उन गौशालाओ के नाम की जाये।
४ सरकार ग्रामो मे चरागाहों की भूमियो को गऊशालाओ को देने का प्रावधान करे।
५. उ प्र की भांति हरयाणा में कृषि विपणन विभाग से १०प्रतिशत गौरक्षा के लिए देने का प्रावधान किया जाये।
६. मेवात में गौरक्षा के लिए पुलिस के गौ रक्षा दस्ते अलग से बनाये जायें।

यह सम्मेलन केन्द्र सरकार से भी मांग करता है कि :-

१ गौ रक्षा हेतु गौ रक्षा आयोग का गठन किया जाये।
२ गौ रक्षा के लिए अलग से गोचर भूमि रखी जाये।
३. गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।
४ गौ रक्षा कानून देश के सभी प्रान्तों पर लागू किया जाये।
५ गौ वश, गौ मांस, गौ खाल के निर्यात पर पाबन्दी लगाई जाये।
६. गौ की मानव को आवश्यकता पर लोगों को शिक्षित किया जाये।

सम्मेलन में उपस्थित भारत के सभी प्रान्तों से पधारे लाखों गौ भक्तों की ओर से

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात
पुन्हाना, जिला गुड़गांव

हरयाणा राज्य गौशाला संघ
घड़ोली, जिला जींद

महर्षि दयानन्द की जय हो ! वैदिक धर्म की जय कब होगी ?
(आनन्द संग्रह से साभार)

आर्यजगत् के तपोनिष्ठ वीतराग संन्यासी स्व० पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की अन्तर्वेदना

प्रिय आर्य अन्धुओ !

वैदिक धर्म की जय उस समय होगी जब हमारे कॉलेजो से पढकर सौ में से ५ नवयुवक सन्यासी हो जायेंगे, गुरुकुलो में से बीस में से २ या ३ ब्रह्मचारी सन्यासी हो जायेंगे और बिना गृहस्थ में प्रवेश किये संन्यास को धारण करके वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे, बताओ तो सही ? नरेन्द्र-स्वामी विवेकानन्द कैसे बने ? उसी समय जब उन्होने सन्यास आश्रम धारण किया।

प्रचार तब होगा जब कॉलेजो से गुरुकुलों से युवक बीए, एमए, शास्त्री परीक्षा पास करके सन्यासी बनेंगे और उनके माता-पिता प्रसन्नता से कहेगे कि हां पुत्रो, जाओ वैदिक धर्म का प्रचार करो। तब ऋषि दयानन्द की जय और वैदिक धर्म की जय जयकार होगी। बुद्ध धर्म का प्रचार कैसे हुआ ? स्मरण रखो। राजा अशोक के पुत्र युवक महेन्द्र और उसकी युवा पुत्री संघमित्रा के सन्यास की कथा, जिन्होने लंका मे बुद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए अपने आपको समर्पण कर दिया और वहा जाकर बुद्ध धर्म को सारे देश मे फैला दिया।

वैदिकधर्मियो ! सोचो तुम भी तो वैदिकधर्मी हो ? है तुम मे कोई राजकुमार और राजकुमारी ? कोई महेन्द्र और संघमित्रा ? वैदिक धर्म को ऐसे सच्चे वैदिक प्रचारको की आवश्यकता है। ऐसे प्रचारक संन्यासी हो सकते हैं जिन्होंने शारीरिक आध्यात्मिक शक्ति बढाई हो, जिसकी आत्मा बलवान् हो चुकी है। जब पूर्ण होगा जिस दिन आर्यसमाज से नवयुवक सन्यासी बनकर आर्यसमाज का प्रचार करेंगे। अभी तो १,२,३ वृद्ध सन्यासी रह गये हैं वह भी जाते रहेगे, नवयुवको समझो, और सोचो सन्यास की ओर झुको, वीर्यवान् होकर संन्यासी बनो, फिर देखो कल्याण होता है कि नहीं।

किसी आर्यसमाजी से पूछा जाता है कि क्यों जी आप कौन ? उत्तर मिलता है कि मैं आर्यसमाजी विचार रखता हूं। भाई ! केवल विचार वाले आर्यसमाजी की आवश्यकता नहीं है। यदि कभी थी तो वह सय व्यतीत हो चुका। अब तो कर्त्तव्यपरायण आर्यो की आवश्यकता है। इसलिए यदि आपके मन में संसार सुधार की चिन्ता है, तो पहले आप सुधरो, अन्य लोग तुम्हारे कर्त्तव्यो का अवलोकन कर सुधर जायेगे। अब प्रश्न है कि अपना सुधार कैसे हो ? "अहकार-मैं बडा हू मुझ से बढकर कोई नहीं है यह अहकार है, शास्त्र कहता है "आत्मनि आत्माभिमान." ।

एक माता ने अपने पुत्र को अपने चरखे का तकला दिया और कहा कि इसका टेडापन निकलवाकर लाओ। वह गया और लुहार ने चोट लगाकर उसका टेढापन निकाल दिया। अब वह लुहार से टेढापन मांगता है, लुहार आश्चर्य मे है कि यह क्या मागता है ? वह बालक माता के पास पहुचा, माता ने उसे समझाया कि पुत्र तकले मे बल पड गया था, लुहार ने चोट लगाकर सीधा कर दिया।

इसी प्रकार हमारी आत्मा मे अहकार का बल पड गया है, आवश्यकता है कि इसको ज्ञान रूपी चोट लगाकर सीधा किया जाय परन्तु हम क्या करते हैं ? तुर्क कुतर्क के रण मे हमने ससार को जीत लिया परन्तु कर्त्तव्यपरायण नहीं बने और ना अहकार का त्याग किया है। भद्र पुरुषो ! विचारो कि हमने अपने आचार्य "देव दयानन्द" की आज्ञा का पालन कहा तक किया है ? हम तो घर से निकलना ही नहीं जानते, परन्तु बाहर निकले कौन ? गृहस्थ मे रहते हुए बाल बच्चो की ममता मोह नहीं छोडती, सन्यासी वानप्रस्थी आश्रमी बनना नहीं। क्योंकि मन मे यह अशुद्ध भाव बैठ गया है कि बृद्ध होने पर सन्यास ग्रहण करेंगे। भला वृद्ध होकर सन्यास ग्रहण करने का क्या लाभ। जब कि समस्त इन्द्रियां शिथिल होजायेगी, उस समय क्या काम कर सकोगे ? बात यह है कि जिस पुरुष में दुष्ट भाव हो वह बहाने बहुत किया करता है।

एक दिन ईसाइयों की मुक्ति सेना (साल्वेशन आरमी) के कुछ लोग मुझे मिले। मैंने उनसे पूछा कि आपने सन्यास (पादरी) क्यों लिया ? उन्होने कहा कि ईसा ने इंजिल मे लिखा है कि "मैं पिता को पुत्र से अलग करने आया हूं मिलाने नहीं।" अब इस पर विचार करो कि ईसाई लोग तो सन्यास धारण करे परन्तु आर्य पुरुष सन्यास का नाम न लें। स्मरण रखो कि जब तक तुम लोगों मे से संन्यासी नहीं निकलेगे तुम्हारे वैदिक धर्म का प्रचार न होगा। क्योंकि संन्यासियो के बिना और कोई सीधी सीधी और खरी खरी बाते सुना नहीं सकता। तुम ससार को उच्च और सच्चे विचार दो। ससार तुम्हारे चरणों मे गिरेगा। परन्तु करे कौन ? हम तो जगत् व्यवहार मे फसे हुए हैं, हमे राज्य तथा बिरादरी का भय है, परन्तु परमात्मा का नहीं।

उचित यह है कि पहला स्थान परमात्मा को और धर्म के भय को देते, परन्तु हमने उसकी उपेक्षा की, जिसने धर्म का निरादर किया उसका कभी सत्कार नहीं हो सकता। इसलिये सबसे पूर्व काम, क्रोध, मोह, अहकार पर विचार प्राप्त करके आत्मा को दृढ बनाओ, जब आत्मा बलयुक्त हो गया तो सब कार्यो मे सफलता प्राप्त होगी।

हमारे रोगो की जाच करके ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म रूपी औषधि पत्र हमारे हाथ मे दिया था, परन्तु हम ऐसे दुर्भागी निकले कि वह औषधि पत्र ही चाट गये। अब रोग की निवृत्ति हो तो किस प्रकार। डिप्टी कमिश्नर बुलाये तो रोगग्रस्त होते हुए भी खाट से उठकर उसके पास दौड जायेंगे परन्तु आर्यसमाज के सत्सग अधिवेशन मे जाने के लिये बहाने सूझते हैं, आज जुखाम होगया, आज घर पर मेहमान आगये। डिप्टी कमिश्नर और बिरादरी का इतना भय, परन्तु आर्यसमाज जो धर्मसभा है उसका इतना भी नहीं है। फिर वैदिक धर्म का प्रचार करे तो कौन ? वास्तव मे बात यह है कि ऋषि दयानन्द के वैदिक मिशन को पूर्ण करने के लिए इस समय किसी तेजस्वी आत्मबल आत्मा की आवश्यकता है। हम जैसे संसारभोगी पुरुषो से जिन्होने रुपये जैसी निकृष्ट वस्तु से धर्म को गिरा दिया। वैदिक धर्म का प्रचार न हो सका। यदि हममे धर्म प्रचार की कुछ भी अभिलाषा है तो आज से ही यह प्रण करलो कि प्राण जाय तो धर्म पर, जायदाद जाये तो धर्म पर, अर्थ-सन्तान जाये पर धर्म न जावे। जिस दिन धर्म यह समझ लेगा कि मेरा आदर प्राणो से भी अधिक किया है उसी दिन धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा और तुम सारे ससार में वैदिक धर्म प्रचार करने के योग्य हो जाओगे। "धर्मो रक्षति रक्षित:" तब ही महर्षि दयानन्द की जय वैदिक धर्म की जय होगी।

मनुष्य जीवन की चेतावनी

यावत्स्वस्थमिद शरीरमरुजं
यावज्जरा दूरत.,
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता
यावत्क्षयो नायुष. ।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा
कार्य. प्रत्यत्नो महान्,
सन्दीप्ते भवने तु कूपखनन
प्रत्युद्यम. कीदृश. । ।
(भर्तृहरि वैराग्य शतक से)

कविता भाव

जबलो यह शरीर हृष्ट-पुष्ट रोग रहित,
जबलो नहीं निकट बुढापा दुष्ट आयो है।
जबलों नहीं शक्ति इन्द्रियों की शिथिल भई,
जबलो कोई बुद्धि मे विकार न जनायो है। ।
जबलो बलदेव कवि पकडे कल्याण पथ,
सोई नर बुद्धिमान् पण्डित कहायो है।
आग लगी घर मे तब खोदे जो कुआ मूढ,
यत्न सब व्यर्थ गृह भस्म करायो है। ।

सकलपकर्ता
-स्वामी केवलानन्द सरस्वती
ज्ञानसागर वैदिक साहित्य प्रचारकेन्द्र,
कर्मवीर भाई बन्सीलाल आर्यस्मारक,
आर्य वसतिगृह, उद्गीर जिला लातूर (महाराष्ट्र)

दु:खी घनी दो

टेक : म्हारे देश में दु:खी घनी दो, एक गऊ एक लड़की।
आज का क्यूकर दिन लिकडेगा, न्यूं ऊठ के सोचे तडकी। ।

१ गाव मोहल्ले शहर गली मे, हाडे ये धक्के खाती।
गन्दे प्याज सडी हुई सब्जी, देखी गऊ चबाती।
पेट की फिरती आग बुझाती, मनुष्य देख के फडकी। ।

२ बैता गेल्या गात सुजा के काटें फेर गलो को।
भाए-भाए गाएं करती, त्याग के मूत्र मलो को।
ठेस ना पहोची कदे दिलो को, और ना छाती धडकी। ।

३ शादी पाछे कष्ट होवे था, आज लडकी को कष्ट पेट में।
अल्ट्रा साउड इसा बनाया, करें लडकी नष्ट पेट मे।
आकार बना जब स्पष्ट पेट मे, गेल्या ए बिजली कडकी। ।

४ उसे जलावें जहर पिलावे, जो ससार बसाती।
प्रधानमन्त्री देश की संसद ना कोई रोक लगाती।
ओमदत्त की ना पार बसाती, फेर कालजे मे को रडकी। ।

-ओमदत्त नैन आर्य, सूबेदार मेजर (रिटा०), बत्तरा कालोनी, पानीपत

राष्ट्रीय सुरक्षा, अनुशासन एवं शान्ति का मूलमन्त्र 'धर्मदण्ड'

– आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक'

किसी भी व्यक्ति, परिवार, स्थान, समाज एव राष्ट्र को शान्त एवं सुरक्षित रखने का मूल उपाय धर्मदण्ड है। धर्म से अभिप्राय ज्ञानपूर्वक कर्त्तव्य कर्म एव दण्ड से अभिप्राय सुरक्षा के साधन है। एक अल्पमति व्यक्ति भी जब किसी कार्य को सिद्ध करना चाहता है तो वह उसके करने की विधि जानने का प्रयास करता है। जितना कार्य वह सम्पन्न कर चुका होता है, उसे वह सुरक्षित रखने के साधन अपनाता है। एक छोटे से छोटा बालक भी किसी इच्छित वस्तु की प्राप्ति हेतु पूर्ण ध्यान देता है और जब प्रयास करने से वह वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है, तब वह उस वस्तु को अपनी पूर्ण शक्ति से मुट्ठी में बद कर लेता है। तब यदि कोई उससे अधिक बलवान् व्यक्ति भी उससे उस वस्तु को छीनने का प्रयास करता है तो वह उसे सहजतया छोडता नहीं और यदि फिर भी कोई उससे छीनने का प्रयास करे तो वह अवश्य ही अपने दातो से काट देता है। यही जीवन को सुखी बनाने का मूल मन्त्र है कि पहले हम कर्त्तव्य कर्म की ओर पूर्ण ध्यान दें, पश्चात् कार्यसिद्ध हो जाने पर उसकी सुरक्षा हेतु पूर्ण बल लगा दें। इसी बात को परम पिता परमात्मा ने मानव धर्म वेद मे–**"यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरत: सह, त लोक पुण्यं प्रज्ञेषम्"** कहा है। अर्थात् वही स्थान पुण्य लोक (निर्भयता, शान्ति एवं सुखयुक्त) हो सकता है जहां के लोग कर्त्तव्य कर्म का पूर्ण ज्ञान रखते हों और उसकी सुरक्षा हेतु उग्र दण्ड की व्यवस्था करते हों।

सुख का यह मूल सूत्र प्रभु की सम्पूर्ण सृष्टि मे व्याप्त है। परम पिता परमात्मा ने प्रत्येक प्राणी को उत्पन्न करके जहा उसे जीवनयापन हेतु सामान्य ज्ञान दिया वहां उसे जीवन की सुरक्षा हेतु कठोर एव तीक्ष्ण अंग भी प्रदान किए। ससार मे दृष्टिगोचर एक छोटी से छोटी चींटी भी जब कभी हमारे अज्ञान के कारण दब जाती है तो वह भी स्वयं को बचाने के लिए हमें काटती है। प्राय: संसार के सभी प्राणियों को परमात्मा ने अपनी सुरक्षा के लिए इसी प्रकार के साधन प्रदान किए हैं। किसी को डंग तो किसी को नाखून, किसी को सींग तो किसी को दान्त, किसी को तीक्ष्ण पंजे तो किसी को शूल के समान चुभने वाले बाल। कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य के बालक से लेकर संसार के प्रत्येक बडे से बडे सिह और हाथी तक को भी परमात्मा ने अपनी सुरक्षा हेतु दण्ड प्रदान किया है।

इसमे दो मत नहीं कि दण्ड के बिना ससार का कोई औचित्य नहीं। यदि दण्ड को निकाल दें तो सारी धरा धराशायी हो जाती है। लगभग प्रत्येक प्राणी को मिला मेरुदण्ड इसी बात का सूचक है। यदि जीना है तो दण्ड को सुरक्षित रखो। अन्यथा जैसे मेरुदण्ड के टूटने से जीवन मृत्युवत् हो जाता है ठीक वैसे ही परिवार, समाज एव राष्ट्र से दण्ड विधान के छूट जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है। दण्ड के भय के बिना भय का ताण्डव नृत्य, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, दु:ख एव अशान्ति आदि अपने पंजे जमा देते हैं। क्योकि कर्त्तव्य न निभाने पर किसी को दण्ड का भय नहीं अथवा क्षमा मिल जाने की पूर्ण आशा है। अत सम्पूर्ण व्यवस्था भग हो जाती है। व्यक्ति उच्छृखल होकर सब धर्म कर्म को ताक पर रख देता है। जंगल राज्य की स्थापना हो जाती है। यदि परिवार में बच्चों को माता-पिता के दण्ड का भय नहीं होता तो वे बच्चे कर्त्तव्यहीन, असभ्य, पढाई-लिखाई में रुचि न लेकर समाज में अनुशासनहीनता को जन्म देते हैं। बाल्यकाल से ही ऐसे सस्कारहीन व्यक्ति आगे चलकर भी राष्ट्र के पतन का ही कारण बनते हैं। यही स्थिति दण्ड के बिना विद्यालयों एवं महाविद्यालयों मे वर्तमान के अधिकांश छात्र-छात्राओ की है। मैंने एक विद्यालय में प्रवचन करते हुए बच्चों से पूछा– "आजकल के विद्यार्थियों द्वारा नकल करना, विद्यालयो से भागना, अध्यापको का अपमान करना, आज्ञा का उल्लंघन करना आदि अनिष्ट कार्य क्या पहले अधिक होते थे अथवा अब अधिक होते हैं ? उत्तर मिला कि अब अधिक होते हैं। तब मैंने पुन प्रश्न किया कि विद्यार्थियों को अध्यापकों के द्वारा दण्ड, मार-पिटाई और डाट पहले अधिक मिलते थे या अब ? तो उत्तर मिला कि पहले। तब मैंने उन्हे कहा कि यदि आप पहले के समान अच्छे विद्यार्थी बनना चाहते है तो आज से प्रसन्नतापूर्वक गुरुजनो से दण्ड लेना स्वीकार करो। क्योकि जब दण्ड दिया जाता था तब विद्यालयों का वातावरण अच्छा था। अब दण्ड के अभाव में विद्यालयों का वातावरण अत्यन्त उच्छृंखलतायुक्त होता जा रहा है। न तो विद्यार्थियों को अध्यापकों का और न ही माता-पिता का भय है। दूसरी ओर अध्यापकों को भी न तो अपने धर्म का ही भय है और न अपने अनुशासकों का। अत: जहां आजकल के विद्यार्थी परिश्रम के बिना केवल नकल से पास होना चाहते हैं वहा अध्यापक भी पढाने का पुरुषार्थ न करके केवल ट्यूशन से ही पास करवाना चाहते हैं। क्योंकि किसी को किसी प्रकार के दण्ड का भय नहीं है।

(क्रमश:)

शत्रु को सबक सिखाने का समय

यह एक शुभ संकेत है कि भारत में जो आतंकवादी गतिविधिया जारी हैं उनके बारे मे अमेरिका ने सही दिशा की ओर सोचना प्रारम्भ कर दिया है। पिछले दिनों भारतीय संसद को उडाने की जो चेष्टा की गई उस पर अमेरिका की प्रतिक्रिया बहुत ही उचित है। देखना यह है कि भारत सरकार आतंकवाद के विरुद्ध कोई ठोस कार्यवाही कर पाती है या नहीं ? आतंकवाद के खिलाफ ठोस कार्यवाई के तहत यह उचित ही होगा कि भारत सीमा पार के आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करे। अगर आतंकवादियों को प्रशिक्षित करने के ठिकानों को नष्ट नहीं किया गया तो इससे भारत की दुर्बलता ही उजागर होगी। आतंकवादियों के अड्डे नष्ट करने के मामले में भारत सरकार जिस तरह ऊहापोह से ग्रस्त दिखाई दे रही है, उसकी तनिक भी आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता इसलिए नहीं है, क्योंकि गुलाम कश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा नहीं है। वह भारत का हिस्सा है जिसे पाकिस्तान ने जबरन हथिया लिया था और जहां पर उसने आतंकवादियों के प्रशिक्षिण शिविर बना रखे हैं। गुलाम कश्मीर के संदर्भ मे पाकिस्तान द्वारा यह कहा जाता रहा है कि वहां प्रभुसत्ता सपन्न सरकार का शासन चल रहा है चूंकि पाकिस्तान गुलाम कश्मीर पर अपनी सप्रभुता नहीं मानता अत. यदि भारत सरकार पाक अधिकृत इस भूभाग में चलाए जा रहे आतकवादियों के अड्डो को नष्ट करती है तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं। इस मामले में अन्तर्राष्ट्रीय सहमति के भारत के पक्ष में होने के सकेत भी मिल नहीं रहे हैं।

पिछले कुछ समय से पाकिस्तान प्रशिक्षित और पोषित आतंकवादियों द्वारा भारत के विभिन्न हिस्सों में जिस तरह हमले किए जा रहे हैं उन्हें देखते हुए भारत सरकार को जवाबी कार्यवाई करने में देर नहीं करनी चाहिए। आखिर जब इजारयल को इस बात का अधिकार है कि वह फिलीस्तीन में चलाए जा रहे आतंकवादियों के अड्डों को नष्ट कर सके तब फिर भारत को ऐसे ही अधिकार से वंचित कैसे किया जा सकता है ? ध्यान रहे कि अमेरिका ने यह स्वीकार किया है कि इजरायल को फिलीस्तीन पर जवाबी हमले करने का अधिकार है। फिलीस्तीन आतंकवादियों के खिलाफ इजरायली कार्यवाही का अन्य अनेक देशों ने भी समर्थन किया है। इसके साथ ही एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र के अनुसार भारत अपनी संप्रभुत्ता पर प्रहार करनेवालों के खिलाफ पलटकर हमला कर सकता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत अपनी सप्रभुत्ता पर चोट करने वालों के खिलाफ हमला करने के अपने अधिकार का प्रयोग करने से हिचकिचाता रहा है। इस हिचकिचाहट को भारत की कमजोरी समझा गया है और इसका पूरा लाभ आतंकवादियों और उनके समर्थकों ने उठाया है। भारत द्वारा आवश्यकता से अधिक सयम का परिचय दिए जाने के कारण ही आतकवादियो का दुस्साहस बढता चला जा रहा है। चूंकि अब यह दुस्साहस अपनी हदें पार कर रहा है, इसलिए भारत को कठोरता का परिचय देना ही होगा। इस सदर्भ में यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि भारत मे जो आतंकवादी गतिविधिया जारी हैं उनका षड्यन्त्र पाकिस्तान में ही रचा जा रहा है। स्पष्ट है कि पाकिस्तान को सब सिखाना ही होगा।

हो सकता है कि गुलाम कश्मीर मे आतंकवादियों के अड्डों पर प्रहार करने से पाकिस्तान भडक उठे और उसके द्वारा भारत पर आक्रमण किया जाए तथा दोनों देशों के बीच युद्ध छिड जाए, लेकिन भारत सरकार को यह खतरा उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। चूंकि अन्तर्राष्ट्रीय राय धीरे-धीरे पाकिस्तान के विरुद्ध होती चली जा रही है इसलिए भारत को पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ की धमकियों की परवाह नहीं करनी चाहिए। भारत का एक ऐसे शत्रु से पाला पडा है जो बहुत ही कुटिल है और कुटिल शत्रु को नष्ट कर देने में ही देश की भलाई है। चूंकि अमेरिकी दबाव पाकिस्तान पर प्रभावी साबित होगा इसलिए उचित यह होगा कि भारत सरकार अमेरिका को विश्वास मे लेकर पाकिस्तान के खिलाफ कठोर कदम उठाए। निश्चित रूप से भारत को जो भी कार्यवाही करनी है वह अपने बलबूते ही करनी होगी और वह ऐसा करने मे सूक्ष्म भी है, लेकिन बेहतर यही होगा कि पाकिस्तान के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाने के पहले विश्व के प्रमुख राष्ट्रों को वास्तविकता से अवगत करा दिया जाए और उनका समर्थन भी हासिल किया जाए। ऐसा करना भारत के हित में होगा और साथ ही विश्वशान्ति के हित में भी। भारत को अपने हितों के साथ-साथ विश्व शान्ति के हितों की ओर भी ध्यान देना होगा, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि पाकिस्तान के प्रति नरमी का व्यवहार किया जाए।

दैनिक जागरण १७.१२.२००१ से साभार

वेद में सफलता के साधन

–स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल, कालवा

संसार मे प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है परन्तु वह सफलता मिल किसे सकती है ? वेद सफलता के साधनो का विधान करता है। ऋग्वेद मे मन्त्र आया है– **यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिण:। अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत।।** (ऋग्० २।२१।५)

अर्थ–(अप्तुर) कर्मशील (उशिज.) कामनाशील (मनीषिण) मननशील (धिय) अपनी बुद्धियो को (हिन्वान) गति देते हुये (यज्ञेन) सर्वस्व समर्पण के द्वारा (गातुम्) सफलता-प्राप्ति के मार्ग को (विविद्रिरे) प्राप्त किया करते हैं। (अवस्यव.) रक्षाभिलाषी वे (निषदा) एकान्त में (अभिस्वरा) ऊचे और सुन्दर स्वर मे (गा) अपनी वाणियों को (इन्द्रे) ऐश्वर्यशाली परमात्मा मे (हिन्वान) लगाते हुये (द्रविणानि) विविध प्रकार के ऐश्वर्यो को (आशत) प्राप्त किया करते हैं।

इस मन्त्र मे सफलता के साधनों का वर्णन इस प्रकार किया है–१ सफल वे होते हैं जो कर्मशील हैं, जो हर समय किसी न किसी कार्य में लगे रहते हैं। २ सफल वे होते हैं जिनमे कामना हो। कामनाहीन निकम्मो को सफलता नहीं मिल सकती। ३ सफल वे होते हैं जो मननशील बुद्धिवाले होते हैं। ४ सफल वे होते हैं जो अपनी बुद्धियो को हरकत=गति देते रहते हैं। ५ सफल वे होते हैं जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अपना सर्वस्व त्यागने के लिये उद्यत रहते हैं। ६ सफल वे होते हैं जो एकान्त में बैठकर ऊचे और मधुर स्वर मे अपनी वाणी को ईश्वर मे लगाकर उससे तेज, बल और शक्ति की याचना करते हैं।

आगे बढने वाले ही विजय पाते हैं–

अप्रतीतो जयति स धनानि प्रति जन्यानि उत या सजन्या।
अवस्यवे यो वरिव: कृणोति ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवा:।। (ऋ० ४।५०।९)

अर्थ–(अ प्रति, इत.) पीछे पग न हटाने वाला ही (प्रति जन्यानि) वैयक्तिक (या) अथवा (सजन्या) सामूहिक (धनानि) ऐश्वर्यों को धनो को (स जयति) सम्यक् प्रकार जीतता है (य) जो (राजा) पराक्रमी तेजस्वी (अवस्यवे ब्रह्मणे) रक्षार्थी वेदवित् विद्वान् की (वरिव कृणोति) पूजा करता है, आदर और सम्मान करता है (देवा) वे विद्वान् लोग (तम्) उस पराक्रमी व्यक्ति की (अवन्ति) रक्षा करते हैं।

भावार्थ–पीछे पग न हटाने वाला, सदा आगे बढने वाला, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध लडने वाला व्यक्ति वैयक्तिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करता है। धैर्य और साहस के साथ बढने वाला व्यक्ति ही सामाजिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करता है। पराक्रमी और तेजस्वी पुरुष को रक्षा चाहने वाले वेदवित् ब्राह्मणो की पूजा करनी चाहिए, उनके आदेश और सन्देशो को सुनकर तदनुसार आचरण करना चाहिये। जो मनुष्य विद्वानो की पूजा करता है, विद्वान् लोग भी ज्ञानादि के द्वारा उसकी रक्षा करते हैं, उसे कुमार्ग से बचाकर सुमार्ग पर चलाते हैं।

ससार एक क्रीडास्थल है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना पार्ट पूर्णकर यहा से प्रस्थान करना है। सभी को जाना है। हम यहा से प्रस्थान करे परन्तु हसते हुए प्रस्थान करे। इसके लिये वेदमाता हमें चार साधनो का निर्देश कर रही है।

स्वधया परिहिता. श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता।
यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।। (अथर्व० १२।५।३)

अर्थ–(लोक) ससार से प्रसन्नतापूर्वक, हसते हुए (निधनम्) प्रस्थान करने के लिये (स्वधया परिहिता) अन्न-जल और स्वसामर्थ्य से दूसरो का हित सम्पादन करो (श्रद्धया परिऊढा) श्रद्धा से आच्छादित रहो (दीक्षया गुप्ता) दृढ संकल्प से सुरक्षित रहो (यज्ञे प्रतिष्ठिता) यज्ञ में प्रतिष्ठा प्राप्त करो।

वेदमन्त्र मे जीवन को सफल बनाने के साधन बताये हैं। १ अन्न और जल के द्वारा तथा अपने जीवन को होम करके भी दूसरों का हित सम्पादन करो। अपने घर और धान्य से, अपने सभी साधनो से दीन, दु खी और दलितो की खूब सेवा करो। २. श्रद्धा से आच्छादित रहो। आपका जीवन श्रद्धा से ओतप्रोत होना चाहिये। माता और पिता में श्रद्धा रखो, धर्म और सदाचार मे श्रद्धा रखो, अपने कर्म में श्रद्धा रखो। ३ दृढसकल्प से अपने व्रतो का पालन करो। जीवन के एक-एक क्षण का सद् व्यय करते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढे चलो। ४. यज्ञ मे श्रेष्ठ कर्मों मे प्रतिष्ठा प्राप्त करो। सदा श्रेष्ठ और शुभ कर्म ही करो। बडों का आदर करो, छोटों से स्नेह करो, मेल-मिलाप बढाओ, संगठन बनाओ और इस प्रकार प्रतिष्ठा प्राप्त करो। इन साधनो के द्वारा ही जीवन सफल हो सकता है।

आर्यसमाज स्थापना की १२५वीं जयन्ती पर विशेष—

आर्यसमाज क्या करे ?

❑ महावीरसिंह प्राध्यापक, २१/१२२७ प्रेमनगर, रोहतक

गतांक से आगे—

१३. विभाग अनुसार संघ बनाना—सार्वदेशिक सभा के केन्द्र और राज्यो मे वर्तमान विभाग अनुसार उस उस विभाग में कर्मचारियों की वास्तविक समस्याए सुलझाने तथा विभागीय भ्रष्टाचार को रोकने के लिए प्रत्येक विभाग में विभाग की समिति (यूनियन) बनाने हेतु संयोजक या अध्यक्ष की नियुक्ति करनी चाहिए। देश, राज्य, मण्डल, उपमण्डल व खण्डस्तर पर संगठन बनाए जाए। राष्ट्रीय विभाग प्रधान सभी प्रान्तों के प्रधान नियुक्त करे। प्रान्तीय प्रधान जिला अध्यक्ष बनाए, जिलाध्यक्ष उपमण्डल अध्यक्ष बनाए, उपमण्डलाध्यक्ष खण्ड अध्यक्ष बनाए। सभी प्रधान अपनी कार्यकारिणी, सदस्यता व अधिकारियो को चुन लें।

१४. भ्रष्टाचार निवारण मंच—सभी विभागो से कर्मठ व ईमानदार कर्मचारी व अधिकारियो को लेकर केन्द्र, राज्य, जिला, तहसील व खण्ड स्तर पर पूर्ववत् मच बनाए जाए। मंच प्रमाण जुटाकर अपने-अपने स्तर पर भ्रष्टाचारी व्यक्ति को चेतावनी दे। भ्रष्टाचारी न माने तो समाचार पत्रो मे उसकी जानकारी दे। फिर भी न माने तो मच सबूत जुटाकर न्यायालय मे जाए। तभी भ्रष्टाचार रुकेगा दूसरा तरीका कोई नहीं है। मच में अधिकारी वर्ग मे विशेष रूप से उस उस विभाग के सेवानिवृत्त सज्जनो को लेना चाहिए।

१५. आर्य गुप्तचर विभाग—सभी सगठनो की कार्यप्रणाली ठीक चलाने तथा सभी प्रकार के वास्तविक जानकारी पाने के लिए 'गुप्तचर विभाग' का गठन सभा करे। इसकी सहायता परम गोपनीय रखी जाए। प्रधान, मन्त्री व कार्यकारिणी ही इस विभाग का गठन करे व देखभाल करे।

१६. आर्य कोष (बैंक)—विद्यालय भवन, मन्दिर भवन, प्रकाशन, वाहन आदि खरीदने तथा समाज बचतों को सुरक्षित कर ब्याज देने के लिए "आर्य सहकारी कोष" की स्थापना आर्य उद्योगपतियों व सज्जनों से मिलकर स्थापित किया जाए। यदि कोष भली प्रकार चल जाए तो इसकी शाखाएं अन्य प्रदेशों मे भी बनाई जाएं।

सीधी कार्यवाही हेतु शस्त्र बल—आज के समय में सरकार व अपराधी लोग आर्य सामाजिक संगठनो द्वारा बुराइयों के विरुद्ध दबाव बनाए जाने पर आर्यसगठनो को डराने, दबाने, कुचलने और उनके विशिष्ट लोगो की हत्या तक के लिए उतर आते हैं। ऐसे समय में अन्यायपूर्ण घटनाओ के लिए उत्तरदायी लोगों के प्रति सीधी कार्यवाही हेतु एक 'त्वरित प्रतिरोधी शस्त्र बल' का गठन आवश्यक है। 'आर्यवीर दल' की राष्ट्रीय समिति इसका गठन करे।

१७. प्रचार विभाग—वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार के लिए बनाए 'वेद प्रचार विभाग' में नाटक व चलचित्र विभाग अलग से बनाया जाए। नाटक नाट्यशास्त्र की एक प्रचारात्मक विद्या है और चलचित्र उसी का यान्त्रिक रूप है। यदि नाटक मे अच्छे चरित्र के पात्र रखे जाए तो नाटक मे कोई बुराई नहीं है तथा नाटक के वाद-विवाद, हाव भाव, चाल चलन आदि उत्तम हो स्त्री पात्र कम हो, शीलता का पूरा ध्यान रहे। उपदेशक विद्वान् गायन आदि उच्च चरित्र के हों। उनके वेतन अच्छे हो।

१८. विश्व आर्य निर्देशिका—एक विश्व स्तर की 'आर्य निर्देशिका' प्रकाशित की जाए जिसमे सभी आर्यसमाजो के स्थान, भूमि, भवन उनके अधिकारी अन्तरग सदस्यो साधारण सदस्यो के नाम, पते रुचि योग्यता कार्य आदि का वर्णन हो। ये निर्देशिकाए जिला स्तर से लेकर प्रान्त, देश व विश्वस्तर की सुविधानुसार मुद्रित करानी चाहिए। इनकी कीमत भी रखी जा सकती हैं। निर्देशिकाओ से आर्यसज्जन परस्पर जुडकर अधिक कार्य व योजना विस्तार कर सकेंगे।

१९. विश्व शान्ति दल—सार्वदेशिक सभा को आर्य संघर्षशील विद्वानो, साधुसन्तो व कार्यकर्त्ताओं का एक दल तैयार करना चाहिए, जो संयुक्त राष्ट्र सघ से मिलकर सभी देशो मे परस्पर भाईचारा, सहयोग व शान्ति स्थापना व धर्म की वास्तविकता बताने के लिए एक "विश्व शान्ति यात्रा" का आयोजन करे। इसमें बहु भाषाविद् व बहुधर्मज्ञ विद्वानो का होना आवश्यक है। दल अपने साथ ऐसा साहित्य भी रखें जो अनेक भाषाओं मे अनूदित हों दल मे सभी मत मतान्तरों के विद्वानों को सम्मिलित किया जा सकता है। सभी मतों की समान बातें व श्रेष्ठ मानवतापरक बातें उभारकर तथा फूट डालने वाली रूढियों को समझाकर छोडने के लिए प्रेरित किया जाए। यात्रा के विषय प्रदूषण, शाकाहार यम नियम पालन, वर्णाश्रम व्यवस्था से विश्व समस्याओं का समाधान, वैदिक शिक्षा, वैदिक समाजवाद, मशीन का प्रयोग घटाकर मानवशक्ति व पशु-शक्ति से अधिकाधिक कार्य लेना, स्वावलम्बी शिक्षा, नारी सम्मान, मन्दिरो को समाज पुष्टि व चरित्र से जोडना, विश्व सरार बनाने के लिए प्रेरणा आदि हो सकते हैं।

२०. विभिन्न धर्मों व भाषाओं का अध्ययन—आर्यसंस्थाओं में विभिन्न देशी विदेशी भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था की जानी चाहिए। विभिन्न भाषाओ के अलग-अलग छ. मास से लेकर एकवर्षीय द्विवर्षीय त्रिवर्षीय अध्ययनक्रम परीक्षा सुचारू रूप से चलाई जानी चाहिए। इसके साथ ही विभिन्न धर्मों की अध्ययन क्रम परीक्षा भी संचालित की जानी चाहिए जिससे विदेशो मे रोजगार व प्रचार प्रसार के अवसर बढ सके।

२१. भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना—आर्यसमाज की प्रान्तीय सभाएं हैं तथा फिर सार्वदेशिक सभा है लेकिन प्रान्त व विश्व की कड़ी के बीच की कडी अखिल भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नहीं है। भारतीय स्तर की प्रतिनिधि सभा अलग से गठित की जानी चाहिए। इसी प्रकार मण्डल उपमण्डल तथा खण्ड स्तर पर सभा गठित की जानी चाहिए। वर्तमान वेदप्रचार मण्डलों को उपखण्ड स्तर (१० ग्राम का समूह) तक संगठन गठित करने का अधिकार दिया जाए। प्रत्येक स्तर के अधिकारों की स्पष्ट व्याख्या करके उत्तरदायित्व सौंपे जाएं।

२२. सभाएं—१ विद्यार्यसभा केवल विद्यालयों महाविद्यालयो को संभाले, २ धर्मार्यसभा केवल धार्मिक लेखन प्रचार आदि का कार्य करे तथा ३. न्याय सभा केवल झगडों को सुलझाने का कार्य करे। जो न्यायार्यसभा के निर्णय को न माने उसे सभा से निकाल दिया जाए। राजार्य सभा केवल राजनैतिक कार्य करे। ये चारो सभाए सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्य करें।

राजार्यसभा की तुरन्त आवश्यकता—सार्वदेशिक सभा को तुरन्त राजार्यसभा की स्थापना करनी चाहिए। पहले प्रत्येक प्रान्त मे कुछ निश्चित स्थानो पर लोकसभा व विधानसभा के चुनावो मे राजार्यसभा को अपने प्रत्याशी खडे करने चाहिएं। सफलता उपलब्धि के अनुसार प्रत्याशी बढाते जाना चाहिए।

राजार्यसभा अलग स्वतन्त्र संगठन होना चाहिए लेकिन कुछ प्रत्यक्ष अधिकार सार्वदेशिक सभा के पास अवश्य रहे। राजनीति समाज सचालन का प्रमुख अग है। राजनैतिक मच बिना आर्यजन विवश होकर अन्य दलों में चले गए हैं जिससे आर्यसमाज के सगठन मे भारी कमजोरी आई है। यदि आर्यसमाज को सशक्त करना है तो निश्चित रूप राजार्यसभा की तुरन्त आवश्यकता है।

एक भव्य श्रद्धांजलि समारोह

सुभाष नगर पार्क रोहतक में

रविवार, दिनांक २३ दिसम्बर, २००१, २-०० बजे अपराह्ण

आपको ज्ञात ही है कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने हेतु शहीदी जलूस का नेतृत्व करते हुए, चांदनी चौक दिल्ली में, अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती तान दी थी तथा वैदिक धर्म की रक्षा हेतु शुद्धि आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए अपने देश एवं जाति के लिए २३ दिसम्बर, १९२६ को अपने रक्त की अन्तिम बूंद भी समर्पित कर दी थी।

अत उनके ७५वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे रोहतक नगर की सभी आर्यसमाजों/आर्यसंस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान में रविवार दिनांक २३ दिसम्बर, २००१ को सुभाष नगर पार्क (समीप राज टाकीज) रोहतक में २-०० बजे से ५-०० बजे तक भव्य श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें प्रो० ओम्कुमार जी (जीन्द से), डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी (म०द०वि०, रोहतक) तथा प० श्यामवीर जी राघव (दिल्ली से), विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधारेंगे। कृपया सपरिवार पधारकर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को अपनी श्रद्धा के सुमन समर्पित करें।

—देशराज आर्य, मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक

आर्य-संसार

स्वामी श्रद्धानन्द का समर्पण

सिद्धान्तों के प्रति समर्पण और मानवीय सेवा की स्वरूपगत परिभाषा के जिज्ञासुओं के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवन कथा अवश्यपठनीय है। सच तो यह है स्वामी जी का जीवन त्याग, श्रद्धा समर्पण और सेवा जैसे दैवी गुणों का जीवंत स्वरूप है। उन्होंने सिद्धान्तों पर न केवल प्रवचन किये, अपितु उन्हें पूर्णत. आत्मसात् भी किया। यद्यपि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आने और आर्यसमाज की सदस्यता के पश्चात् ही उन्होंने स्वय को समाज, वेद और मानवता की सेवा के लिए अर्पित कर दिया था। किंतु संन्यास आश्रम मे प्रवेश के पश्चात् तो वे जीये ही प्राणी मात्र की सेवा के लिए। १२ अप्रैल १९१७ को मुंशीराम संन्यास ग्रहण कर रहे थे। उन्होंने संन्यास दीक्षा लेते हुए किसी संन्यासी को अपना गुरु नहीं बनाया। उनकी कायापल्ट करने वाले गुरु तो महर्षि दयानन्द ही थे। वे स्वयं भी अपने सम्पूर्ण जीवन को श्रद्धा की दिव्य भावना से उत्प्रेरित मानते थे। उन्होंने संन्यास ग्रहण करते हुये अपने सम्बोधन में कहा था-

श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया है। श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्यादेवी है, अब श्रद्धाभाव से ही प्रेरित होकर मैं संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूं। इसलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखता हूं, जिससे मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल हो सकूं।

स्वामी श्रद्धानन्द एक महान् शिक्षाशास्त्री थे। गुरुकुल कांगडी की स्थापना विश्व इतिहास की महानतम घटना के रूप में उल्लेखनीय है। उन्होने आचार्य के रूप में गुरुकुल का सफल सञ्चालन किया। सौ वर्ष पूर्व उन्होने गुरुकुल की स्थापान के लिए ३० सहस्र रुपये एकत्र करने की प्रतिज्ञा की और कहा कि जब तक यह कार्य पूरा नहीं हो जाता मैं अपने घर मे पाव नहीं रखूगा। उन्होने निजी पुस्तकालय और दूसरी सभी सम्पति गुरुकुल को दान कर दी। १९१२ में जालन्धर स्थित अपनी विशाल कोठी को दान कर देना चाहा, किन्तु वे इससे पूर्व अपने पुत्रों की स्वीकृति ले लेना चाहते थे। इन्द्र जी ने अपने लिखित सस्मरणों में लिखा है कि वे उस दिन को नहीं भूल सकते जब उन्हे और उनके भाई हरिश्चन्द्र को आचार्य जी के कक्ष में बुलाया गया। पिता ने उन्हे कहा कि अब उनके पास यदि कोई अचल सम्पत्ति अवशिष्ट रही है, तो वह जालन्धर की उनकी भव्य कोठी है। यही वे अपने पुत्रों के लिए बचा सके हैं। उनकी इच्छा तो इस कोठी को भी गुरुकुल को दान देने की है। किंतु जब तक वे इसके लिए अपने दोनो पुत्रों की स्वीकृति नहीं ले लेते तब तक उस भवन को दान करना उन्हें ठीक नहीं लगता। आचार्य जी के इस कथन को सुनकर इन्द्र और हरिश्चन्द्र थोडी देर के लिए भावविभोर होकर खडे रहे। तत्पश्चात् उन्होंनें उस दान-पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और इस प्रकार महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल के लिए अपना सर्वस्व देकर सर्वमेध यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति डाल दी।

धन्य हो-समर्पण, त्याग और श्रद्धा की वह विलक्षण प्रतिमूर्ति। त्याग, समर्पण और साहस की ऐसी दूसरी मिसाल विश्व इतिहास के पन्नों में दर्लभ है। अपना, पुत्र, धन वैभव, सुख सब कुछ उन्होने मानवता को अर्पित कर दिया था। श्रीमती सरोजिनी नायडू का यह कथन अक्षरश: सत्य है कि- "वे अपने जीवन की शहादत की अन्तिम घडियों तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति रहे।"

२३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक मतांध मुसलमान ने स्वामी जी की हत्या कर दी। उनका जीवन युग-युगों तक हमें प्रेरणा देता रहेगा।

आचार्य अजय आर्य, आर्यसमाज, सफदरजंग एन्क्लेव
बी-२, नई दिल्ली-११००२९

सन्त श्रद्धानन्द थे

रचयिता . स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द के सच्चे शिष्य श्रद्धानन्द थे।
तारक गण के चन्द थे शुद्ध विचार बुलन्द थे।।
नव क्रान्ति के अग्रदूत व जन-जन के सुखकन्द थे।
ऋषि-मुनियों के विधर्मी बनते नहीं पसन्द थे।।
खोल दिये दरवाजे आकर जो सदियों से बन्द थे।
देश स्वतन्त्र बने अपना उर में उत्साह अमन्द थे।।
विदा हुए तेईस दिसम्बर जय ओम् सच्चिदानन्द थे।
शुद्धि चक्र चलाने वाले सन्त श्रद्धानन्द थे।।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

"आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २६ नवम्बर से २ दिसम्बर २००१ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर का पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (योगाधाम ज्वालापुर हरिद्वार) के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमे सहयोगी डॉ० कणदिव शास्त्री थे। वेदपाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों ने किया। प्रात ईश्वरभक्ति के भजनो का रसास्वादन श्री सतयपाल पथिक जी (अमृतसर) द्वारा कराया गया।

रविवार, २ दिसम्बर २००१ को सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् "राष्ट्र समृद्धि सम्मेलन" सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता पद्म श्री डॉ० श्यामसिह शशि ने की। जिसमे मुख्य वक्ता पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री सोमपाल जी (पूर्व केन्द्रीय मत्री), श्री रासासिह रावत (सांसद), ब्रिगेडियर चितरजन सावत, डॉ० वीरपाल विद्यालकार एव डॉ० महेश विद्यालकार ने राष्ट्र की समृद्धि के सम्बन्ध में ओजस्वी भाषण दिए। इस अवसर पर शुद्धि सभा के प्रधान श्री हरवंशलाल कोहली ने तालिबान व उग्रवाद की भर्त्सना मे एक उत्तेजनापूर्ण स्वरचित कविता प्रस्तुत की। सम्मेलन का कुशल संयोजन श्री बनारसीसिह पत्रकार ने किया। इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा एव श्री सुभाष विद्यालकार, पूर्व कुलपति (गु०का०वि०) भी उपस्थित थे। अन्त मे आर्यसमाज के मत्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा ने सभी आमत्रित विद्वान् वक्ताओ, आर्यसमाज एव स्कूल के अधिकारियो, सदस्यो, अध्यापिकाओ, छात्राओ एव अन्य समाजो से पधारे हुए अतिथियो का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्ति पाठ एव ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।"

अरुणप्रकाश मत्री

नवयुग के निर्माण हेतु अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का आर्यो को दिव्य सन्देश

तुम यह मत भूलो कि वैदिक धर्म कोई सम्प्रदाय या पन्थ नहीं है। यह वह सत्य सनातन धर्म है जिसके बिना ससार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भर के लिए भी नहीं रह सकती। प्राचीनकाल मे असख्य आध्यात्मिक कोषो को खोलने वाली चाबी (वेदज्ञान) तुम्हारे हाथो मे दी गयी थी और अब भी अशान्त ससार को शान्ति देना तुम्हारा ही काम है। किन्तु पहले तुमको अपनी सभी मलिनताओ, अपवित्रताओं को मन व मस्तिष्क से धोना होगा, दूर करना होगा। आज गम्भीर भाव से प्रत्येक आर्य निष्ठावान् को निम्न सात बिन्दुओ पर विचार करने, मानने और कार्यान्वित करने की प्रतिज्ञा करनी होगी कि–

१ तुम वैदिक पचमहायज्ञो (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ (माता, पिता, आचार्य सेवा) अतिथि यज्ञ एव बलिवैश्वदेव यज्ञ) के अनुष्ठान में प्रमाद न करोगे।

२ तुम अस्वाभाविक जाति भेद के बन्धन को तोडकर वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन में परिणत करोगे।

३ तुम अपनी मातृभूमि से अस्पृश्यता के कलंक का समूल नाश कर दोगे।

४ तुम आर्यसमाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार, किसी भी मत, सम्प्रदाय, जाति व रग आदि की भेद भावना का कुछ भी विचार न करके मनुष्यमात्र के परमार्थ के लिये खोल दोगे।

५ तुम्हे यह समझना होगा कि जो मानव होकर मानव से ही भेद (जातिभेद व रगभेद) रखता है या मानता है, वह समाज का सबसे बडा शत्रु है।

६ तुम्हे सच्चा राष्ट्रभक्त व रक्षक बनाने के लिए उनके विरुद्ध खडा होना होगा जो किसी की धरती पर अपना हक जमाकर वहा के लोगों के मानस को भ्रष्ट करनेवाले विधर्मियो और विदेशियो को राष्ट्र-विरोधी व शत्रु समझकर उन्हे उखाड फैंकने के लिये सघर्ष करना होगा।

७ तुम आर्यो को आर्यसमाज के उद्देश्यो एवं वेदज्ञान के प्रचार-प्रसार का बीडा दृढतापूर्वक स्वय उठाना होगा और यह मानना होगा कि भाडे के टट्टुओ से धर्म का प्रचार-प्रसार नहीं हो सकता। इस पवित्र कार्य के लिये निज का स्वार्थ व मोह त्याग करना होगा। धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये निष्ठावान् आर्यो का समूह तैयार करना होगा जो अपनी सन्तानो को इस कार्य हेतु सस्कारित करके कार्यक्षेत्र मे उतारने का सहयोग दे सकें। तभी वे महर्षि देव दयानन्द और माँ आर्यसमाज के ऋण से उऋण हो सकेंगे।

–राजेन्द्र आर्य, हासी (हरयाणा)

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के अन्तर्गत स्थापित वेदप्रचार मण्डल द्वारा वैदिक विचारधारा के प्रसार हेतु किए जा रहे कार्य

संसार मे वैदिक धर्म का प्रचार करना आर्यसमाज का असली काम है और महर्षि देव दयानन्द का यही सदेश है। जिस कदर यह काम अपने में महान् है उतना ही प्रयत्न-साध्य है। हमने महर्षि की प्रचार शैली को त्याग दिया अपने आपको आर्यसमाज की चार दीवारो मे कैद करा लिया। अकेले महर्षि जी ने बहुत कम समय मे स्वय पैदल घूम-घूमकर अनेक तकलीफो/अपमानों को सहन कर वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार किया। आज आने जाने के साधन उपलब्ध हैं–प्रचार के उत्कृष्ट साधन उपलब्ध होते हुए भी आर्यो द्वारा प्रयत्न में कमी आने से वेदप्रचार के पवित्र कार्य में शिथिलता आ गई। इस कमी को दूर करने के लिए हमने नारे दिये–

१. वेदप्रचार के लिये समाजों से बाहर निकलो।

२ लोग हमारे पास न आयेंगे हमें उनके पास जाना होगा।

३. महर्षि दयानन्द की वेदप्रचार शैली अपनाओ।

इन अनुकरणीय क्रियात्मक प्रयासो से वेद प्रचार के कार्य में उल्लेखनीय प्रगति आई।

क) माह मई १९९८ मे सत्यार्थप्रकाश न्यास के अन्तर्गत वेदप्रचार मण्डल इकाई का गठन कर इसके तहत करीब १० लाख की लागत से एक प्रचार वाहन तैयार किया और इसे प्रचार के सभी आधुनिक साधनो से सुज्जित कर तथा इसमे हर तरह का आर्ष साहित्य उपलब्ध करा प्रचार कार्य शुरू कराया। करीब २५,००० रुपये मासिक खर्च (एक उपदेशक, एक भजनोपदेशक मय ढोलकवादक, साहित्य विक्रयकर्ता, वाहन चालक मय हेल्पर) से प्रचार कार्य शुरू किया।

इस भजन मण्डली को ग्राम-ग्राम में भेजते हैं और यज्ञ से कार्यक्रम शुरू कराकर भजन प्रवचन कराते हैं। दूसरे ग्राम मे जाने से पूर्व उस वक्त तक प्रचार कराते रहते हैं जब तक कम से कम एक व्यक्ति वेद प्रचार मण्डल का सदस्य नहीं बन जाता है।

इस प्रचार शैली का ही परिणाम है जिन स्थानों पर महर्षि देव दयानन्द/वेद/आर्यसमाज का नाम भी लोग नहीं जानते वहा जागृति आई-जैसा वहा से बने वेदप्रचार मण्डल के सदस्यो से स्पष्ट है।

इस योजनान्तर्गत दिनाक १४-१-९८ से ३१-८-२००१ तक २५७३० किलोमीटर की यात्रा कर ३१५ ग्रामो व नगरो मे हजारों नर-नारियो को वैदिक विचारधारानुकूल प्रवचन/उद्बोधन प्रदान किये। यज्ञ, वैदिक सत्सग व संस्कार सम्पन्न कराये। लगभग ५२६७२ का साहित्य वाहन के माध्यम से विक्रय किया गया। इसके अतिरिक्त लगभग रु० ३२,००० का प्रचार साहित्य वैदिक धर्म का परिचय, यज्ञ दर्शन (ट्रैक्टस्) व सत्यार्थप्रकाश नि शुल्क वितरित किया गया।

वेदप्रचार की इस शैली से उपलब्धि–अब तक १०८० सदस्य (आजीवन) वेदप्रचार मण्डल के बने। इनमे से सरक्षक सदस्य ५००० रुपये, प्रतिष्ठित सदस्य १००० व सहयोगी सदस्य १०० रुपये प्रतिवर्ष योगदान भी दिला रहे हैं। ये सदस्य आर्ष साहित्य का स्वाध्याय हमेशा करते रहें-इसके लिये वेदप्रचार मण्डल की ओर से वर्ष मे चार बार साहित्य (नि:शुल्क) भी भेजा जाता है।

झीलों की विश्व प्रसिद्ध उदयपुर नगरी में स्थित भव्य सत्यार्थप्रकाश भवन में प्रतिवर्ष २६ से २८ फरवरी में महर्षि देव दयानन्द की स्मृति में आर्यजनों द्वारा विशाल सत्यार्थप्रकाश महोत्सव भी मनाया जाता है। मेरी अभिलाषा है कि आगामी सप्तम महोत्सव के अवसर पर आवें व इस योजना के लाभ प्रत्यक्ष मे देखें।

वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु यह योजना निरन्तर चलती रहे इस हेतु आवश्यक है कि मण्डल के अधिकाधिक सदस्य बनें तथा लगभग १५ लाख रुपये की स्थिर निधि और बने ताकि उसके ब्याज से यह पवित्र व अत्यावश्यक कार्य अनवरत रूप से चलता रहे। इस हेतु आप सभी से मुक्त हस्त से योगदान करने हेतु निवेदन करता हूं। शुभेच्छु · **स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टेक/85-2/2000 ☎ ०१२६२–७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ६ २८ दिसम्बर, २००१ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा का विवाद समाप्त

समझौते पर लोक अदालत ने मोहर लगाई

(नीचे समझौते की फोटो कापी दी जा रही है, असल सभा के पास सुरक्षित है।)

In the Court of Miss, Madhu Khanna HCs, Civil Judge (Jr.Divn).

Civil Suit No. 437 of 2001
Date of Instt:- 4.10.2001
Copy of Order:- 8.12.2001
Date of Decision:- 8.12.2001

1. Arya pritinidhi sabha, Haryana, Daya Nand Math, Rohtak. Through its pardhan Sh. Inder Vesh.
2. Shri Satvir Shashtri, Mantry, Arya pritinidhi Sabha, Haryana, Daya Nand Math, Rohtak.

Vs.

1. Shiri Balwan Singh Suhag, Advocate, Distt. Courts, Rohtak.

...Defendant.

Suit for permanent Injunction as well as for Mandatory injunction.

***

Present:- Sh. C.S. Delal, counsel for the plaintiff No.1.
Sh. R.M. Hooda, counsel for the plaintiff No.2.
Sh. B.S.Suhag, counsel for defendant.
Sh. R.P.Hooda, counsel forthe applicant.

Parties to the suit have entered into a compromise in the Lok Adalat. Statement recorded separately. Compromise mark A placed on record.

In view of separately recorded statement of learned counsel for the plaintiff, suit is dismissed as withdrawn. File be consigned to record room after due compliance.

Announced in LOK Adalat.
Dt: 8.12.2001

Sd/-.
Civil Judge (Jr.Divn).
Rohtak.

1852
8/12/01
10/12/01
Certified to be True Copy

In the Court of Miss, Madhu Khanna HCs, Civil Judge (Jr.Div

Civil Suit No. 437 of 2001
Date of Instt:- 4.10.2001
Copy of Mark A.
Date of Decision:- 8.12.2001

1. Arya pritinidhi sabha, Haryana, Daya Nand Math, Rohtak. Through its pardhan Sh. Inder Vesh.
2. Shri Satvir Shashtri, Mantry, Arya pritinidhi Sabha, Haryana, Daya Nand Math, Rohtak.

...Plaintiffs.

Vs.

1. Shiri Balwan Singh Suhag, Advocate, Distt. Courts, Rohtak.

...Defendant.

Suit for permanent Injunction as well as for Mandatory injunction.

***

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–सारे संसार को आर्य बनाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१ (हरयाणा)

पत्र संख्या 626 दिनांक 25-11-2001

सेवा में

श्री विमल वधावन जी
वरि० उप–प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली।

विषय – आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के चुनाव सम्पन्न कराने हेतु।

मान्यवर महोदय,

आपके आदेश पत्र क्रमांक 1612/2001 दिनांक 9 11 2001 के अनुसार विवादग्रस्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के विवादो के हल के लिए जिस तदर्थ समिति का गठन किया गया था उसके अध्यक्ष का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा गया था।

कार्यभार ग्रहण करने के उपरान्त आर्य समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए दोनों पक्षों से विस्तृत विचार–विमर्श करने के पश्चात् आम सहमति बनाने का फैसला किया गया है क्योंकि दोनों पक्ष मिलकर चुनाव लडने के प्रति कोई निर्णय नहीं कर सके। अतः दोनों पक्षों की सहमति से एक निर्वाचन सूची तैयार की गई है जिसे आपकी सेवा में भेज रहा हूं।

मैं समझता हूं कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को विवादों व झगडों से बचाने के लिए यही रास्ता उचित है नवनियुक्त पदाधिकारी सभा के कार्यों का सफलतापूर्वक संचालन करने में पूर्णतया समर्थ हैं तथा सभी पक्षों का प्रतिनिधित्व किया गया है।

–लगातार पेज 2 पर–

इसी आशा के साथ मैं इसे प्रमाणित करके आपके पास भेज रहा हूं। मैं समझता हूं कि आप भी इस निर्णय से सहमत होंगे।

धन्यवाद सहित।

२५-११-२००१
चौ० सुलतान सिंह
सहायक महाधिवक्ता हरियाणा
अध्यक्ष, तदर्थ समिति,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
दयानन्द मठ, रोहतक।

Certified to be True Copy

11/12/01

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-सारे संसार को आर्य बनाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१ (हरयाणा)

संख्या 481 दिनांक 8-12-2001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के विवाद समाप्त

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रैवार्षिक निर्वाचन 23-9-2001 को सम्पन्न हुआ था। उसको लेकर विवाद हो गया था। इसी बीच में प्रशासक और तदर्थ समिति भी बनाई गई।

आर्यसमाज में उत्पन्न विवाद को समाप्त करवाने के लिए हरयाणा के दोनों पक्षों ने स्वामी ओमानन्द सरस्वती को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रधान मानकर 22-11-2001 को समझौता किया गया। 2-11-2001 की अन्तरंग सभा में तथा 1-12-2001 की साधारण सभा में इसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई और स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी [illegible] सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के [illegible] को शुद्ध करने का [illegible] और उनके आदेशानुसार आर्यसमाज का कार्य करने का [illegible]।

(वेदव्रत शास्त्री) कार्यकर्ता प्रधान

(यशपाल आचार्य) मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

Certified to be True Copy

Authority ... Indian Evidence Act 1872

11/12/01

॥ ओ३म्॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची

1.	प्रधान	स्वामी ओमानन्द सरस्वती, गुरुकुल झज्जर
2	उपप्रधान (वरिष्ठ)	वेदव्रत शास्त्री, रोहतक
3	उपप्रधान	भगत मंगतुराम, तावडू (गुडगांव)
4	उपप्रधान	डॉ० रणधीरसिंह सागवान, सिरसा
5	उपप्रधान	डॉ० विमल महता, फरीदाबाद
6	उपप्रधान	रामधारी शास्त्री, जीन्द
7	मन्त्री	आचार्य यशपाल, सोनीपत
8	उपमन्त्री	महेन्द्रसिंह शास्त्री, गुडगांव
9	उपमन्त्री	आचार्य विजयपाल, गुरुकुल झज्जर
10	उपमन्त्री	केदारसिंह आर्य, रोहतक
11	उपमन्त्री	हरिश्चन्द्र शास्त्री, पलवल
12.	उपमन्त्री	सुरेन्द्रसिंह शास्त्री, गोहाना
13	कोषाध्यक्ष	बलराज एलाबादी, पानीपत
14	पुस्तकाध्यक्ष	रोशनलाल आर्य, यमुनानगर

अन्तरंग सदस्य

1.	आज़ादसिंह आर्य	सोनीपत
2.	किशनचन्द सैनी	गुडगांव
3.	जय[illegible]सिंह आर्य	यमुनानगर
4	जयवीर आर्य	फरीदाबाद
5.	देवेन्द्रसिंह आर्य	जीन्द
6.	पूर्णसिंह आर्य	झज्जर
7	पृथ्वीसिंह आर्य	जीन्द
8.	रामनिवास आर्य	महेन्द्रगढ
9.	सत्यवीर आर्य	स्वरूपगढ (भिवानी)
10.	सन्तराम आर्य	रोहतक
11.	सुभाषचन्द्र आर्य	शाहाबाद (कुरुक्षेत्र)
12.	प्रो० शेरसिंह	साकेत, नई दिल्ली
13.	स्वामी कर्मपाल	मैदानगढी, नई दिल्ली
14	प्रिं० लाभसिंह	पानीपत
15	चौ० धर्मचन्द	डी.एल.एफ, रोहतक
16.	महेन्द्रसिंह एडवोकेट	पानीपत
17	रामचन्द्र शास्त्री	रोहणा (सोनीपत)
18.	मामनसिंह सैनी	रोहतक
19	बलवीरसिंह शास्त्री	भैंसवाल (सोनीपत)
20	जयसिंह ठेकेदार	कासडी (गोहाना)
21.	सुखवीर शास्त्री	रोहतक
22	वैद्य ताराचन्द	खरखौदा (सोनीपत)
23	कुलभूषण आर्य	पानीपत
24.	श्रीचन्द आर्य	अनगपुर (फरीदाबाद)
25.	सुखराम आर्य	रेवाडी
26.	बलवानसिंह	टिटौली (रोहतक)
27.	ईश्वरसिंह शास्त्री	कलहावड (रोहतक)
28	लक्ष्मीचन्द आर्य	फरीदाबाद
29	प्रकाश आर्य	फरीदाबाद
30	श्रीमती प्रभातशोभा	14, एम–साकेत, नई दिल्ली
31.	यशवीर आर्य	बोहर (रोहतक)

नोट :–

1	महेन्द्रसिंह शास्त्री	गुडगांव
2	रोशनलाल आर्य	यमुनानगर
3	वैद्य ताराचन्द	खरखौदा
4.	कुलभूषण आर्य	पानीपत

ऊपरलिखित चार अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक में तभी सम्मिलित समझे जायेंगे, जब वे अपनी-अपनी आर्य प्रतिनिधि सभाओं का रजिस्ट्रेशन समाप्त करवाकर तथा सभी मुकदमे वापिस लेकर, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में विलय का प्रस्ताव पास करवाकर सभा कार्यालय रोहतक में दे देंगे।

तारीख : 22-11-2001

Certified to be True Copy

11/12/01

विशेष आमन्त्रित सदस्य

१. स्वामी इन्द्रवेश, २. स्वामी अग्निवेश, ३. प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, ४. जगदीश प्रसाद सर्राफ (भिवानी), ५. चौ. सूबेसिंह (रोहतक), ६. प्रो० श्योताज सिंह (रेवाडी), ७. जगदीश सीवर (सिरसा), ८. डॉ० गेदाराम आर्य (यमुनानगर), ९. चन्द्रपाल राणा कुआना (दिल्ली), १०. रामकुमार आर्य (नरवाना), ११. श्रीमती प्रेमवती आर्या बलम्बा (रोहतक), १२. मा० प्रतापसिंह मुण्डलाना (सोनीपत), १३. रामस्वरूप आर्य नाहरी (सोनीपत), १४. डॉ० विजयकुमार (मातनहेल), १५. डॉ० रणजीतसिंह (फरीदाबाद), १६. महेन्द्रसिंह डी.आर.ओ. (रोहतक), १७. डॉ० योगानन्द शास्त्री (दिल्ली), १८. सत्यवीर विद्यालंकार (चण्डीगढ), १९. धर्मवीर वानप्रस्थी (महेन्द्रगढ), २०. दुलीचन्द शर्मा (महेन्द्रगढ), २१. दयानन्द आचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार), २२. धर्मपाल शास्त्री छतहरा (सोनीपत)।

२३ दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष–

[illegible] व साहस के भीषण ज्वाला थे, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

एक सूक्ति है कि **'सामान्य लोग परिस्थितियों के सामने झुक जाते हैं, जबकि असामान्य लोग उन पर हावी हो जाते हैं। यह सूक्ति बिल्कुल स्वामी श्रद्धानन्द के ऊपर सटीक बैठती है।** असाधारण लोग तात्कालिक परिस्थितियो एव चुनौतियो का सामना करते हुए अन्ततोगत्वा अपनी मंजिल को पाही लेते हैं। किन्तु भीरू व पलायनवादी प्रकृति के लोग सामान्य परिस्थिति समस्या व बाधाओ की दल-दल कीचड में धसकर अपनी मजिल को बहुत दूर पाते हैं। सृष्टि की आदि से लेकर अब तक अरबो-खरबो लोगो ने जन्म लिया जिन्होने अपने जीवन का लक्ष्यमात्र खाना-पीना और मौजमस्ती करना (Eat drink and be merry) बनाया, उनके लिए मानुषिक चोला कोई महत्त्वपूर्ण पदार्थ नहीं रहा। परन्तु जिन्होने इस जीवन को औरों के लिये समझा, मानवता का पुजारी बनकर देश, समाज व जन-जन की सेवा की, वे हीं अपने जीवन की सार्थकता लौकिक व पारलौकिक रूप मे जन-जन के मानस पटल पर अकित की। इसलिए किसी कवि ने बडा ही सुन्दर शब्दो मे मानवीय जीवन का चरित्र चित्रण किया है–"कोई रोके मरता है, कोई हसके मरता है। जग उसको याद करता है जो कुछ करके मरता है।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भी एक ऐसे महामानव थे, जिन्होने देश व समाज के लिए कुर्बानी दी। जीवन के अन्दर कुछ करके बलिदान हुए। जिसके कारण आज हम उन्हे याद कर रहे हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी जी के शब्दों मे–"स्वामी श्रद्धानन्द एक महान् समाज सुधारक थे। कर्मवीर थे, शूरवीर थे, वाक्शूर नहीं। सकट आने पर घबराते नहीं थे, बल्कि उसका डटकर दिल और दिमाग व तन-मन से मुकाबला करते थे। **प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में–"स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की हिन्दू-मुस्लिम एकता की शुद्ध भावना, दृढता, सत्यनिष्ठा, स्पष्ट-वादिता, निर्भीकता व देशप्रेम की निष्ठा इतिहास के पन्नो पर व स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास में स्वर्ण अक्षरो में लेखनीय एवं अनुकरणीय है।"**

प्रथम प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, "स्वामी श्रद्धानन्द देशसेवा में अपने आपको अहर्निश लगाये हुए थे। उनका भीषण साहस व ओजस्वी शेरगर्जना सदैव मुझे याद रहती थी।" भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू के शब्दो मे–"स्वामी श्रद्धानन्द मेरी स्मृति एवं मेरे अनुराग के आराध्य देवता, वर्तमान सतति के सन्मुख एक ऐतिहासिक मूर्ति के रूप मे विराजमान हैं। भारतीय जीवन के धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र मे और राष्ट्रसुधार के कार्य सदैव स्मरणीय रहेगे।"

स्वामी जी का जीवन पढकर जब व्यक्ति तहे दिल से चिन्तन मनन के सागर मे गोते लगाना शुरू करता है। उनके जीवन की महानता की गहराई मे बेरोकटोक सहसा ओझल हो जाता है। उनके गुरु वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् महान् समाजसुधारक, महान् शिक्षाविद्, महान् दार्शनिक, तत्त्ववेता, भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के प्रथम प्रेरक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। जिनके सग्राम के प्रथम प्रेरक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। जिनका सान्निध्य प्राप्त करके व चरणो मे बैठकर जनसेवा का पाठ सीखा था। उस समय की भारतीय समाज की दुर्दशा को भली प्रकार से देखा था। आताताई अग्रेजी शासको के जुल्म एव अत्याचार को बडी नजदीकी से परखा था। अज्ञान रूपी अधकार मे भटके हुए समाज को, देश को देख रहा था। विभिन्न प्रकार की सामाजिक बुराइयो मे फसे हुए समाज की विकटतम परिस्थिति का सिहावलोकन किया था। भला ऐसा व्यक्ति समाज व देश का सुधार किए बिना कैसे रह सकता था। सबसे पहले स्वामी जी महाराज हरिद्वार के निकट विहड निर्जन जगल मे गगा के निकट कागडी नामक गाव मे महान् शिक्षा का केन्द्र गुरुकुल के रूप मे प्रतिस्थापित किया। अग्रेजी शासन के दौरान शिक्षा का भारतीयकरण करना, प्राचीनता के साथ जोडना, नगी तलवार की धार पर चलने के समान था, आग में हाथ डालने के बराबर था। **ऐसी विकटतम परिस्थिति मे शिक्षा के क्षेत्र मे महान् क्रान्ति ला खडी कर दी। शिक्षा विशुद्ध भारतीय थी। शिक्षा के साथ स्वतन्त्रता का पाठ भी पढाया जाता था। इतिहास इस बात का गवाह है कि उस गुरुकुल से निकले हुए स्नातको ने आजादी की लड़ाई मे धूम मचा दी। सैकडों ने हंसते-हसते** फासी के फदे चूम लिए। यहा तक कि इनका बडा पुत्र हरिश्चन्द्र जो १९१४ ई० मे विलायत जाकर भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम को एक नई दिशा दी। जिसके कारण इनका पुत्र देश पर बलिदान हो गया। इनके छोटे पुत्र इन्द्रदेव विद्यावाचस्पति जो गुरुकुल कागडी के प्रथम स्नातक थे जो गाधी के साथ कधे से कधा मिलाकर व देश के बडे-बडे नेताओ के साथ आजादी की लडाई मे बढ-चढकर हिस्सा लिया है। जब महात्मा गाधी दक्षिण अफ्रीका मे रगभेद के खिलाफ आन्दोलन चला रहे थे उसी दौरान गाधी जी ने स्वामी जी के पास सहयोग की भावना के साथ एक पत्र लिखा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ऐसे कामो से व सहयोग के नाम पर कैसे पीछे हटने वाले थे। गुरुकुल के अदर धन का बडा अभाव था। सहयोग किया जाये तो कैसे किया जाये ? स्वामी जी महाराज अपने गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को बडे प्यार-प्रेम व वात्सल्य भाव से गाधी जी की भावना से अवगत कराया, सभी ब्रह्मचारी छात्र आसपास के गावो मे जाकर नौकरी, मजदूरी करके खून-पसीना बहाकर के धन इकट्ठा किया। खुद स्वामी जी महाराज भी रात दिन लगकर धन इकट्ठा करके दक्षिण-अफ्रीका मे गाधी जी के पास धनराशि भेजी। जब महात्मा गाधी दक्षिण अफ्री से भारत लौटे तो सबसे पहले गुरुकुल कागडी हरिद्वार जाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्व नाम महात्मा मुशीराम) के पास गये और चरणस्पर्श करके गाधी ने उनको अपना बडा भाई कहा। उसी समय स्वामी जी महाराज ने गाधी को महात्मा शब्द से विभूषित किया। मिस्टर गाधी की जगह महात्मा गाधी कहा। उसी दिन से मिस्टर गाधी महात्मा गाधी बन गये।

स्वामी जी के जीवन की दूसरी घटना–३० मार्च सन् १९१९ की बात है। रोलट एक्ट के विरोध मे स्वामी जी महाराज ५० हजार जनसमूह को लेकर अग्रेजो के खिलाफ नारे लगा रहे थे। दिल्ली के चादनी चौक के पास गौरे सिपाहियो ने जनसमूह को आगे बढने से रोक दिया और अपनी बदूके तान ली।

तब स्वामी जी ने अपने छाती खोलकर बदूक के सामने कर ली, और निर्भीकतापूर्वक शेर गर्जना मे बोले इस निहत्थी जनता पर गोली चलाने से क्या लाभ ? मैं सन्यासी हू। मैं इसका नेता हू। मेरी छाती तेरी बदूक के सामने खुली है। है हिम्मत तो, सबसे पहले इस पर गोली चलाओ। स्वामी जी के इन साहसपूर्ण शब्दो से गौरे सिपाही एकदम सहम गये और अपनी बदूके नीचे करली। ३१ मार्च १९१९ की बात है। यह घटना शायद विश्व के इतिहास मे कहीं घटित नहीं हुई होगी। आज तक इतिहास मे पहली घटना है। स्वामी जी महाराज दिल्ली स्थित जामा मस्जिद के बिब पर बैठकर पहले हिन्दू नेता थे जिन्होने वेद मत्रो का उच्चारण करते हुए हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोरदार भाषण दिया। उस दिन का ऐसा माहौल था कि महसूस ही नहीं हो रहा था कि हमारे देश के अन्दर हिन्दू-मुसलमान अलग-अलग होते है। स्वामी जी महाराज आज जीवित होते तो भारत का नक्शा कुछ ओर ही होता। आज का भारत बगला देश, पाकिस्तान सहित एक बृहद् भारत होता। जिसमे कश्मीर की समस्या नही होती आतकवाद नही होता, भाईचारा व प्रेम की गगा बहती। हमारा देश पुन विश्व का गुरु कहलाता, सोने की चिडिया कहलाता स्वर्ग का धाम बनता।

स्वामी जी महाराज मे हिन्दू जाति के उत्थान के लिए नारी शिक्षा के उत्थान के लिए विधवा उद्धार के लिए, दलितोद्धार के लिए समाज के अदर फैली हुई महान् बुराइयो को नष्ट करने मे जो उनका ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसे किसी भी कीमत पर भुलाया नही जा सकता है। स्वामी जी महाराज सपूर्ण भारत को भारातीय सभ्यता सस्कृति शिक्षा-दीक्षा व मानव धर्म के रूप मे देखना चाहते थे। जिसके लिए उन्होने अपने घर-बार धन-दौलत यहा तक कि अपनी सतानो को भी देश के लिए न्यौछावर कर दिया। किसी कवि के शब्दो मे–

"गिने जाये मुमकिन, सहरा के जर्रे,
समुदर के कतरे, फलक के तारे।
लेकिन तेरे एहसान श्रद्धानन्द स्वामी,
है कैसे सभव गिने जाये सारे।।

–पं० सुदामा शास्त्री, एम ए, बी एड
वैदिक प्रवक्ता आर्यसमाज फतेहाबाद

ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी

प्रतापसिंह शास्त्री, एम ए पत्रकार, गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

ऋषि दयानन्द की वंशावली

प० **लाल जी तिवारी** (दादा) वेदज्ञ विद्वान् थे। (मृत्यु सन् १८३४ ई०)
इनके दो पुत्र हुए

कर्षन जी तिवारी (विदज्ञ विद्वान्) — नाम अज्ञात (मूलशकर के चाचा)
पिता (जन्म १७८४, मृत्यु १८५३)
माता यशोदाबाई (१७९६-१८४६)
पाच सन्ताने हुई

दयाल जी मूलशकर दयानन्द (मोक्ष प्राप्ति १८८३) — कन्या (बहिन) — बल्लभ जी (भाई) — प्रेमबाई (बहिन) — पुत्र (भाई)

प्रेमबाई (मगल जी से विवाह)

बल्लभ जी → बोधा जी (रावल उपाधि)
→ कल्याण जी रावल
→ प्रभाशकर — प्राण शकर
प्राण शकर → केशवलाल — पुत्र
→ मनु — मुकन्दराय — जयन्तीलाल — हरसुख — प्रवीण — अरविन्द

ऋषि दयानन्द के पूर्वज हरयाणा के थे

सरस्वती नदी हरयाणा की भूमि को सींचती हुई कुरुक्षेत्र स्थल के पास बहती थी। इसके तट के प्रदेशो पर अनेक ऋषि मुनि वेदाध्ययन अध्यापन मे लगे रहते थे। वेदोपदेश और यज्ञो से यह स्थान सुशोभित था। इस नदी को गगा की भाति पवित्र माना जाता था। भारत के उत्तर भाग मे होने से इसका नाम उदीची दिशा था। यहा सामवेदी ब्राह्मण रहते थे। उनको उदीची दिशा के कारण ही औदिच्य कहा जाता था। भारत के उत्तर भाग मे होन से इसका नाम उदीची दिशा और यहा निवासी ब्राह्मण औदीच्य ब्राह्मण कहलाये। भारत के सभी भागो से बडे-बडे सन्यासी महात्मा वानप्रस्थी और राजा लोग यहा आकर ऋषि-मुनियो और ब्राह्मणो से शिक्षा ग्रहण करते थे। एक बार गुजरात काठियावाड सौराष्ट्र कच्छ भुज के कई राजा लोग यहा आये और सामवेदी औदीच्य ब्राह्मणो की योग्यता से प्रभावित होकर एक हजार ब्राह्मण परिवारो को अपने राज्य मे ले गये। उन्हे भिन्न-भिन्न स्थानो पर बसाया। इनको आज भी औदीच्य, गुजराती और काठी आदि नामो से पुकारा जाता है। इन्हीं मे ध्राग्धा राज्य की 'मच्छोकाहटा' नदी के तट के पास मौरवी राज्य के स्थान मे ऋषि दयानन्द के पूर्वज रहते थे। इस ऐतिहासिक प्रमाण से सिद्ध होता है कि महर्षि दयानन्द का मूल स्थान हरयाणा भूखण्ड था। यही नहीं, ऋषि ने अपने ग्रन्थों मे अनुमानत २५० शब्द हरयाणवी भाषा के प्रयुक्त किये हैं। अन्य प्रदेशो की बजाय हरयाणा के लोग वैदिक मान्यताओ के अधिक निकट हैं। मास्टर निहालसिह आर्य जस्सौर खेडी रोहतक ने **'महर्षि के ग्रन्थों मे हरयाणवी भाषा का प्रयोग'** मे लगभग ३०० हरयाणवी शब्द लिखे हैं। महर्षि दयानन्द ने स्वय अपनी आत्मकथा मे यह लिखा है कि–"वेद विरोधी बौद्ध और जैन मतो के प्रबल प्रचार होने के कारण कई एक प्रान्त प्राय वेद भ्रष्ट हो गये थे। यथा–

अग-बग-कलिंगेषु सौराष्ट्र-मगधेषु च।
तीर्थयात्रां बिना गच्छन् पुन सस्कारमर्हति।। (प्राचीन स्मृति वचन)

अर्थात् तीर्थयात्रियो के उद्देश्य के बिना दूसरे उद्देश्य से अग (उत्तर बिहार), बग (पूर्व-पश्चिम बगाल), कलिग (उडीसा और आगे दक्षिण देश), सौराष्ट्र (काठियावाड राज्य) और मगध (दक्षिण बिहार) प्रदेश मे जाने से प्रायश्चित्त का भागी बनना पडता है। सौराष्ट्र को वेद भ्रष्टता के पाप से बचाने के लिए आज से लगभग ९०० या हजार वर्ष पहले वहा के धर्म भीरू राजा मूलराज ने उत्तर भारत के करीब एक हजार वेदज्ञ ब्राह्मणो को लाकर सौराष्ट्र देश मे बसाया था। सारे गुजरात मे ये लोग फैल गये थे। मैंने उन्हीं मे से एक ब्राह्मण के कुल मे जन्म लिया है। वंशागत रूप से मेरा परिचय दिया जाये तो यह है कि मैं सामवेदी औदीच्य त्रिपाठी ब्राह्मण हूं। त्रिपाठी से तात्पर्य है जो लोग वेद मन्त्रो के **पदपाठ, क्रमपाठ और जटापाठ** इन तीन पाठों को जानते हैं और तीन वेदों को पढने वाले हैं।"

आधार पुस्तकें–१ "महात्मा दयानन्देर सक्षिप्त जीवनी" बंगला मे सन् १८८६ में प्रकाशित। लेखक–ब्रह्मसमाजी नेता नगेन्द्रनाथ चटर्जी।

२ "संस्कृत मे अप्रकाशित दयानन्द आत्मचरित्र" अन्वेषक कलकत्ता के विद्वान् स्व० श्री प० दीनबन्धु शास्त्री के आधार पर "योगी का आत्मचरित्र" लेखक-सच्चिदानन्द सरस्वती।

३ महर्षि दयानन्द का जीवनचरित्र लेखक प० लेखराम आर्यपथिक।

४ वशावली–"स्मारिका" आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, करनाल।

५ "स्मारिका" आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक शताब्दी समारोह १९८७ लेखक प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती। (क्रमश:)

जाने वाला वर्ष 2001 –'नाज सोनीपती'

'वीरप्पन' का कहीं पर तजकरा था। कहीं 'लादेन' राहो मे अडा था।
कहीं थे 'तालिबान' हावी जहा मे, बडे चर्चे चले हिन्दोस्तों मे।।
कहीं अमेरिकनो का रोब छाया। मगर अब तक न कुछ भी हाथ आया।।
बढे आते थे, नित आतकवादी। उन्होंने धाक दुनिया पर बिठा दी।।
किसी को वे नहीं खातिर मे लाए। निहत्थो पर निरन्तर जुल्म ढाए।।
जिधर देखा था शोरोगुल का आलम। जिधर देखा तो खूँ रोती थी शबनम्।।
रहेगी कब तलक यह जग जारी। कि यो होती रहेगी, गोलाबारी।।
यह साल अब तो रवाना हो रहा है।
जमाना 'नाज़' जिसको रो रहा है।।

आने वाला वर्ष 2002

उम्मीदे, साल-ए-नौ से क्या बधेगी। कि गुजरे साल के सकट हरेगी ?
वकीलो के हैं नाकाफी दलाइल। बडी मुश्किल से होगे हल मसाइल।।
कलमकारो की जद मे है जमाना। गुनहगारो ने है खुद को बचाना।।
अनोखी चाल, जब कोई चलेगा। भ्रष्टाचार तो बढता रहेगा।।
जहाँ पर होगे उल्फ्त के तराने। दिलो मे होगे नफरत के ठिकाने।।
कहा कुछ भी नहीं जाता जबॉं से। बनेगा कुछ नहीं आह-ो-फुगॉं से।।
जमाना रग बदलेगा निराले। पडेगे हरबशर को जॉं के लाले।।
चला है 'नाज' रूठों को मनाने।
नया साल आगया किस्मत बताने।।

शोक समाचार

आर्यसमाज मकडौली कला जिला रोहतक के मत्री श्री जगमालसिह शास्त्री की माता स्व० श्रीमती किताबो देवी का आकस्मिक निधन दिनांक १८ दिसम्बर २००१ को ६० वर्ष की आयु मे हो गया। उनका दाह सस्कार वैदिक रीति से डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य द्वारा करवाया गया। भगवान् उनकी आत्मा को सद्गति देवे एव शोक सतप्त परिवार को इस विकट दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। शोक सभा दिनाक २८-१२-२००१ को ११ बजे उनके निवास स्थान मकडौली कला पर होगी।

–**सत्यवान सिंह**, आर्यसमाज मकडौली कला (रोहतक)

आर्यसमाज के आत्मबलिदानियों की स्मृति में

विशेष संस्मरण

श्रद्धांजलि के रूप में

—**सुखदेव शास्त्री**, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

मरते बिस्मिल रोशन लहरी अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकडो इनके रुधिर की धार से।।

महर्षि दयानन्द की स्वतन्त्रता प्राप्ति की प्रेरणा से प्रेरित होकर राष्ट्र के अनेक वीरों ने आत्मबलिदान राष्ट्रीयता की पवित्र भावनाओ से भावित होकर भारत माता की पवित्र वेदि पर समर्पित कर दिये थे।

भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम में आर्यसमाज के वीर नौजवानों का सबसे अधिक भाग रहा। वे हंसते-हसते फासी पर चढे।

इस दिसम्बर के ही अग्रेजी महीने मे आर्यसमाज के चार नौजवान बलिदान हुए थे। इनके नाम हैं—१ रामप्रसाद बिस्मल, २ रोशनसिह, ३ राजेन्द्र लाहिडी, ४ अशफाक उल्लाखां। ये बलिदान १६ दिसम्बर से १९ दिसम्बर तक चार दिन तक १९२७ मे हुए।

रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक, शाहजंहापुर उत्तर प्रदेश के निवासी थे। श्री रोशनसिह भी शाहजहापुर के नवादा ग्राम के निवासी थे। राजेन्द्र लाहिडी भी पवना जिले के भटेगा गाव के निवासी थे। बिस्मिल को १९ दिसम्बर को गोरखपुर जेल मे फासी दी गई। फासी पर चढने से पहले बिस्मिल से मजिस्ट्रेट ने उनके अन्तिम विचार जानने चाहे, बिस्मिल ने उत्तर दिया—"मैं ब्रिटिश साम्राजय का नाश चाहता हू।" फासी पर जाने से पहले बिस्मिल मे "विश्वानि देव" मन्त्रों से हवन किया। मिलने वालो ने बिस्मिल की स्मृति में समाधि बनाने की बात पर बिस्मिल ने उत्तर देते हुए कहा था—

शहीदो की चिताओं पर लगेगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशा होगा।

अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट करते हुए बिस्मिल ने लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा था—

इलाही वो भी दिन होगा, जब अपना राज देखेगे।
जब अपनी जमीं होगी, अपना आसमा होगा।।

अशफाक उल्लाखां—रामप्रसाद बिस्मिल के परम मित्र थे। काकोरी केस में इन्हे भी फासी हुई थी। फासी पर चढने से पहले अशफाक ने अपने देशभक्ति के उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था—

"माता के बन्धन तोडूगा, रखता था नित ध्यान यही,
अथवा मातृमान ! पर मर जाऊंगा, था अभिमान यही।
चाह रहा मैं जीवन में, फासी का वरदान यही,
जन्मूगा मैं फिर भी भारत में होता उर मे भान यही।।

फासी पर चढते हुए अशफाक ने कहा था—

"जाता हूं दो मात यही वर भारत में फिर जन्म धरूं।
एक नहीं, तेरी स्वतन्त्रता पर जननी मैं सौ-सौ बार मरू।।

रोशनसिंह—काकोरी केस मे रोशनसिह को भी फासी हुई थी। फासी पर चढने से पहले अपने देशवासियो के लिये रोशन ने कहा था—

जिन्दगी दिन्दादिली का नाम है रोशन,
वरना कितने मरे, और कितने मरते जाते हैं।।

राजेन्द्र लाहिड़ी—लाहिडी को १७ दिसम्बर १९२७ को गोडा जेल मे फासी दी गई थी। अपने साथियों की शहादत की प्रशसा करते हुए कहा था—

मरते बिस्मिल रोशन लहरी अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से।।

१६ दिसम्बर १९२७ से १९ दिसम्बर १९२७ तक चार दिन तक लगातार फासी पर चढ़े इन सभी आर्यसमाजी बलिदानी वीरों को सादर स्मरण करते हुए नतमस्त होकर श्रद्धाजलिया देते हैं।

२३ दिसम्बर १९२६ को इसी महीने में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का भी महान् बलिदान हुआ था—

स्वामी श्रद्धानन्द जी के महाबलिदान पर तत्कालीन कवि ने श्रद्धाजलि देते हुए लिखा था—

"श्रद्धा और आनन्द की इक खान श्रद्धानन्द थे।
धर्म में जो होगये बलिदान श्रद्धानन्द थे।
रक्त की बूंदों से सींची थी वैदिक वाटिका।
महर्षि जी राम थे, हनुमान श्रद्धानन्द थे।
मनके बिखरे थे जो माता के पिरोया फिर उन्हें,
शुद्धि है जीवन तो इसमें जान श्रद्धानन्द थे।।

राष्ट्रीय सुरक्षा, अनुशासन एवं शान्ति का मूलमन्त्र 'धर्मदण्ड'

– आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक'

गताक से आगे–

पाठकवृन्द ! राष्ट्र की ध्वजा का गौरवमय आधार दण्ड ही है। ध्वजा में से दण्ड निकाल देने पर ध्वजा का कोई मूल्य नहीं रहता। कठोरता के बिना जीवन का कोई मूल्य नहीं। विनम्रता भी तभी पूजी जाती है जब वह किसी बलवान् व्यक्त से प्रस्फुटित होती है। कुत्ता पैर चाट जाए तो कोई मूल्य नहीं रखता। मूल्य तो तब आका जाता है जब किसी सिह ने विनम्रता से किसी साधु का पैर चाट लिया हो। अत वेद का ज्ञान भी अग्नि की उग्रता से प्रारम्भ होता है। **ओ३म् "अग्निमीळे पुरोहितम्"।** मानव शरीर का मूल्य हड्डी के बिना कुछ भी नहीं। एक मास का लोथडा ससार मे कुछ नहीं कर सकता। सम्मान को दिलाने वाला यह शिर भगवान् ने बहुत कठोर बनाया है। शिर की खोपडी सैकडो किलो भार उठा लेती है। इतने पर भी यदि कोई आक्रमण करने का प्रयास करता है तो क्षात्ररूपी दोनो भुजाए सहजतया ऊपर उठ जाती हैं। शिर की सुरक्षा हेतु ऐसा करना कभी किसी को सिखाया नहीं गया। अत यदि राष्ट्र के गौरव, धर्म, स्वातन्त्र्य, अनुशासन एव शील को बचाकर शिर को ऊपर उठाकर सम्मान से जीना चाहते हो तो दण्ड को उठाओ। सज्जनवृन्द ! वस्तु की प्राप्ति करना सुख का साधन है जबकि हम उसे सुरक्षित भी रख सके। कुछ बलिदानी महर्षि दयानन्द के दीवाने वीरो से हमे स्वतन्त्रता तो मिली पर खेद का विषय है हम उसे उचित दण्ड-विधान के बिना सुरक्षित न रख सके। एक भोले से भोला किसान भी जब अन्न उगाने की बात सोचता है तो खेत मे बीज डालने से पूर्व उसकी बाड की पहले व्यवस्था करता है। इसीलिए परमात्मा ने मानवधर्म वेद को ऋग् रूपी ज्ञान से प्रारम्भ किया और उसके गर्भ मे श्रेष्ठ कर्म एव उपासना की सुरक्षा हेतु उसे अथर्ववेद पर पूर्ण किया। अथर्व का अर्थ ही निश्चित सुरक्षा है। अत यदि आज व्यक्तिगत जीवन को, परिवारो को, ग्राम को, प्रान्तो को अथवा समूचे राष्ट्र को भय-अशान्ति और हलचल से मुक्त करना है तो अथर्वरूपी दण्ड को लाना होगा।

अथर्ववेद मे अनेक मन्त्र क्षात्रधर्म की व्यवस्था को दर्शाते हैं। वहा किसी व्यक्ति विशेष को शत्रु न कहकर उन लोगो को कहा गया है जो धर्म के हत्यारे हैं। वह कोई भी हो। मानवता, नारी, गौ एव राष्ट्र की सीमाओं की अवहेलना करने वाला व्यक्ति धार्मिक दृष्टि से दण्ड योग्य शत्रु है। ऐसे व्यक्ति पर कभी भी कहीं भी किसी प्रकार से दया नहीं करनी चाहिए। इसलिए वेद का यह आदेश है कि **"मा नो दुःशंस ईशत।"** अर्थात् ऐसे दुष्ट को कभी अपना शासक मत होने दो। **"अपघ्नतोऽराव्णः"** अर्थात् राष्ट्र के ऐश्वर्य मे बाधक, जनता का खून चूसने वाले शोषक को समाप्त कर दो। **"यदि गा हिंसी"** यदि कोई गाय की हत्या करता है तो उस गोघातक को गोली से उडा दो। अन्यत्र भी कहा गया है **"राष्ट्रद्रोही शत्रुओं को पुरानी गन्दी रजाई के समान उधेड कर रख दो। उन्हे काट-काटकर इस तरह लाशें बिछाओ कि कुत्ते उन्हें फाड़-फाडकर खा जाए।"** कहने का अभिप्राय यह है कि ससार का प्रथम मानवधर्म वेदज्ञान स्पष्ट कह रहा है कि यदि सुख-शान्ति चाहिए तो शत्रु के लिए दण्ड उग्र होना चाहिए।

विश्व के प्रथम सविधान निर्माता, न्यायविदो मे सर्वत्र पूज्य महर्षि मनु वेद का ही अनुकरण करते हुए अपनी प्रसिद्ध कृति मनुस्मृति मे कहते हैं–**नाततायिवधे दोष।** अर्थात् देश, धर्म, शील व सस्कृति की हिंसा करने वाले को मारने मे कोई पाप नही। अपितु ऐसा व्यक्ति दो प्रकार के पुण्य का भागीदार है। एक तो वह दुष्ट को दण्ड देकर समाज अथवा राष्ट्र को कष्ट से बचाता है और दूसरे उस व्यक्ति का शरीर आत्मा से पृथक् करके उसे और अधिक होने वाले पापो से बचाता है। अत जो लोग देशद्रोहियो को मृत्यु दण्ड देना उचित नही समझते वे उपरोक्त इस सिद्धान्त को समझने का कष्ट करे। वेद एव शास्त्र मे पूर्ण ज्ञान देने पर भी यदि कोई व्यक्ति अपने कर्त्तव्य कर्म से विमुख होता है तो उसे कठोर दण्ड देने का विधान है। क्योंकि सामान्य दण्ड तो पाप की वृत्ति को और ही बढाता है। यदि दण्ड थोडा मिले तो प्रत्येक व्यक्ति यह सोच लेता है कि कुछ फर्क नहीं पडेगा। अत वह पाप कर्म से रुकता नहीं है। ऐसा होने पर अनेक व्यक्ति थोडे दण्ड से भयभीत न होने के कारण पाप में प्रवृत्त होने लगेंगे। इसलिए महर्षि दयानन्द स्वरचित अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं–दण्ड तो कठोर ही होना चाहिए। यदि दण्ड कठोर होगा तो उससे जनता भयभीत होकर पाप करने से बचेगी। इस प्रकार से अधिक लोगों को दण्ड भी नहीं मिलेगा जिससे दण्ड की कुल मात्रा भी कम होगी। अत मनु महाराज कहते हैं–चोरी करने वाले के हाथ काट दो। दुष्ट कर्म करने वाले की आख निकाल दो। व्यभिचारिणी स्त्री को कुत्तो से नुचवाकर मरवा दो। यह दण्ड दुष्टों को सार्वजनिक स्थान पर दिया जाए जिससे की अधिकाधिक लोग देखकर शिक्षा ग्रहण करे और भय के कारण स्वप्न मे भी कभी पाप करने का विचार न करे। (क्रमश.)

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा आर्य रत्न सम्मान राशि एक लाख की घोषणा

ट्रस्ट की एक आवश्यक बैठक मे यह निश्चय हुआ कि सृष्टि सवत् १९६०८५३१०१ का "आर्यरत्न" सम्मान राशि एक लाख रुपये से उस विद्वान् सन्यासी को सम्मानित किया जाये जिसका सम्पूर्ण जीवन, बिना कोई भेदभाव व लोभ-लालच के समाज-सेवा एव वैदिक मान्यताओ के प्रचार और प्रसार मे समर्पित एव सर्वमान्य रहा हो।

अत उपरोक्त श्रेणी मे आनेवाले विद्वान् या समाजसेवी उक्त सम्मान के लिए स्वय या उनके जीवन से पूर्णतया परिचित नजदीकी विद्वान् द्वारा लिखित जानकारी ट्रस्ट के पते पर १५ जनवरी २००२ तक आमन्त्रित की जाती है। सम्मान के लिए आये आवेदनो पर चयन समिति का निर्णय ही मान्य होगा।

सम्पर्क करे– मैनेजिग ट्रस्टी, राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट
३८७ आर्योदय, रूईकर मार्ग महाल, नागपुर-४४० ००२ (महाराष्ट्र)

आर्य-संसार

बिछुड़े भाई पुनः आर्य बने

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन पर गत अनेक वर्षों से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत श्री स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख में शुद्धि आन्दोलन चला रही है। इसी शृंखला में गत ९ दिसम्बर को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता में वैदिक सत्संग आश्रम कटंगझरिया जिला सुन्दरगढ में १६८ ईसाई परिवारों के ३०० से अधिक व्यक्तियों ने श्री पं विशिकेसन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में श्रद्धापूर्वक वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर इन दीक्षित लोगों को आशीर्वाद देने तथा प्रीतिभोज में भाग लेने के लिए भारी संख्या मे स्थानीय आदिवासी जनता उपस्थित थी। इस अवसर पर स्थानीय सरपंच श्री गंगाधर जी, श्री कुलमणी आर्य, श्री डीलेश्वर पटेल भस्मा, श्री वासुदेव होता पामरा, श्री भगतसिंह श्री गेवरा, ब्र वीरेन्द्र व ब्र वेदमित्र आदि अनेक विद्वान् वक्ता कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का पूरा श्रेय श्री राम जी आर्य एवं श्री धनेश्वर जी को जाता है, जिन्होंने इस कार्यक्रम में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

—सुदर्शनदेव आचार्य, उपमंत्री—उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतमनगर का वार्षिक समारोह एवं चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं सत्यार्थभृत् यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न

श्रीमद्दयान्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतम, नई दिल्ली का वार्षिक समारोह एवं चतुर्वेद महायज्ञ एवं सत्यार्थभृत् यज्ञ रविवार २५ नवम्बर २००१ को आरम्भ हुआ। जिसकी पूर्णाहुति रविवार १६ दिसम्बर २००१ को सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली तथा दिल्ली के आस पास के हजारों आर्यजनों ने भाग लिया।

१६ दिसम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त आर्य नेताओ द्वारा उद्‌बोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री रामनाथ सहगल, प्रबन्धक ट्रस्टी, स्वामी इन्द्रवेश जी, डॉ० महावीर मीमांसक, प्रो० राहेन्द्र जिज्ञासु, प्रो० धर्मवीर, स्वामी सुमेधानन्द, श्री पं० सत्यपाल पथिक, श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री बृजपाल कर्मठ आदि विद्वानों ने पधारे हुए आर्यजनों को अपने विचारों से सबोधित किया। जिसका आर्यजनता ने पूर्ण लाभ उठाया।

इस समारोह में मुख्यातिथि के रूप में पधारे हुए भारत सरकार के मुख्य प्रवक्ता प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा ने वर्तमान में तोड मरोड़ कर प्रस्तुत किये जा रहे इतिहास जैसे आर्य बाहर से आये थे, आर्य मांस खाते थे, आर्य गोमांस का सेवन करते थे, वेद गडरियों के गीत हैं आदि इतिहास की कमियों का वर्णन करते हुए कहा कि आर्यसमाज को सकल्प लेना चाहिए कि इस प्रकार का वर्तमान में जो इतिहास पढ़ाया जा रहा है, उसका विरोध प्रस्ताव करके राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, मानव संसाधन मन्त्री को भिजवायें। इसका सभी पधारे हुए आर्यजनों ने समर्थन करते हुए हाथ उठाकर आश्वासन दिया कि इस तरह का प्रस्ताव अपनी अपनी आर्यसमाज की ओर से अवश्य भिजवायेंगे।

इसी समारोह में डॉ० मदनमोहन, डॉ० ऋषि मोहन, श्रीमती डॉ० मदन मोहन एवं श्रीमती डॉ० ऋषि मोहन का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन किया गया क्योंकि उन्होंने गुरुकुल के आचार्य जी का आखों का सफल आपरेशन करके उन्हें आखें प्रदान की हैं। इसका सभी पधारे हुए जनों ने उनका तालियां बजाकर सम्मान किया और उन्हें पुष्पमाला और शाल आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।

—रामनाथ सहगल

धूम्रपान : कड़े कदम उठाने का निर्देश

सोनीपत जिला उपायुक्त एस०एन०राय ने जिले के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे जिला में सभी सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर रोक लगाने के लिए कडे कदम उठाएं। उन्होंने जनता से भी अपील की है कि वह सार्वजनिक स्थानो पर धूम्रपान करने से गुरेज करे। श्री राय ने कहा कि धूम्रपान से न केवल धूम्रपान करने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब होता है, बल्कि उसके द्वारा छोडा गया धूम्रपान न करने वाले व्यक्तियो की सास मे मिलकर उनको भी रोगी बना देती है।

उल्लेखनीय है कि उच्चतम न्यायालय ने धूम्रपान के खतरनाक दुष्प्रभावो को देखते हुए सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर रोक लगा दी है। जिला उपायुक्त ने सिविल सर्जन सोनीपत, उपमडल अधिकारी गोहाना व गन्नौर को भी निर्देश दिये हैं कि वे माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेशो की अनुपालना को सुनिश्चित करें। इस संदर्भ में पुलिस को भी तत्परता से कार्रवाई करने के लिए कहा गया है।

मधुमेह को खत्म करने का दावा

सोनीपत स्थानीय सेक्टर-१५ के निवासी आदेशकुमार ने दावा किया है कि मधुमेह तथा ब्लड शुगर को उसके परीक्षण के अनुसार काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि वह न तो कोई डाक्टर है और न ही कोई हकीम। उनका कहना है कि कोई भी इन्सान जब कोई वस्तु खाता है या पीता है तो यह सब सेवन करने के पश्चात् तुरत उसे खडा हो जाना और कमरे मे या बाहर थोडी देर के लिए टहलना चाहिए। उनका दावा है कि इस प्रकार की क्रिया से न तो किसी को उक्त बीमारिया होंगी, यदि हैं भी तो काफी हद तक खत्म हो सकती है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनांक १६ १२ २००१ को आर्यवीर दल रोहतक नगर की ओर से वैदिक भक्ति साधना आश्रम में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सहोत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमे बहन दयावती, विनय कुमार, एव ब्र देवेन्द्र जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए बहुत सुन्दर गीत प्रस्तुत किये। श्री देशराज आर्य मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि एक पतित, व्यभिचारी, जिसमे हर प्रकार के अवगुण भरे हुए थे। इस महान् आत्मा ने किस प्रकार से स्वामी दयानन्द जी के प्रवचनो से प्रभावित होकर अपने जीवन को उन्नत बनाया तथा अनेक प्रकार के कार्य किए जैसे गुरुकुल खुलवाना, शुद्धि आन्दोलन चलाना, दलितोद्धार कार्य किए।

अन्त मे मुख्य वक्ता के रूप मे आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ से पधारे स्वामी धर्ममुनि ने जनता का आह्वान किया कि स्वामी श्रद्धानन्द जैसा त्याग, तपस्या वाला जीवन बनाए तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी मे से उदाहरण देते हुए कहा कि स्वामी जी ने गुरुकुल खोलने के लिए अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति दान मे दी तथा अपने दोनो पुत्रों को गुरुकुल मे दाखिला कराया। इसके अतिरिक्त मूले, जाट, गुजर तथा अन्य जो कि मुसलमान बन चुके थे। शुद्धि द्वारा पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। स्वामी धर्ममुनि जी ने कहा कि हमें भी स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी से शिक्षा लेनी चाहिए कि हमें अपना जीवन तपमय एव त्यागपूर्ण बनाना चाहिए।

—मा० मेघराज आर्य रोहतक

शोक समाचार

१ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) मे कार्यरत वैद्य डॉ सुरेन्द्रकुमार आर्य की धर्मपत्नी का दिनाक १९-१२-२००१ को बीमारी से ४५ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। वह धार्मिक प्रवृत्ति, अतिथि सेवाभावी एव सुशील स्वभाव की महिला थी। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस विकट दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—ओमप्रकाश शास्त्री, सभागणक

२ आर्यसमाज मुरादपुर टेकना जिला रोहतक की प्रधान श्रीमती वेदवती आर्या के दामाद श्री धर्मेन्द्र बामल गाव खरकडा भाटोल जिला हिसार का ४९ वर्ष की आयु में एक सड़क दुर्घटना में दिनांक १ दिसम्बर २००१ को स्वर्गवास हो गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामत्री

अथ विष प्रकरणम्

–सोहनलाल शारदा शाहपुरा भीलवाड़ा राजस्थान

"दूध मे काच मिलाकर पिला दिया" यह वाक्य 'भूचाल टाइम्स' के ८ नवम्बर के अक २००१ के मे पृष्ठ सख्या चार कालम तीन की पक्ति ५९ पर है। इस लेख के लेखक हैं श्री सुखवीर जी शास्त्री, हनुमान कालोनी रोहतक। इस लेख का शीर्षक है 'युगपुरुष'। पूरा वाक्य यहा वर्णन है कि - **"महर्षि ने दुष्ट जगन्नाथ को क्षमा कर दिया जिसने स्वामी जी को दूध में काच मिला कर पिला दिया।"**

इस सृष्टि नियम विरुद्ध 'असम्भव' लेख पर थोडा सा भी विचार करने पर ज्ञात हो ही जाता है कि काच जिसे शीशा, दर्पण, आरसी, इत्यादि नामों से भी पुकारते हैं कभी भी दूध की गरमी से पिघलने वाला नहीं है। यह पदार्थ न भूतो न भविष्यति प्राकृत नियमानुसार पहिले भी घुलनशील नहीं था। अब भी नहीं है। आगे भी नहीं होगा।

लेकिन यह अत्यधिक तीव्र अग्नि से पिघल कर बर्तन चूडिया वगैरा बनाते हैं। यह शिघ्रातिशीघ्र वायु ससर्ग से पुन अपनी स्थिति मे आ जाता है।

यह कभी भी गरम उदरस्थ नहीं हो सकता। असम्भव है। हम महर्षि को प्रमाणो से ऐसा कभी भी नहीं मान सकते जैसा कि पं० कालूराम शास्त्री 'दयानन्द तिमिर भास्कर' के पृष्ठ ४३५ पर लिखते हैं के - **"स्वामी जी को भाग की तरंग मे वा हुक्के की गुड़गुड़ाहट मे ऐसी बातें सूझी होगी।"**

इस महान् योगेश्वर पर ऐसी गप्पे ठोक देना ऐसा ही है जैसा सत्यार्थ प्रकाश अष्टम सम्मुलास मे कहा गया है कि - कोई गपोडा हाक दे कि मैंने बन्ध्या के पुत्र व पुत्री का विवाह देखा। वह नर शृग का धनुष और दोनो पुष्प माला पहने हुए मृग तृष्णा के जल में स्नान करते। गन्धर्व नगर मे नहीं रहते। यहा बिन बादल बरसात पृथ्वी बिना अन्नोत्पादन होता है।"

इसी प्रकार से यहा दूध मे काच मिलाना पिलाना और महर्षि जैसे महान् युगपुरुष को इसे पी जाना सर्वथा असम्भव ही है। इसी बातो के लिए महर्षि कहते हैं कि - **"ऐसी असम्भव बाते प्रमत्तगीत याने पागल लोगो की हैं।"**

यहा सत्य यही है जिसे महर्षि ने स्वयं कहा जिसका वर्णन आर्य मुसाफिर प लेखराम जी कृत जीवन चरित उर्दू मे विद्यमान है। यह ही प्रकृति के नियमो से भी सिद्ध है।

यहा वर्णन है कि जब अजमेरस्थ आर्यजनो मे से किसी ने राजपूताना गजट मे स्वामी जी के जोधपुर में रुग्णता का समाचार पढा तो वहा के तत्कालीन सभासदो ने जेठमल सोढा को परिस्थिति ज्ञात करने हेतु भेजा। वहा से उसने जो तार दिया व स्वय आकर कहा उस समय का वर्णन करते हुए अजमेर के तत्कालीन प्रसिद्ध हकीम श्री इमाम अली जी ने प लेखराम जी को कहा वह निम्न है–

"जब प कमलनयन जी शर्मा तत्समय मत्री आर्यसमाज अजमेर ने मेरे पास आकर के कहा के "मुझे प्रथम तार द्वारा व पुन आदमी द्वरा विशेष तौर पर कहलाया है कि **"मुझे सखिया दिया गया है"।**

उपचार हो। इस पर हकीम जी ने कहा कि आप सर्व सज्जन निश्चय करो कि पूज्य स्वामी को आबू नहीं ले जावे। हम सखिया निकाल देवेगे।" यहा ले आओ।

हकीम जी ने तत्समय जो उपचार दिया उसके लिए यहा वर्णन है कि - **मैंने बसलोचन शर्बत अनार कुछ साबुत अनार, व एक औषध साथ में देकर उपयोग की विधि बतलाते हुए कहा कि** - प्रथम बसलोचन को खरल में घुटवा लीजिए। पुन यह शर्बत अनार थोडा सा मिलकर पाव भर पानी बनाकर खुश्की का शमन होकर शान्ति लाभ अवश्य मिलेगा। निश्चय से अत. प्रमाणों से 'सखिया' जो घुलनशील पदार्थ महा विष है। इसे ही मानना है। हमारा कर्तव्य यही है कि जो प्रमाणो से सिद्ध हो वह ही सिद्धान्तानुसार सत्य ही है। इसे मानना है निश्चय से।

आगे जो जगन्नाथ का नाम दुग्ध पान कराने वाले का लिखा जो यह भी भ्रम पूर्ण ही है सत्य यही है जो 'दयानन्द दिग्विजयार्क' नामक महर्षि का जीवन चरित में है। इसलिए भी है कि यह ग्रन्थ दो भाग महर्षि समय में ही प्रकाशित हो चुके थे। तथा तीसरा भाग भी महर्षि के स्वर्गारोहण के एक वर्ष के भीतर ही आवश्यक सामग्री प्राप्त कर प्रकाशित कर दिया गया था।

इस ग्रन्थ के **'अनिष्टोत्थान'** प्रकरण में वर्णन है कि - "आश्विन कृष्णा एकादशी को श्री स्वामी जी महाराज को जुकाम हो गया। यह शमन नहीं होकर वृद्धि को प्राप्त हो रहा था। तभी आश्विन कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि को 'घूड मिश्र' पाकाध्यक्ष शाहपुरा से दूध पीकर सोये थे। **पीछे श्री महाराज को रात्रि भर तीन वमन हुए थे।**

यह सारा घातक रोग यहीं से आरभ होता है। इसी कथानक अनुसार ही श्री लेखराम जी ने उर्दू चरित मे लिखा। तदनुसार उर्दू का आर्य भाषानुवाद मे इसे धौल मिश्र कर दिया गया। तदनुसार ही देवेन्द्र बाबू कृत में व नव जागरण पुरोधा में भी श्री भारतीय जी ने लिख दिया [illegible] चाल सदृश।

लेकिन प्रत्यक्ष इधर राजस्थान मेवाड प्रान्त मे 'धौल/' यह नाम किसी का भी नहीं होता है। इधर माता-पिता अपने पुत्र पुत्रियों का अन्धपरम्परानुसार धूला, कजोड़ा, हीतरया इत्यादि रख देते हैं। ये नाम वर्तमान मे भी चारो ही वर्णों मे पाये जाते हैं।

सर्वप्रथम मे केवल प्रेस मे (ळ) यह शब्द नहीं होने से (ड) यह अक्षर लिख दिया होगा भाव दोनो के एक ही है।

इस कथित धूळा जात का ब्राह्मण जोशी जिसके पारिवारिक जन आज भी विद्यमान हैं। उदयपुर रहते हैं। इसके बयान मथुरा शताब्दी पश्चात् महर्षि के एक मात्र राजनैतिक शिष्य शाहपुरेश ने सन् १८२६ मे लेकर श्रद्धेय स्वामी जी श्री श्रद्धानन्द जी महाराज की सेवा मे भेजे थे। जो गुरुकुल कांगडी के स्नातक मडल के मुख पत्र अलकार के तत्समय दो अकों में प्रकाशित हुये।

इस बयान की समीक्षा श्रद्धेय भारतीय जी ने नवजागरण के पुरोधा के पृष्ठ सख्या ५३४ पर की है। यहां वर्णन है कि जब इसे पूछा गया कि वहा रसोई गृह मे कार्य हेतु कितने जन थे। तो वह उत्तर में कहता है कि- मेरे **सिवाय अन्य कोई भी रसोई गृह मे बनाने के लिए नहीं था।**

अत दूध इसी ने ही पिलाया था। अन्य कोई था ही नहीं। तो प्रत्यक्ष इसी का ही पिलाना सिद्ध है। यह जन करीब १९२७ या २८ तक जीवित रहा। फिर मर गया। बयान महर्षि के स्वर्गारोहण के ४२ वर्ष पश्चात् लिया गया। तब तक यह बहुत वृद्ध हो चुका था।

सर्व प्रकार प्रमाणों से यह ही सिद्ध हो जाता है कि - **'दूध में काच नहीं होकर संखिया ही था। दूध पिलाने वाला जगन्नाथ नहीं होकर शाहपुरा का धूळा जोशी था।** यहां मिश्र जो रसोई भी बनावे और पुरस्कारी भी करे यह दोनो काम करने वाले को मिश्र कहते हैं। यही सत्य सिद्ध है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : [illegible]) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : [illegible]) से प्रकाशित।

पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।